04 - महाराष्ट्र की सियासतः प्याली में तूफान या.....?

05 - लिखना और लेखक होना बिल्कुल आसान नहीं

A Daily News Magazine

भोपाल

गुरुवार, 25 जुलाई, 2024

06 - अटैचमेंट पर अब काम नहीं कर पाएंगे शिक्षक, एक आदेश ने उड़ाई कई शिक्षकों...

07- बहुत भारी होता है अकेलापन

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 21 अंक 318 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2 (डाक पंजीयन संख्याः म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

राष्ट्रपति चुनावः बाइडन के हटने व कमला के आने से क्या फर्क पड़ेगा?

एंथनी जर्चर

जो बाइडन ने अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव की रेस से खुद को बाहर कर लिया है। बीते हफ़्तों में वो कई बार इस बात पर ज़ोर देते रहे कि वो डेमोक्रेटिक पार्टी के उम्मीदवार बने रहेंगे। मगर लगातार बढ़ते दबाव के सामने झुकते हुए बाइडन ने अमेरिका के राष्ट्रपति चुनाव से बाहर होने का फ़ैसला किया है। बाइडन ने उपराष्ट्रपति कमला हैरिस का राष्ट्रपति पद की उम्मीदवारी के लिए समर्थन किया है।

अमेरिकी चुनाव को दिलचस्प बनाने वाले बाइडन के इस फ़ैसले का उपराष्ट्रपति कमला हैरिस, डेमोक्रेट्स और रिपब्लिकन उम्मीदवार डोनाल्ड ट्रंप के लिए क्या मायने हैं? कमला हैरिस को उम्मीदवार बनाना एक ऐसा जोखिम हैं, जिसे कई डेमोक्रेट्स उठाना चाहेंगे। राष्ट्रपति पद के लिए कमला के उम्मीदवार बनने की संभावनाओं को बाइडन के समर्थन से बल मिला है।

बाइडन ने कमला का पूर्ण समर्थन किया है। बाइडन ने कहा कि चार साल पहले कमला को उपराष्ट्रपति पद के लिए चुनना उनका बेहतरीन फ़ैसला था। कमला ने जवाब देते हुए कहा कि वो बाइडन के समर्थन से सम्मानित महसूस कर रही हैं और उम्मीदवारी जीतने के लिए हर संभव कोशिश करेंगी। ये संभव है कि ज़्यादातर डेमोक्रेट्स कमला को समर्थन देने के मामले में बाइडन के ही रास्ते पर चलेंगे।

एक महीने से कम वक्त में डेमोक्रेट्स सम्मेलन होना है. ऐसे में डेमोक्रेट्स किसी तरह की अनिश्चितता की स्थिति से बचना चाहेंगे। ऐसा करने के राजनीतिक और व्यावहारिक कारण हैं। बाइडन के बाद कमला हैरिस दूसरे नंबर के संवैधानिक पद पर हैं। राष्ट्रपति पद का टिकट चाह रही एक पहली ब्लैक महिला को पीछे करना डेमोक्रटिक पार्टी के लिए घाटे का सौदा हो सकता है। चुनाव प्रचार के लिए जुटाए गए 10 करोड़ डॉलर यानी क़रीब 836 करोड़ रुपये को भी कमला हैरिस इस्तेमाल कर सकेंगी। कमला के आगे बढ़ने के कुछ जोखिम भी हैं। पब्लिक ओपिनियन सर्वे बताते हैं कि कमला की अप्रूवल रेटिंग्स बाइडन की तरह ही कम हैं।

डोनाल्ड ट्रंप के खिलाफ़ आमने-सामने की लड़ाई में कमला हैरिस का प्रदर्शन भी बाइडन जैसा ही है। दूसरी बात ये है कि बतौर उपराष्ट्रपति कमला हैरिस का कार्यकाल कुछ कठिनाई भरा रहा है। प्रशासन संभालने के बाद कमला हैरिस को मेक्सिको से बढ़ते अवैध प्रवासियों के संकट से निपटने की ज़िम्मेदारी दी गई थी। ये एक बड़ी चुनौती है। कई क़दमों और फ़ैसलों के कारण कमला को इस मामले में आलोचनाओं का भी सामना करना पड़ा।

गर्भपात से जुड़े अधिकारों के मामले में भी कमला व्हाइट हाउस प्रशासन की प्रमुख शख़्स रही हैं। ये एक ऐसा मुद्दा रहा है, जिससे कमला ज़्यादा प्रभावी ढंग से निपटी हैं। मगर शुरुआत में ही बन गई छवि इतनी जल्दी पीछा नहीं छोड़ती।

आखिरी और शायद सबसे ज़रूरी बात। कमला हैरिस पहले भी अमेरिकी राष्ट्रपति पद की उम्मीदवारी हासिल करने की कोशिश कर चुकी हैं। मगर साल 2020 में वो इस कोशिश में बुरी तरह नाकाम साबित हुई थीं। कमला तेज़ी से आगे तो बढ़ीं मगर कई इंटरव्यू में वो हकलाईं, बिना किसी विजन के दिखीं और उनका चुनाव प्रचार भी अच्छे ढंग से नहीं संभाला गया था।

इस कारण वो शुरुआती प्राइमरी से पहले ही बाहर हो गईं। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए कमला को चुनना डेमोक्रेट्स के लिए जोखिम भरा हो सकता है। मगर बात ये है कि अब और कोई सुरक्षित विकल्प नहीं बचा है।

बीते 50 सालों में हुए राजनीतिक सम्मेलन कुछ हद तक ऊबाऊ सम्मेलनों में तब्दील हो चुके हैं। इन सम्मेलनों का एक-एक मिनट टीवी को ध्यान में रखकर तैयार किया जाता है। ये सम्मेलन राष्ट्रपति उम्मीदवारी के लिए कई दिनों तक चलने वाले विज्ञापन बन चुके हैं। बीते हफ़्ते रिपब्लिकन सम्मेलन भी ऐसा ही था। डोनाल्ड ट्रंप के नामांकन स्वीकार करने और लंबे भाषण के बावजूद सम्मेलन का मिज़ाज बदला नहीं। अगले महीने डेमोक्रेट्स का सम्मेलन शिकागो में होना है, जिसका स्वरूप काफ़ी अलग बन रहा है।

इस सम्मेलन के लिए बाइडन की प्रचार टीम जो भी तैयारी कर रही थी, वो सारी तैयारियां अब किसी काम की नहीं रह गईं। अगर बाक़ी डेमोक्रेट्स बाइडन की तरह ही कमला का समर्थन करें, तब भी चीज़ों की योजना बनाना, नियंत्रण में लेना और सम्मेलन की बातें एक मुश्किल काम है। अगर इस सम्मेलन में कमला पार्टी को एकजुट करने में सफल नहीं रहीं तो ये सबके लिए खुला दरबार हो जाएगा। जहां कई उम्मीदवार डेमोक्रेटिक पार्टी का टिकट हासिल करने के लिए कैमरों और बंद दरवाज़ों के पीछे कोशिश कर रहे होंगे।

ये एक दिलचस्प राजनीतिक फ़िल्म हो सकती है, जहाँ सब कुछ लाइव और अप्रत्याशित होगा। ये कुछ ऐसा होगा, जिसे अमेरिकी जनता ने पहले कभी नहीं देखा होगा। इस साल हुए रिपब्लिकन पार्टी का सम्मेलन ध्यानपूर्वक आयोजित किया गया था। इसके तहत पार्टी के सबसे लोकप्रिय एजेंडे का प्रचार किया गया और आलोचना सिर्फ़ एक आदमी पर केंद्रित की गई- राष्ट्रपति जो बाइडन।

मगर अब हुआ ये कि रिपब्लिकन पार्टी जिस आदमी के पीछे पड़ी हुई थी, वो अब रेस में ही नहीं हैं। बाइडन के रेस से बाहर होने के कारण रिपब्लिकन पार्टी का चुनावी प्रचार भी पलट जाएगा। रिपब्लिकन पार्टी ने बीता हफ़्ता डेमोक्रेट की कमज़ोरियों को बताने वाले कार्यक्रमों में लगाया। प्रचार टीम ने ट्रंप की ज़ोरदार एंट्री के ज़रिए शक्ति प्रदर्शन करने की कोशिश की। इसके लिए मशहूर पहलवान हल्क हॉगन, डाना वाइट के अलावा किड रॉक को भी लाया गया। किसी भी परिस्थिति में अब डेमोक्रेटिक पार्टी का उम्मीदवार बाइडन से कम उम्र का ही होगा।

रिपब्लिकन पार्टी की कमज़ोर बनाम ताक़तवर की रणनीति कमला हैरिस के खिलाफ़ चल नहीं पाएगी। ये उन युवा गवर्नरों के ख़िलाफ़ भी नहीं चल पाएगी, जिन्हें बाइडन की कुर्सी संभालने का दावेदार कहा गया। अगर कमला हैरिस उम्मीदवारी जीतती हैं तो रिपब्लिकन पार्टी की कोशिश होगी कि बतौर उपराष्ट्रपति उनके कार्यकाल के दौरान की नाकामियों के बारे में बात करें।

महीनों तक कमला हैरिस को 'बॉर्डर ज़ार' कहा गया। बॉर्डर पर किए कामों में असफल रहने के कारण कमला को ये कहा जाता है। उम्मीदवार कोई भी हो, रिपब्लिकन पार्टी बाइडन की उम्र संबंधी कमज़ोरियों पर आक्रामक ही रहने वाली है। ट्रंप ये आरोप लगाएंगे कि देश को जोखिम में डाला गया।

इस समय जब अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव में कुछ महीने ही रह गए हैं, तब हर कोई एक अंधी उड़ान भर रहा है।

(बीबीसी हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

शंभू बार्डर खोलने के आदेश पर लग गई 'सुप्रीम' रोक

किसानों की मांगों के लिए समिति गठित करने का दिया निर्देश

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट द्वारा शंभू बार्डर खोलने के आदेश पर फिलहाल रोक लगा दी। साथ ही शीर्ष अदालत ने इस मसले पर निर्णय लेने के लिए एक समिति गठित करने का आदेश दिया है। समिति में अधिकारियों, किसानों और सामाजिक कार्यकर्ता को शामिल करने का निर्देश दिया गया है। दरअसल सुप्रीम कोर्ट ने किसानों की विभिन्न मांगों पर विचार करने के लिए समिति गठित करने का प्रस्ताव रखा है। इस समिति का मुख्य उद्देश्य किसानों को उनकी फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) की कानूनी गारंटी देने सहित अन्य मांगों पर विचार करना होगा। सुप्रीम कोर्ट ने यह कदम उस समय उठाया है जब देश के विभिन्न हिस्सों में किसान अपनी मांगों को लेकर आंदोलनरत हैं। किसानों की प्रमुख मांगों में से एक यह है कि उनकी फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य यानी एमएसपी को कानूनी दर्जा दिया जाए, ताकि उन्हें अपनी मेहनत का उचित मूल्य मिल सके। सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को स्वतंत्र व्यक्तियों की एक समिति बनाने की मंशा व्यक्त ताकि पंजाब-हरियाणा सीमा पर विरोध प्रदर्शन कर रहे किसानों और सरकारों के साथ बातचीत कर मुद्दों का समाधान ढूंढ़ सके। कोर्ट ने पंजाब और हरियाणा राज्यों से उपयुक्त व्यक्तियों के नाम सुझाने को कहा।

नेपाल के काठमांडू में प्लेन क्रैश, 18 की मौत

त्रिभुवन इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर हुआ बड़ा हादसा

काठमांडू (एजेंसी)। नेपाल की राजधानी काठमांडू में एक विमान क्रैश हो गया है। प्लेन में सवार 19 लोगों में से 18 की मौत हो गई है। वहीं घायल पायलट कैप्टन एम. शाक्य को गंभीर हालत में अस्पताल पहुंचाया गया है।

प्लेन काठमांडू से पोखरा जा रहा था। प्लेन ने सुबह करीब 11 बजे त्रिभुवन एयरपोर्ट से उड़ान भरी। इसके कुछ ही देर के अंदर यह क्रैश हो गया। यह प्लेन सौर्य एयरलाइन्स का था। हादसे में मारे गए लोगों में से 17 सौर्य एयरलाइंस के ही स्टाफ थे, जबकि बाकी 2 क्रू मेंबर्स थे। काठमांडू पोस्ट के मुताबिक, हादसे के तुरंत बाद पुलिस और फायर फाइटर्स की टीम घटनास्थल पर रेस्क्यू ऑपरेशन के लिए पहुंची। न्यूज एजेंसी के मुताबिक, एक सुरक्षा अधिकारी ने बताया कि क्रैश के बाद विमान में आग लग गई थी। इसे तुरंत बुझा दिया गया। घटनास्थल से सामने आई तस्वीरों में धुएं का गुबार उठता दिख रहा है। हालांकि, हादसा किस वजह से हुआ इसकी जानकारी अब तक सामने नहीं आई है।

सुप्रभात

आहुति देकर नित निद्रा की
मन की व्यथा चुनी है मैंने
नीम रतजगों में तारों से
गोपन कथा सुनी है मैंने
लंबी रातों का सदियों तक
चलने वाला इंतज़ार हूँ
नींद नहीं भेजी आँखों में
मैं खूवाबों की गुनहगार हूँ
कुछ साँसों का क़र्ज़ मिला है
गिन-गिन कर लौटाना भी है
कठिन सफ़र है रस्ता बोझिल
लेकिन वापस जाना भी है
कुछ जीवन गिरवी है मुझ पर
कुछ जीवन पर मैं उधार हूँ
नींद नहीं भेजी आँखों में
मैं ख्वाबों की गुनहगार हूँ
दुःख को जीना,दुःख को पीना
मेरी प्रतिपल की क्रीड़ा है
मेरी जानिब आने वाली
खुशियों के मन में व्रीड़ा है
नख से शिख तक देखो मुझको
मैं दुःख का इक शाहकार हूँ
नींद नहीं भेजी आँखों में
मैं खूवाबों की गुनहगार हूँ
मेरी इन बोझिल आँखों ने
अरमानों के लाशे ढ़ोये
इक ज़ाहिर मुस्कान सजाई
बिन आँसू के नैना रोये
जीवन के इस चित्रपटल का
मैं इक बेरंग इश्तिहार हूँ
नींद नहीं भेजी आँखों में
मैं खूवाबों की गुनहगार हूँ

– डॉ.पूनम यादव

बजट से बिफरा विपक्ष, सरकार के खिलाफ बोला बड़ा हमला

नीति आयोग की बैठक का भी 4 सीएम करेंगे बहिष्कार

नई दिल्ली (एजेंसी)। आम बजट में गैर भाजपा शासित राज्यों को नजरअंदाज किए जाने से नाराज 'इंडिया' गठबंधन के घटक दलों ने नीति आयोग की बैठक का बहिष्कार करने का ऐलान किया है। इस बैठक में सभी राज्यों के मुख्यमंत्री सदस्य होते हैं। नीति आयोग की बैठक 27 जुलाई को है। इन घटकों ने बुधवार को संसद भवन परिसर में विरोध-प्रदर्शन भी किया है। बहिष्कार करने वालों में कम से कम चार राज्यों के मुख्यमंत्री शामिल हैं।

इनमें कांग्रेस शासित राज्यों के तीन मुख्यमंत्री हैं। ज्ञात हो कि इंडियन नेशनल डेवलेपमेंटल इंक्लूसिव अलायंस (इंडिया गठबंधन) के एक प्रमुख घटक-द्रमुक के प्रमुख और तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम.के. स्टालिन राज्य के साथ अन्याय के खिलाफ पहले ही बहिष्कार का ऐलान कर चुके हैं।

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे की अध्यक्षता में मंगलवार को हुई 'इंडिया' के घटक दलों के संसदीय दल के नेताओं की बैठक में आम बजट पर विस्तार से चर्चा हुई। खरगे के सरकारी आवास पर हुई इस बैठक में लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी सहित कई दलों के नेता मौजूद थे। बैठक में मौजूद एक नेता ने कहा कि बैठक में गैर भाजपा शासित राज्यों को नजरअंदाज करने के मुद्दे पर विस्तार से चर्चा हुई है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने 'अग्रदूत पोर्टल' लांच किया

• 'सूचना ही शक्ति है' को सार्थक करेगा अग्रदूत पोर्टल

नागरिकों तक आसानी से पहुंच सकेंगी योजनाओं संबंधी जानकारी

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश सरकार पारदर्शिता के साथ नागरिकों तक पहुंच बनाने एवं लाभार्थियों को योजनाओं संबंधी जानकारी भेजने के लिए संचार क्रांति का बेहतर उपयोग कर रही है। आज मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मंत्रालय में जनसंपर्क विभाग द्वारा तैयार किए 'अग्रदूत पोर्टल' को लॉंच किया है। 'सूचना ही शक्ति है' के मंत्र को सार्थक करने वाला अग्रदूत पोर्टल अपने आप में अद्भुत पहल है। किसी भी राज्य के जनसंपर्क विभाग द्वारा नागरिकों की सुविधा एवं त्वरित सूचनाओं के लिए इस तरह की अभिनव पहल पहली बार की गई है।

लांचिग के अवसर मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने पहला मैसेज लाड़ली बहनों को भेजा। यह मैसेज सावन में रक्षाबंधन के शगुन स्वरूप 1 अगस्त को लाडली बहनों के खातों में 250 अंतरित करने संबंधी है ।

श्रेणी अनुसार कर सकेंगे जानकारियाँ अलग-अलग

अग्रदूत पोर्टल से प्रदेश के नागरिकों द्वारा चाही गई जानकारियाँ फ़िल्टर की जा सकती हैं। उन्हें श्रेणी अनुसार विभाजित कर मैसेज या सूचनाएं भेजी जा सकेंगी, जैसे उम्र, लिंग, जाति, धर्म, व्यवसाय, विकलांगता, जिला/ स्थानीय निकाय/ क्षेत्र के अनुरूप चयनित कर जानकारी भेज सकेंगे।

क्या है अग्रदूत पोर्टल

मध्यप्रदेश सरकार के जनसंपर्क विभाग द्वारा तैयार किया गया अग्रदूत पोर्टल सूचना ही शक्ति है की पहल पर काम करेगा। यह लक्षित समूह तक सिंगल क्लिक में सूचनाएं प्रसारित करने के लिए जनसंपर्क विभाग की अभिनव पहल है। अग्रदूत पोर्टल द्वारा सिंगल क्लिक के माध्यम से प्रदेश के टारगेट ऑडियंस तक सूचनाएं पहुंचाई जा सकेंगी। पोर्टल के माध्यम से त्रि-स्तरीय रिव्यू के बाद संदेश लोकप्रिय मोबाइल मैसेजिंग एप - व्हाट्सअप पर शेयर किया जाएगा एवं इसके माध्यम से एक साथ मल्टी मीडिया मैसेज (ग्राफिक्स, टैक्स्ट, लिंक, वीडियो) भी शेयर किए जा सकेंगे। इसके माध्यम से नागरिकों तक आसानी से सूचनाएं पहुंचाई जा सकेंगी।

अग्रदूत पोर्टल की विशेषताएँ

अग्रदूत पोर्टल सूचना क्रांति के क्षेत्र में अभिनव पहल है। इससे कम समय में लक्षित नागरिकों तक पहुँच बनाई जा सकेगी। सूचना प्रसार, व्यापक संचार, समग्र डेटाबेस का उपयोग, व्हाट्सअप के माध्यम से सूचना का प्रसार, सिंगल क्लिक आधारित, यूजर फ्रेंडली, त्रि-स्तरीय अनुमोदन प्रक्रिया कम समय में संपन्न होगी।

जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा में सेना को बड़ी सफलता

• एक आतंकी को कर दिया ढेर, सेना का जवान भी घायल

नई दिल्ली (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा जिले में सुरक्षा बलों और आतंकवादियों के बीच रातभर एनकाउंटर हुआ जिसमें एक आतंकवादी मारा गया और एक जवान घायल हो गया। सेना ने बुधवार को यह जानकारी दी। श्रीनगर की चिनार कोर ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर अपने पोस्ट में कहा, कुपवाड़ा के कोवुत इलाके में आतंकवादियों की मौजूदगी के बारे में खुफिया जानकारी मिलने पर भारतीय सेना और जम्मू-कश्मीर पुलिस ने 23-24 जुलाई को संयुक्त तलाश अभियान शुरू किया। सेना ने कहा कि मंगलवार को संदिग्ध गतिविधियां दिखाई देने पर सैनिकों ने संदिग्धों को चुनौती दी। इस पर आतंकवादियों ने अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी और दोनों ओर से मुठभेड़ शुरू हो गई। सेना ने कहा कि मुठभेड़ में एक आतंकवादी मारा गया और एक सैनिक घायल हो गया। अभियान जारी है। इसके पहले, जम्मू-कश्मीर के पुंछ जिले में मंगलवार तड़के नियंत्रण रेखा (एलओसी) के पास आतंकवादियों की घुसपैठ की कोशिश को सेना ने नाकाम कर दिया, जिस दौरान एक जवान शहीद हो गया था।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 38.5°c
न्यूनतम 33°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ गुरुवार,25 जुलाई 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

दिल्ली मार्च जारी रखेंगे, किसानों का बड़ा ऐलान

राहुल गांधी से मुलाकात के बाद लिया निर्णय, संसद में भी उठेगी आवाज

नई दिल्ली (एजेंसी)। न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) में सुधार के लिए सरकार पर दबाव बना रहे किसानों ने बुधवार सुबह संसद परिसर में कांग्रेस सांसद राहुल गांधी से मुलाकात की। राहुल गांधी लोकसभा में विपक्ष के नेता भी हैं। उन्होंने पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, तेलंगाना, तमिलनाडु और कर्नाटक के 12 किसान नेताओं के प्रतिनिधिमंडल से मुलाकात की। राहुल गांधी के मुलाकात के बाद एक किसान नेता ने कहा कि सरकार उनकी मांगे मानने में विफल रही है और वे दिल्ली मार्च जारी रखेंगे। किसानों में से एक जगजीत सिंह दल्लेवाल ने कहा कि सरकार अब तक आश्वासनों को पूरा करने में विफल रही है। स्वामीनाथन रिपोर्ट का क्रियान्वयन जरूरी है। हम दिल्ली की ओर मार्च जारी रखेंगे। इससे पहले किसानों की मुलाकात राहुल गांधी के संसद भवन स्थित कार्यालय में हुई। इसमें कांग्रेस के संगठन महासचिव केसी वेणुगोपाल, पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी, पंजाब प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष अमरिंदर सिंह राजा वड़िंग, कांग्रेस नेता सुखजिंदर सिंह रंधावा, गुरजीत सिंह औजला, धर्मवीर गांधी, अमर सिंह, दीपेंद्र सिंह हुड्डा और जय प्रकाश भी मौजूद थे। बैठक के बाद अमरिंदर सिंह राजा वड़िंग ने कहा, राहुल गांधी संसद के अंदर किसानों की आवाज उठाएंगे.. किसानों द्वारा दिल्ली में फिर से मार्च निकालने की योजना बनाने की खबरों पर उन्होंने कहा, उन्हें दिल्ली आकर विरोध करने का पूरा अधिकार है (और) अगर कोई निजी विधेयक लाने की जरूरत पड़ी तो हम उसे भी लाएंगे। इससे पहले राहुल गांधी ने कहा,किसान नेताओं को मैंने संसद भवन में मिलने के लिए बुलाया था लेकिन उन्हें अंदर नहीं आने दिया गया तो मैं मिलने गया।

ममता बनर्जी के शरणार्थी वाले बयान पर भड़का बांग्लादेश

- जारी की तीखी प्रतिक्रिया,शेख हसीना सरकार ने लिखी चिट्ठी

नई दिल्ली (एजेंसी)। बांग्लादेश सरकार ने मंगलवार को पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के बयान पर तीखी प्रतिक्रिया देते हुए अपना विरोध जताया है। ममता ने कहा था कि वह हिंसाग्रस्त बांग्लादेश से आने वाले असहाय लोगों को पश्चिम बंगाल में आश्रय देंगी। पड़ोसी देश ने इस मामले में भारत सरकार को एक आधिकारिक नोट भेजा है। बांग्लादेश के विदेश मंत्री हसन महमूद ने कहा, पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री के प्रति सम्मान के साथ हम यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि उनकी टिप्पणियों में भ्रम की बहुत गुंजाइश है। इसलिए हमने भारत सरकार को एक नोट दिया है।

घाटी की सुरक्षा के लिए खतरा बने 4 सरकारी कर्मचारी

- सभी को बिना जांच के नौकरी से कर दिया गया बर्खास्त

नई दिल्ली (एजेंसी)। जम्मू कश्मीर प्रशासन ने चार सरकारी कर्मचारियों को बर्खास्त कर दिया है। वजह बताई है कि यह लोग राज्य की सुरक्षा के लिए खतरा थे। इन सरकारी कर्मचारियों को संविधान के आर्टिकल 311 (2) (सी) के तहत तुरंत प्रभाव से हटा दिया गया है। संविधान का यह आर्टिकल किसी सरकारी कर्मचारी को बिना जांच के बर्खास्त करने की इजाजत देता है। इससे पहले भी कुछ सरकारी कर्मचारियों को बर्खास्त किया जा चुका है। एक ताजा आदेश में प्रशासन ने हंदवाड़ा के सीनियर ग्रेड कांस्टेबल मुश्ताक अहमद पीर, दक्षिण कश्मीर के त्राल के गमराज गांव के पुलिस कांस्टेबल इम्तियाज अहमद लोन, उत्तर कश्मीर के कुपवाड़ा के लालपोरा के खुरहामा गांव के शिक्षा विभाग के जूनियर सहायक बाजिल अहमद मीर और उत्तर कश्मीर के ग्रामीण विकास विभाग के ग्राम स्तरीय कार्यकर्ता मोहम्मद जैद शाह को बर्खास्त कर दिया है।

चुपचाप सुनो, महिला हो तुम कुछ जानती नहीं हो

- नीतिश कुमार ने फिर से बिहार विधानसभा में खोया आपा, आरजेडी की रेखा देवी पर भड़के

पटना (एजेंसी)। बिहार के मुख्यमंत्री नीतिश कुमार बुधवार को एक बार फिर विधानसभा में आपा खो बैठे। उन्होंने आरजेडी की विधायक रेखा देवी के भाषण पर ऐतराज जताते हुए कहा कि आप क्या बोल रही है। उन्होंने कहा कि महिला हो, कुछ जानती नहीं हो। पता नहीं क्या-क्या बोल रही है। आपको पता है कि महिलाओं की क्या स्थिति थी। 2005 के बाद ही महिलाओं की स्थिति ऐसी हुई। रेखा देवी के आरोपों पर नीतिश कुमार हत्थे से उखड़ गए और फिर जमकर बोले। उनके बयान को आरजेडी समेत विपक्षी दलों ने महिलाओं का अपमान करार दिया है। नीतिश कुमार ने कहा,अरे, महिला हो। कुछ जानती नहीं हो।

मुस्लिमों के बिना संभव नहीं है अमरनाथ यात्रा

- कांवड़ यात्रा से जुड़े आदेश पर उमर अब्दुल्ला ने कह दी बड़ी बात

श्रीनगर (एजेंसी)। नेशनल कांफ्रेंस के उपाध्यक्ष उमर अब्दुल्ला ने उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड में कांवड़ यात्रा के दौरान भोजनालयों पर उनके मालिकों के नाम प्रदर्शित करने के आदेश पर सुप्रीम कोर्ट की ओर से अंतरिम रोक लगाने का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि मुस्लिमों के सहयोग के बिना अमरनाथ यात्रा तक संभव नहीं है। अब्दुल्ला ने कहा कि अगर यह (कांवड़ यात्रा संबंधित) आदेश मुसलमानों को उस यात्रा से दूर रखने के लिए जारी किया गया था, तो अल्लाह के लिए मुझे बताएं कि जब यहां (अमरनाथ) यात्रा होती है, तो वह मुसलमानों के बिना मुमकिन नहीं है।

पेपर लीक पर 10 साल की सजा, एक करोड़ का जुर्माना

बिहार विधानसभा से पास हो गया बिहार लोक परीक्षा बिल

पटना (एजेंसी)। परीक्षा में धांधली और पेपर लीक रोकने के लिए बुधवार को विधानसभा से बिहार लोक परीक्षा विधेयक 2024 पास हो गया है। इस कानून के तहत पेपर लीक करने वालों को 10 साल तक की जेल और एक करोड़ रुपये तक के जुर्माने का प्रावधान है। विधानसभा के बाद अब विधान परिषद में पास होना बाकी है। जिसके बाद इसे राज्यपाल के पास भेजा जाएगा। विधेयक पेश करते हुए संसदीय कार्य मंत्री विजय कुमार चौधरी ने कहा कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि विपक्ष ऐसे महत्वपूर्ण कानून का हिस्सा नहीं बनना चाहता, जिसका उद्देश्य युवाओं के लिए एक स्वच्छ परीक्षा प्रणाली सुनिश्चित करना है। विजय चौधरी ने कहा कि यह विधेयक किसी भी तरह से परीक्षाओं को प्रभावित करने वाले पेपर लीक में शामिल संगठित गिरोहों और असामाजिक लोगों को रोकने के लिए कठोर दंड देता है।

विभागीय गतिविधियों की समीक्षा की

क्षेत्र विशेष के अनुसार उचित गुणवत्ता के पौधों का रोपण आवश्यक : वन मंत्री श्री रावत

भोपाल (नप्र)। वन एवं पर्यावरण मंत्री श्री रामनिवास रावत ने वन भवन में वन विभाग की विभागीय गतिविधियों की समीक्षा की। उन्होंने कहा कि क्षेत्र विशेष के अनुसार उचित गुणवत्ता के पौधों का रोपण आवश्यक रूप से किया जाये। वन मंत्री ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि जलवायु के आधार पर उचित गुणवत्ता के पौधे प्रजातियों का रोपण किया जाना चाहिए और उनकी सुरक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाये। वन मंत्री ने कहा कि प्रदेश में बांस रोपण को करने के लिये निजी क्षेत्र में किसानों को भी बांस रोपण के लिये प्रेरित किया जाये।

वन मंत्री श्री रावत ने तेंदूपत्ता संग्रहण कार्य से जुड़े ग्रामीणों के लिये चलाई जा रही योजनाओं की जानकारी प्राप्त की। उन्होंने तेंदूपत्ता संग्राहकों को प्रोत्साहन पारिश्रमिक बोनस शीघ्र वितरित करने के निर्देश अधिकारियों को दिये। मंत्री श्री रावत ने ईको पर्यटन के अंतर्गत क्रियान्वित योजनाओं में अधिक से अधिक युवाओं को रोजगार-मूलक गतिविधियों के प्रशिक्षण पर बल दिया। उन्होंने कहा कि पर्यावरण संतुलन बनाये रखने के लिये वन विभाग की महत्वपूर्ण भूमिका है। श्री रावत में प्रदेश में वन आवरण में वृद्धि के साथ ही ग्रामीणों के आर्थिक, सामाजिक विकास के लिये चलाई जा रही योजनाओं का लाभ अधिक से अधिक ग्रामीणों को प्राप्त होना चाहिए। बैठक में अपर मुख्य सचिव वन श्री अशोक बर्णवाल, प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख श्री असीम श्रीवास्तव सहित वरिष्ठ वन अधिकारी उपस्थित थे।

जागरूक नागरिक और कर्मठ चिकित्सक मध्यप्रदेश का गौरव हैं : उप-मुख्यमंत्री श्री शुक्ल

भोपाल(नप्र)। उप-मुख्यमंत्री श्री राजेंद्र शुक्ल ने विषम परिस्थितियों में भी जन-सेवा की भावना को प्राथमिकता देकर कर्तव्यनिष्ठा की मिसाल पेश करने वाली सिवनी की डॉ. मनीषा सिरसाम की सराहना की है। उल्लेखनीय है कि बाढ़ में फँसी महिला की प्रशिक्षित दाई से समन्वय कर उन्होंने सुरक्षित प्रसव कराया। उप-मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि मानव सेवा ही देव सेवा है। जागरूक नागरिक और कर्मठ चिकित्सक मध्यप्रदेश का गौरव हैं। आपात के समय में ऐसी सजगता और कर्मठता अभिनंदनीय है। उन्होंने नन्हें बालक को नव जीवन प्रदान करने में सहायक हुए सभी जनों का आभार एवं बालक के परिजनों को शुभकामनाएं दी हैं।

23 जुलाई को सिवनी जिले में भारी बारिश के कारण बाढ़ से कई गांवों का संपर्क टूट गया, जिनमें से एक जोराबाड़ी गांव भी शामिल था। इस गांव में गर्भवती महिला श्रीमती रवीना बंशीलाल उइके को अचानक प्रसव पीड़ा होने लगी। पूर्व रिपोर्टों के अनुसार, उन्हें जुड़वां बच्चों को जन्म देना था। परिवार ने उन्हें जिला अस्पताल सिवनी ले जाने का प्रयास किया, लेकिन सभी रास्ते बंद थे। परिवार ने आशा कार्यकर्ता से संपर्क किया, जो पहले से ही जिला अस्पताल में थी। आपातकालीन स्थिति में, आशा कार्यकर्ता ने जिला स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. मनीषा सिरसाम को सूचना दी। डॉ. सिरसाम ने कलेक्टर सुश्री संस्कृति जैन को स्थिति से अवगत कराया। कलेक्टर ने तुरंत चिकित्सकीय दल को गांव भेजने के निर्देश दिए। डॉ. मनीषा सिरसाम, नर्सिंग आफिसर सुनीता यादव, मेंटर कविता वाहने, और आशा कार्यकर्ता कामता मरावी के साथ एसडीआरएफ टीम गांव के समीप पहुंची।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव की अध्यक्षता में हुई नर्मदा बेसिन प्रोजेक्ट कंपनी लिमिटेड की बैठक

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में नर्मदा बेसिन प्रोजेक्टस कंपनी लिमिटेड के बोर्ड आफ डायरेक्टर्स की 31वीं बैठक मंत्रालय में संपन्न हुई। बैठक में लेखा परीक्षण तथा कंपनी के अन्य प्रबंधकीय विषयों पर विचार-विमर्श उपरांत अनुमोदन प्रदान किया गया। बैठक में लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी मंत्री श्रीमती संपतिया उइके, मुख्य सचिव श्रीमती वीरा राणा, अपर मुख्य सचिव श्री राजेश राजोरा, प्रमुख सचिव मुख्यमंत्री श्री संजय शुक्ला, प्रमुख सचिव वित्त श्री मनीष सिंह तथा कंपनी के पदाधिकारी उपस्थित थे।

कथावाचक को व्यास पीठ पर हार्ट अटैक, मौत

राजगढ़ में कथा सुनाई; लोग भजनों पर नाच रहे थे, पंडितजी बेसुध होकर गिर पड़े

सारंगपुर (नप्र)। राजगढ़ के सारंगपुर में एक कथावाचक को व्यास पीठ पर हार्ट अटैक आ गया। वे बेसुध होकर गिर पड़े। मौके पर मौजूद श्रद्धालु उन्हें तुरंत अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। घटना का वीडियो मंगलवार को सामने आया।

कथावाचक भागवताचार्य पंडित गोपाल कृष्ण महाराज गुरु पूर्णिमा पर रविवार को पाड़ल्या आंजना गांव के गुरु आश्रम में कथा कर रहे थे। करीब 2 घंटे 35 मिनट चली कथा के अंत में आरती के पहले वे भजन सुना रहे थे। श्रद्धालु भजनों पर नाच रहे थे। इसी बीच पंडित गोपाल कृष्ण व्यास पीठ पर ही गिर पड़े।

उज्जैन के रहने वाले थे कथावाचक- आयोजक समिति के सदस्य विजय सिंह लववंशी ने बताया, महाराज को पहले पचोर के निजी अस्पताल फिर सरकारी अस्पताल ले जाया गया। यहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। वे उज्जैन के रहने वाले थे। सोमवार को कथावाचक का पार्थिव शरीर राजगढ़ के गुरु आश्रम लाया गया। यहां श्रद्धांजलि के बाद शव को उज्जैन के लिए रवाना किया गया। उज्जैन के आश्रम में अंतिम संस्कार किया गया।

प्रत्यक्षदर्शी शांतिलाल नागर ने बताया, गुरु पूर्णिमा उत्सव पर भागवत कथा समापन और आरती की तैयारी चल रही थी। सभी भजन पर नाच गा रहे थे। इसी दौरान गुरुजी को अटैक आ गया। वो गाते गाते गिर पड़े। हम सभी समिति के लोग उन्हें मंच से उठाकर तुरंत अस्पताल लेकर गए।

शोरूम में आग, बुजुर्ग दंपत्ति की दम घुटने से मौत

टीकमगढ़ में तेज बारिश के बीच 2 मंजिला बिल्डिंग में 6 घंटे तक उठती रही लपटें

टीकमगढ़ (नप्र)। टीकमगढ़ में बुधवार सुबह करीब 5.30 बजे कपड़ा शोरूम में आग लग गई। दूसरी मंजिल पर फंसे बुजुर्ग दंपत्ति की दम घुटने से मौत हो गई। करीब 11.30 बजे दोनों के शव बाहर निकाले गए।

ग्राउंड फ्लोर पर बने शोरूम में लगी आग ने कुछ ही सेकंड में ऊपर की दो मंजिलों को चपेट में ले लिया। बिल्डिंग का फ्रंट साइड में पीवीसी वर्क से कवर था, इसलिए प्लास्टिक जलता गया और आग तेजी से बढ़ती चली गई। आग इतनी भीषण थी कि तेज बारिश के बीच भी लपटें उठती लगीं। फायर ब्रिगेड ने 8 बजे तक आग पर काबू पा लिया था, लेकिन कुछ देर बाद बिल्डिंग के पीछे की तरफ आग फिर से भभक गई। फायर ब्रिगेड की 6 टीमें आग बुझाने में जुटी रहीं।

एसडीएम संजय दुबे ने बताया, ग्राउंड फ्लोर पर कपड़ा शोरूम है। पहली मंजिल पर शोरूम मालिक मनोज जैन, उनकी मां, पत्नी और दो बच्चे रहते हैं। दूसरी मंजिल पर उनके चाचा देवेंद्र जैन (60) और चाची सुलोचना जैन (57) रहते थे। सुबह आग लगने पर मनोज परिवार के साथ बिल्डिंग से बाहर निकल आए, लेकिन उनके चाचा-चाची दूसरी मंजिल पर फंस गए।

मॉर्निंग वॉक पर निकले तो धुआं उठ रहा था- शोरूम के सामने रहने वाली पूनम जायसवाल ने बताया, मॉर्निंग वॉक के लिए घर से बाहर निकले। सामने अस्तोन एम्पोरियम से धुआं निकल रहा था। मोहल्ले वालों को बुलाकर दुकान मालिक को कॉल किया। वे परिवार समेत बाहर आ गए। इसके बाद एसपी और फायर ब्रिगेड टीम को जानकारी दी।

शॉर्ट सर्किट से आग लगने की आशंका- कोतवाली थाना प्रभारी आनंद राज ने बताया कि आग से तीन मंजिला इमारत को काफी नुकसान पहुंचा है। बिल्डिंग में बड़ी मात्रा में रखा कपड़ा जलकर खाक हो गया। आग लगने के कारणों का पता लगाया जा रहा है। शुरुआती जांच में शॉर्ट सर्किट से आग लगने की जानकारी सामने आ रही है।

आतंकवादी या तो जेल में रहेंगे या जहन्नुम में जाएंगे

गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय की राज्यसभा में दो टूक

नई दिल्ली (एजेंसी)। कश्मीर सहित देश की सुरक्षा को सर्वोपरि बताते हुए सरकार ने बुधवार को कहा कि उसकी नीति आतंकवाद को कतई बर्दाश्त नहीं करने की है और आतंकवादी या तो जेल में रहेंगे या जहन्नुम में जाएंगे। गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय ने राज्यसभा में प्रश्नकाल के दौरान यह भी बताया कि विशेष राज्य का दर्जा देने वाले अनुच्छेद 370 को अगस्त 2019 में हटाए जाने के बाद से जम्मू कश्मीर में भारतीय सेना ने 900 से अधिक आतंकियों को मार गिराया है। आतंकवाद को पूरी तरह समाप्त करने का संकल्प जताते

हुए उन्होंने कहा कि पिछले कुछ दिनों में कश्मीर में 28 आतंकियों को मार गिराया गया है। उन्होंने स्वीकार किया कि आतंकी हमलों में हमारे कुछ जवानों की भी जान गई है। उन्होंने पूरक प्रश्न के जवाब में बताया कि 2004 से 2014 के बीच आतंकी घटनाओं की संख्या 7217 थी जबकि 2014 से 21 जुलाई 2024 तक ऐसी 2259 घटनाएं हुई हैं जो नहीं होना चाहिए थीं। इस पर राजनीतिक नहीं करनी चाहिए। केंद्र की नरेन्द्र मोदी सरकार की नीति आतंकवाद को कतई बर्दाश्त नहीं करने की है तथा आतंकवादी या तो जेल में रहेंगे या जहन्नुम में जाएंगे।

भोपाल का बड़ा तालाब सिर्फ 3.70 फीट खाली

पानी का लेवल 1663.10 फीट पर पहुंचा; राजधानी में बारिश का 50 प्रतिशत कोटा हुआ पूरा

भोपाल (नप्र)। भोपाल का बड़ा तालाब अब सिर्फ 3.70 फीट ही खाली है। इतना पानी आने के बाद भदभदा डैम के गेट खुल जाएंगे। बड़ा तालाब में अभी पानी का लेवल 1663.10 फीट पहुंच चुका है, जबकि फुल टैंक लेवल 1666.80 फीट है। सोमवार-मंगलवार को तालाब के लेवल में 0.70 फीट का इजाफा हुआ। बुधवार सुबह भी पानी की आमद हो रही है।

भोपाल में मानसून की आमद 22 जून को हुई थीं। 21 जून को तालाब का लेवल 1658 फीट था। इस सीजन में भोपाल में 18.7 इंच बारिश हो चुकी है, जो सीजन की 50त्न है। इसे मिलाकर इस सीजन में तालाब के जल स्तर में पांच फीट की बढ़ोतरी हो चुकी है। पिछले 3 दिन से कोलांस नदी 8 से 11 फीट के बीच बही। मंगलवार को जलस्तर थोड़ा कम हुआ, लेकिन सीहोर में बारिश होने से पानी की आवक बढ़

रही है। बुधवार को भी तालाब के जलस्तर में बढ़ोतरी हो रही है। भोपाल के बड़ा तालाब में पानी की आमद हो रही है। इससे पानी का लेवल भी बढ़ रहा है।

ऐसे हुई बढ़ोतरी- कैचमेंट एरिया में अच्छी बारिश- बड़े तालाब में 35 फीसदी पानी कोलांस नदी से तो 65 फीसदी कैचमेंट एरिया से आता है। 21 जून की शाम को कैचमेंट एरिया में 123.4 मिमी और सीहोर में 100 मिली मीटर से ज्यादा बारिश हुई थी। इसके बाद से अब तक भोपाल और सीहोर के कैचमेंट एरिया में बारिश का सिलसिला जारी है। बड़े तालाब के बढ़े पांच फीट पानी में से सिर्फ 35 प्रतिशत पानी कोलांस से जबकि 65 प्रतिशत कैचमेंट एरिया में हुई बारिश से आया है।

बड़ा तालाब फुल भरेगा तो भदभदा के गेट खुलेंगे

कोलांस नदी का पानी बड़ा तालाब में पहुंचता है। जब तालाब फुल भर जाता है तो भदभदा डैम के गेट खोले जाते हैं। पौने 4 फीट पानी गिरते भदभदा के गेट खुल जाएंगे। इसके बाद कलियासोत डैम के गेट भी खुलेंगे। बता दें कि कोलांस, बड़ा तालाब, भदभदा और कलियासोत डैम एक-दूसरे से जुड़े हैं।

आज बढ़ेगा बारिश का आंकड़ा

राजधानी में अब तक 524.3 मिमी यानी, 20.6 इंच पानी गिर चुका है, जो सीजन की कुल बारिश का 50 प्रतिशत से ज्यादा है। पिछले 24 घंटे में ही 2 इंच पानी गिर गया। बुधवार सुबह से हल्की बारिश का दौर जारी है। शाम को तेज पानी गिर सकता है।

संविदा कर्मचारियों के पारिश्रमिक में 3.87 प्रतिशत की वृद्धि

ढाई लाख अधिकारियों और कर्मचारियों को 785 से 2535 रुपए तक का फायदा

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में वित्त विभाग ने संविदा अधिकारियों-कर्मचारियों की वेतन वृद्धि के लिए सीपीआई इंडेक्स जारी कर दिया है। सरकार ने इन कर्मचारियों के पारिश्रमिक में 3.87 प्रतिशत की बढ़ोतरी की है, जिससे इनके पारिश्रमिक में 785 से 2535 रुपए तक प्रति माह का लाभ देखने को मिलेगा।

आदेश एक अप्रैल 2024 से लागू माना जाएगा। तीन महीने का एरियर दिया जाएगा या नहीं, आदेश में इसका उल्लेख नहीं किया गया है। उधर, मध्यप्रदेश संविदा कर्मचारी-अधिकारी महासंघ ने आपत्ति दर्ज कराई है। महासंघ का कहना है कि केंद्र सरकार ने सीपीआई इंडेक्स का फार्मूला 5.39 प्रतिशत का दिया है, तो 3.87 प्रतिशत क्यों दिया गया?

सरकार ने वर्ष 2023 में संविदा नीति जारी की है, जिसमें यह तय किया गया है कि हर साल एक अप्रैल को संविदा अधिकारियों-कर्मचारियों की महंगाई दर (उपभोक्ता मूल्य सूचकांक) में वृद्धि की जाएगी। सरकार ने अप्रैल में सीपीआई इंडेक्स दर जारी नहीं की। जब महासंघ ने मुख्यमंत्री, वित्त मंत्री, मुख्य सचिव, वित्त और सामान्य प्रशासन विभाग के प्रमुख सचिव को ज्ञापन सौंपा एवं आंदोलन की चेतावनी दी, तब वित्त विभाग ने आदेश जारी किए हैं। इससे संविदा कर्मचारियों को फायदा तो होगा, पर उतना नहीं होगा, जितना अन्य राज्यों के संविदा कर्मचारियों को मिलेगा।

ग्रामीण पथ रोशन स्कीम करेगी गांवों में उजाला

दसवीं पास 45 साल तक के युवा गांवों को रोशनी देने लगा सकेंगे रूफ टॉप सोलर प्लांट

भोपाल (नप्र)। सोलर एनर्जी से जनरेट होने वाली बिजली के उपयोग को लेकर राज्य सरकार अब ग्रामीण युवाओं को प्रशिक्षण देकर उन्हें इसके प्लांट लगाने के लिए आगे लाएगी। इसके लिए ग्रामीण पथ रोशन योजना के नाम पर नई योजना शुरू की जा रही है। इसके लिए बेंगलुरु की उद्यम लर्निंग फाउंडेशन से युवाओं को शुरुआती दौर पर ट्रेनिंग दिलाकर शाजापुर जिले में प्रयोग के तौर पर काम भी शुरू कर दिया गया है। खास बात यह है कि योजना को संचालित करने का काम स्कूल शिक्षा विभाग का राज्य ओपन बोर्ड कर रहा है।

कौशल विकास को रोजगार से जोड़ने के लिए मध्यप्रदेश राज्य ओपन शिक्षा बोर्ड ने ग्रामीण पथ रोशन योजना प्रारंभ की है। इस योजना से 18 से 45 वर्ष आयु समूह के कक्षा 10वीं तक के शिक्षित बेरोजगार युवाओं को रूफटॉप सोलर प्लांट की स्थापना का प्रशिक्षण निःशुल्क दिलाया गया है। शाजापुर जिले के शुजालपुर क्षेत्र के हर गांव में एक-एक युवा को उनके घरों की छत पर 10 किलोवॉट क्षमता का रूफटॉप सोलर प्लांट स्थापित करने के लिए बैंक से ऋण दिलाया गया है। इस प्लांट से उत्पादित बिजली को ऑनग्रिड नेट सोलर मीटर के माध्यम से पॉवर ग्रिड में जमा कराया जाता है। जमा की गई बिजली से रात्रि के समय एलईडी स्ट्रीट लाइट संचालित की जाती है।

टपका बसंतपुर गांव रोशन होता है ऐसी बिजली से- इस योजना के अंतर्गत शाजापुर जिले के टपका बसंतपुर गांव में एक ऐसा 10 किलोवॉट का ऑनग्रिड सोलर सिस्टम लगाया गया है जो प्रतिदिन 40 से 50 यूनिट बिजली उत्पादित करता है। यह ग्रिड के माध्यम से मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी को बिजली भेजता है। टपका बसंतपुर गांव में 20 एलईडी स्ट्रीट लाइट लगाई गई है जो रात के समय सोलर एनर्जी एवं मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी में भेजी गई बिजली से संचालित होती है।

उद्यम लर्निंग फाउंडेशन ने दी है ट्रेनिंग- ग्रामीण पथ रोशन योजना में चयनित युवाओं को बैंगलुरू के उद्यम लर्निंग फाउंडेशन से प्रशिक्षण दिलाया गया है। योजना के लिये राज्य मुक्त स्कूल शिक्षा बोर्ड ने प्रथम किश्त के रूप में एक करोड़ रुपये लोक शिक्षण संचालनालय को दिए हैं। अब स्कूल शिक्षा विभाग इसे विस्तारित करने की योजना बना रहा है।

पारिवारिक विवाद के चलते युवक ने किया सुसाइड

आपसी विवाद के बाद एक महीने पहले पत्नी मायके चली गई थी

भोपाल (नप्र)। पलासी करोंद में रहने वाले मां-पिता के घर युवक ने फांसी लगाकर सुसाइड कर लिया। वह शाहपुरा में किराए से रहता था। एक महीने पहले आपसी विवाद के बाद पत्नी मायके चली गई थी। इसके बाद से ही युवक डिप्रेशन में था। मामले में पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। बुधवार को पीएम के बाद बॉडी को परिजनों के हवाले कर दिया गया है।

गौतम सिंह ठाकुर (35) पुत्र जवाहर सिंह ठाकुर शाहपुरा में किराए से रहता था और ड्राइवरी करता था। मृतक के दोस्त राजेश राजपूत ने बताया कि गौतम की शादी 6 साल पहले हुई थी। उसकी तीन साल की एक बेटी है। छोटी-छोटी बातों पर उसकी पत्नी से नोकझोंक हो जाया करती थी। एक महीने पहले आपसी विवाद के बाद उसकी पत्नी नाराज होकर मायके चली गई।

इसके बाद से ही गौतम डिप्रेशन में चल रहा था। मंगलवार को वह पलासी करोंद में रहने वाले मां-पिता के घर पहुंचा। वहां उसने फांसी लगाकर सुसाइड कर लिया। वहीं पुलिस का कहना है कि सुसाइड नोट नहीं मिलने से आत्महत्या के कारणों का खुलासा नहीं हो सका है। मामले की जांच की जा रही है।

कुंजीलाल दुबे विद्यापीठ में पुरस्कार वितरण समारोह

भोपाल (नप्र)। लोकमान्य बालगंगाधर तिलक जयंती के अवसर पर 23 जुलाई को कुंजीलाल दुबे राष्ट्रीय संसदीय विद्यापीठ द्वारा वर्ष 2023-24 में आयोजित विभिन्सांन स्कृतिक स्पर्द्धा के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए। कार्यक्रम विधान सभा के मानसरोवर सभागार में सम्पन्न हुआ।

समारोह में सर्वप्रथम संसदीय विद्यापीठ की संचालक डॉ. प्रतिमा यादव ने संसदीय विद्यापीठ की गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. मोहन यादव, मुख्य मंत्री, मध्य प्रदेश शासन थे एवम अध्यक्षता नरेन्द्र सिंह तोमर, अध्यक्ष, मध्यप्रदेश विधान सभा ने की। विशिष्ट अतिथि कैलाश विजयवर्गीय, संसदीय कार्य मंत्री थे। इसी आयोजन में विशेष अतिथि के रूप में ए.पी. सिंह, प्रमुख सचिव, विधान सभा सचिवालय एवं डॉ. एस.के. जैन, कुलपति, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय उपस्थित रहे। इसके अतिरिक्त के.सी. गुप्ता, अपर मुख्य सचिव, म.प्र. शासन, संसदीय कार्य विभाग के साथ अपर सचिव राजेश गुप्ता व अन्य अधिकारी/कर्मचारी भी उपस्थित हुए। माननीय अतिथियों द्वारा विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए। सभी अतिथियों ने विद्यार्थियों को विद्यापीठ की गतिविधियों में भविष्य में भी प्रतिभागिता हेतु प्रोत्साहित किया। कार्यक्रम में वर्ष 2023-24 में सम्पन्न प्रतियोगिताओं में प्रतिभागिता किए विभिन्न शिक्षण संस्थानों के लगभग 600 विद्यार्थी/शिक्षक सम्मिलित हुए।

कार्यक्रम का संचालन श्रीमती पूजा उदासी, प्रतिवेदक, विधान सभा सचिवालय तथा आभार डॉ. अर्चना पाण्डेय, शोध अधिकारी, संसदीय विद्यापीठ द्वारा ने किया ।

दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला हिंदी भाषा एवं साहित्य का पुनरावलोकन का शुभारंभ

भोपाल (नप्र)। अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय भोपाल और मध्य प्रदेश शासन, उच्च शिक्षा विभाग के सहयोग से कुलगुरु प्रोफेसर खेमसिंह डहेरिया के संरक्षण में राष्ट्रीय कार्यशाला का शुभारंभ गौरांजनी सभागार, रविंद्र भवन, भोपाल में किया जा रहा है। कार्यशाला का शुभारंभ मां सरस्वती पूजन के साथ मुख्य अतिथि श्री अशोक कड़ेल, संचालक मध्य प्रदेश हिंदी ग्रन्थ अकादमी के आतिथ्य मे हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्विद्यालय के कुलगुरु प्रोफेसर खेमसिंह डहेरिया ने की। कार्यक्रम के नोडल अधिकारी के रूप में हिंदी विभाग के सहायक प्राध्यापक श्री गौरव गुप्ता जी उपस्थित रहें।

उदघाटन सत्र में श्री अशोक कड़ेल ने अपने उद्बोधन में बताया कि शिक्षा को जीवन में उतारना है। मुख्य अतिथि श्री कड़ेल जी, संचालक ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति वास्तव में विद्यार्थी केन्द्रित है। इसलिए पाठ्यक्रमों में भी उसी के अनुसार समावेश करना होगा। पाठ्यक्रमों में बिटवीन द लाइनस की बड़ी महत्ता है। उन्होंने कहा कि जिन विद्वानों ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति को बनाया है, उन्होनें भारतीयता और भारतीय ज्ञान को प्रमुखता दी है। इसके केवल विषय मात्र का ज्ञान नहीं है, अपितु अपने सनातन संस्कारों को भी समावेशित किया गया है। जिससे विद्यार्थी शिक्षित होकर उत्कृष्ट समाज का निर्माण कर सके। उन्होंने स्मरण किया किया कि म.प्र. एक मात्र प्रथम राज्य है। जिसके सर्वप्रथम राष्ट्रीय शिक्षा नीति को धरातल पर लाने का कार्य किया है। और इसी पथ पर हम आने की ओर बढ़ते जा रहे हैं। इस प्रकार के कार्यक्रम उसी की ओर एक-एक कदम है। हमारी सनातन परम्परा नित नूतन चिर पुरातन की अवधारणा पर आधारित है। इसीलिए हमें समय एवं बदलते परिस्थितियों के अनुरूप नये ज्ञान-विज्ञान को अपनाने और अपने पाठ्यक्रम में समाहित करना आवश्यक है। विश्विद्यालय के कुलगुरु प्रोफेसर खेमसिंह डहेरिया ने कहा कि विद्या वह है जो व्यक्ति को मुक्ति प्रदान करें।

हिंदी विश्वविद्यालय के अनुरूप विश्वविद्यालय को हिंदी विषय मिला है। देश की विभिन्न समितियों में निर्णायक की भूमिका का निर्वहन कर रहे है, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार विभिन्न पाठ्यक्रमों का निर्माण युद्ध स्तर पर चल रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति का कियान्वन सर्वप्रथम लागू करने वाला राज्य मध्यप्रदेश है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने अपने चौथे साल में प्रवेश किया है। आपने भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भ में प्रकृति में वृक्षों से लेकर पशु पक्षियों की बात कही। उन्होंने बताया कि विश्व की निगाह भारत की ओर है व्यक्तित्व विकास और चरित्र निर्माण पर विश्वविद्यालय के शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया गया हैं , साथ ही अब शिक्षकों द्वारा छात्रों को प्रशिक्षित किया जाएगा। हमारी योग शिक्षा भी उत्तम कोटी की रही है। 'तक्षशिला और नालंदा जैसे ज्ञान के केंद्र विश्व में हमारी उच्चकोटी की शिक्षा का उदाहरण हैं।' अप्प दीपो भव अर्थात् अपना दीपक स्वयं बनने की प्रेरणा अध्येताओं और शोधार्थियों को दी। साथ ही आपने भारतीय ज्ञान परम्परा के सदर्भ में सा विद्या या विमुक्तये, संस्कृत की यह उक्ति चरितार्थ होती है। अर्थात विद्या वह है जो व्यक्ति को मुक्ति प्रदान करें।

कार्यशाला के प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ. प्रेम लता चुटैल जी ने की जिसमें विषय विशेषज्ञ के रूप में बीज वक्तव्य दिया प्रो. कृष्ण गोपाल मिश्र जी ने। प्रो. गीता नायक ने भाषा विज्ञान की दृष्टि से भारतीय ज्ञान परम्परा विषय पर अपने वक्तव्य में कहा कि जीवन में भाषा का अत्यंत महत्व है जैसा कि कबीर दास जी ने कहा है कि ऐसी बोली बोलिये मन का आपा खोय। वास्तव में वाणी का मधुर और हृदय ग्राहच होना आवश्यक है धर्म, विज्ञान और साहित्य इन तीनों ने ही भारतीय ज्ञान को समृद्ध किया है। प्रो. कृष्णगोपाल मिश्र ने अपने वक्तव्य में कहा कि शिक्षा या ज्ञान जीविकोपार्जन हेतु आवश्यक है। किन्तु वह नैतिक मूल्यों का क्षरण कर दे यह उचित नहीं। आज हमने यह मान लिया कि भाषा मात्र संप्रेषण का साधन ही नहीं अपितु संप्रेषण के साथ संस्कारों और संस्कृति का भी वाहक है। यदि भाषा बचेगी तो संस्कृति बचेगी। साहित्य मनुष्य रचता है। अतः ऐसे साहित्यकारों की आवश्यकता है जो विविध विधाओं में अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज में जागरूकता का भाव निर्मित हो और सामाजिक समरसता द्वारा सार्थक और सकारात्मक पहल हो। साथ ही विभिन्न साहित्यकारों की रचनाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि वर्तमान में सामाजिक विघटन को बढ़ावा दिया जा रहा है, जिसमें सहित का अभाव दिखाई दे रहा है। किन्तु हमें अब ऐसे साहित्य की आवश्यकता है, जिसमें सभी का हित हो। इस दिशा में चिंतन मनन करने की हमें आवश्यकता है। कार्यशाला के दौरान शोधार्थियों द्वारा संबंधित विषय पर शोध पत्रों का वाचन किया गया। कार्यशाला के प्रथम दिवस के समाहार सत्र में विश्विद्यालय के कार्यपरिषद सदस्य डॉ अलका प्रधान ने विषय पर आधारित व्याख्यान की समीक्षा की और श्री राकेश दांगी जी ने प्राचीन भारतीय ज्ञान विज्ञान परंपरा के आधार पर काव्य पाठ किया।

स्वच्छ भारत मिशन के स्टडी टूर पर भोपाल के पार्षद

भाजपा-कांग्रेस के 38 पार्षद अहमदाबाद पहुंचे, दो दिन लेंगे ट्रेनिंग

भोपाल (नप्र)। भोपाल नगर निगम के 38 पार्षद बुधवार को स्वच्छ भारत मिशन के स्टडी टूर पर गुजरात के अहमदाबाद पहुंचे हैं। वे यहां दो दिन तक ट्रेनिंग लेंगे। जानेंगे कि अहमदाबाद में सूखे-गीले कचरे का निपटारा कैसे होता है? वे निगम के संविधान और पॉवर के बारे में भी ट्रेनिंग लेंगे।

पार्षदों की टीम में एमआईसी मेंबर आरके सिंह बघेल, सुषमा बावीसा, आनंद अग्रवाल, पार्षद सुरेंद्र बाडिका, जितेंद्र सिंह राजपूत, बृजला सचाण समेत 38 पार्षद और स्वच्छता से जुड़े अधिकारी शामिल हैं। एमआईसी मेंबर बघेल ने बताया, आज सुबह टीम अहमदाबाद पहुंची है। डिप्टी मेयर जितिन पटेल से भी पार्षदों ने मुलाकात की। अहमदाबाद के डिप्टी मेयर जितिन पटेल से भी भोपाल के पार्षदों ने मुलाकात की है।

ट्रेनिंग भी हुई- पार्षदों के दल में एमआईसी मेंबर, जोन अध्यक्ष भी शामिल हैं। अहमदाबाद निगम में स्वच्छ भारत

मिशन के बारे में विस्तृत ट्रेनिंग दी गई है। स्वच्छ मिशन क्या होता है, सर्वेक्षण कैसे होता है? समेत निगम का संविधान क्या है आदि के बारे में जानकारी दी गई है। कल, गुरुवार को भी ट्रेनिंग मिलेगी।

अहमदाबाद में 190 पार्षद- एमआईसी मेंबर बघेल ने बताया कि अहमदाबाद महानगर निगम है। यहां 190 पार्षद है। भोपाल में एक रोज में एवरेज 800 टन कचरा निकलता है, जबकि अहमदाबाद में प्रतिदिन 4 हजार टन तक कचरा निकलता है। दो दिन तक यहां स्वच्छ सर्वेक्षण से जुड़े विभिन्न पहलुओं के बारे में जानेंगे।

भोपाल के बड़े तालाब में कूदा प्रेमी जोड़ा, मौत

पति के मर्डर के बाद दोस्त के साथ रह रही थी महिला

भोपाल (नप्र)। भोपाल के बड़े तालाब में महिला और पुरुष के शव मिले हैं। पुलिस के मुताबिक दोनों साथ रह रहे थे। महिला के पति की इसी साल 23 जनवरी को सागर में हत्या कर दी गई थी। इसके बाद से वो पति के दोस्त के साथ रह रही थी। वहीं मृतक महिला की मां का कहना है कि दोनों के बीच किसी तरह का कोई संबंध नहीं था।

श्यामला हिल्स थाने के एएसआई जगदीश परमार ने बताया कि शव बुधवार सुबह 8.30 बजे बोट क्लब स्थित पंप हाउस के पास बड़े तालाब में मिले। इन्हें पोस्टमॉर्टम के लिए मर्चुरी भेज दिया है। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, दोनों मोपेड से यहां आए थे। पहले महिला ने तालाब में छलांग लगाई, फिर पुरुष कूदा।

मोपेड के रजिस्ट्रेशन नंबर के आधार पर महिला की पहचान प्रिया साहू (32) पत्नी स्वर्गीय दशरथ साहू के रूप में हुई है। दूसरे शव की शिनाख्त दुर्गेश सोनी (32) के रूप में हुई है। दोनों फिलहाल बाग सेवनिया के विश्वकर्मा नगर में रह रहे थे। परिजन को सूचना दे दी गई है। उनके बयानों के बाद ही सुसाइड के कारणों का खुलासा हो सकेगा।

श्यामला हिल्स थाने के टीआई आरवी सिंह विमल ने बताया कि प्रिया भोपाल में सिलाई का काम करती थी। 13 साल का बेटा है। उसके पति दशरथ साहू की 23

जनवरी को सागर में हत्या हो गई थी। दुर्गेश उसके पति का दोस्त था। दोनों में पहले से जान-पहचान थी।

मां ने कहा- दुर्गेश को नहीं जानती थी बेटी- मृतक प्रिया की मां पार्वती ने बताया कि बेटी प्रिया किराए के कमरे में रहती थी। वह दुर्गेश को नहीं जानती थीं। पहली बार उन्होंने दुर्गेश को सागर में देखा था। दामाद की हत्या के बाद जब वहां पहुंचे तो दुर्गेश ने दामाद का दोस्त बताकर परिचय दिया था। दामाद के ही मर्डर केस में बेटी और दुर्गेश के बयान दर्ज होना थे। दुर्गेश बेटी को लेने भोपाल आया था। मां ने दुर्गेश और प्रिया के बीच किसी भी तरह का रिश्ता होने की बात से इनकार किया है।

मृतक की मां का कहना है कि मंगलवार की शाम को आखिरी बार बेटी से कॉल पर बात हुई थी। उसने बताया था मैं मंदिर जा रही हूं। इसके बाद से उससे संपर्क नहीं हुआ। प्रिया किराए के कमरे में अलग रहती थी। आम तौर पर दिन में एक दो बार कॉल पर बात हो जाया करती थी। बुधवार की सुबह पुलिस से उसकी बॉडी तालाब में पड़े होने की जानकारी मिली थी।

भाई ने कहा- मर्डर केस में गवाही होनी थी- दुर्गेश के भाई अंकित सोनी ने कहा, दुर्गेश इसी माह गांव आया था। 7 जुलाई को सागर जाने का बोलकर निकला था। सागर में प्रिया के पति के मर्डर केस में दुर्गेश की गवाही होनी थी। इसके बाद वह बिना जानकारी दिए भोपाल आ गया। कब भोपाल आया, इसकी जानकारी नहीं है। मैं अपने परिवार के साथ सतना से भोपाल आ रहा हूं।

सागर में हुई थी महिला के पति की हत्या

दुर्गेश सोनी मूल रूप से सतना का रहने वाला था। सागर में एक ज्वेलरी शॉप पर काम कर चुका था। जनवरी में उसने सागर के बहेरिया थाने में एक एफआईआर दर्ज कराई थी। इसमें पुलिस को बताया था- 23 जनवरी की शाम भोपाल से मेरा दोस्त दशरथ साहू और उसकी पत्नी प्रिया साहू सागर मुझसे मिलने आए थे। हम लोग कार से बहेरिया के बड़े शंकरजी मंदिर में दर्शन करने गए थे। दर्शन करने के बाद रात करीब 10.15 बजे बहेरिया चौराहे पर जलसा होटल में खाना खाया। होटल से थोड़ा आगे बहेरिया पंचायत भवन के पास कार खड़ी करके बातचीत कर रहे थे।

रात करीब 12.30 बजे दो लड़के आए और गाली-गलौज करने लगे। मैंने और दशरथ ने कार से बाहर आकर उन्हें रोका। इसी दौरान उनके दो साथी और मौके पर आ गए। चारों ने मेरे और दशरथ के साथ मारपीट शुरू कर दी। लात-घूंसों से पीटा। मारपीट में प्रिया के चेहरे पर भी चोट आई। दशरथ के मुंह और माथे पर गंभीर चोटें लगीं। चारों आरोपी भाग निकले।

घटना की सूचना पर डायल 100 आई और हमें जिला अस्पताल में भर्ती कराया। दशरथ को भोपाल रेफर किया गया। शिकायत पर बहेरिया थाना पुलिस ने मारपीट समेत अन्य सामान्य धाराओं में प्रकरण दर्ज किया।

संपादकीय

बजट : रोजगार के शॉर्ट टर्म उपाय!

केन्द्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमन के सातवें बजट में लोगों को सबसे ज्यादा उम्मीदें इस बात को लेकर थीं कि सरकार युवाओं को रोजगार देने की दृष्टि से क्या घोषणा करने वाली है। लेकिन सरकार ने बजट में जो किया, वह रोजगार बढ़ाने के अल्पकालिक उपायों के रूप में है। इससे सीधे तौर पर बहुत कम युवाओं को रोजगार मिलने वाला है। सरकार ने 4.1 करोड़ युवाओं को देश की 500 नामी कंपनियों में इंटर्नशिप कराने और इस अवधि में उन्हें साल या दो साल के लिए स्टायपेंड देने की बात कही है। जबकि आम जनता चाह रही थी कि बजट में केन्द्र कितने लोगों को नौकरियां देने वाली है, इसकी घोषणा करे। हकीकत में वैसा कुछ भी नहीं हुआ। लगता है कि सरकार लोकसभा चुनाव के निर्णायक मुद्दे बेरोजगारी को अभी भी हल्के में ही ले रही है। इस मोर्चे पर उसके पास हवाई वादे ही ज्यादा है। मोदी 1.0 में केन्द्र सरकार में कुछ भर्तियां हुईं। उसके बाद मामला ठप सा है। जबकि खुद मोदी सरकार द्वारा लोकसभा में दिए जवाब में माना गया है कि केन्द्र सरकार के करीब 10 लाख पद खाली पड़े हैं। ये स्वीकृत पद हैं। लेकिन सरकार इन्हें भरने के बजाए बाकी 75 फीसदी स्टाफ से ही काम चला रही है। जमीनी हकीकत यह है कि कई विभागों में बेहद कम स्टाफ में काम चलाया जा रहा है, क्योंकि नियुक्तियां ही नहीं हो रही हैं। मोदी सरकार ने पहले कार्यकाल में हर साल दो करोड़ रोजगार देने का वादा किया था, जो 10 साल में भी अधूरा है। सरकार का सारा जोर अब अमेरिका की तर्ज पर निजी क्षेत्र को बढ़ावा देकर रोजगार सृजित कराने और स्वरोजगार पर है। निजी क्षेत्र की नौकरियों में समस्या स्थायित्व की है और औसत लोगों के लिए वहां गुंजाइश कम है। ये कहां जाएं। आज की तारीख में अधिकांश युवा पक्की नौकरी के ख्वाहिशमंद हैं। आज देश में बेरोजगारी की दर 8.6 फीसदी है। यानी देश की लगभग 10 करोड़ से अधिक बेरोजगारों की फौज है। सरकार जिन 4.1 करोड़ लोगों को इंटर्नशिप की बात कर रही है, वह पांच साल के लिए है। यह ट्रेनिंग एक या दो साल की होगी। यानी एक साल में औसतन एक कंपनी को 16 हजार लोगों को ट्रेनिंग देनी होगी। इतनी सुविधा बहुत कम कंपनियों के पास है। अगर वो ट्रेनिंग दे भी दें तो उन्हें नौकरी की कोई गारंटी नहीं है। क्योंकि कंपनियां खुद जरूरत के हिसाब से ही स्टाफ रखती हैं और अब तो निजी क्षेत्र में खर्च करने के लिए एआई को बढ़ावा दिया जा रहा है। ऐसे में ट्रेंड लोगों को काम कौन और कितना देगा, यह अहम सवाल है। कहीं ऐसा न हो कि ये इंटर्न निजी क्षेत्र के अग्निवीर साबित हों। वित्त मंत्री ने बजट में रोजगार को बढ़ावा देने के लिए जो कुछ किया है, वह रोजगार को प्रोत्साहन देने के उपाय के रूप में है। कि सीधे नौकरी देने के रूप में। नौकरियां बढ़ाने के लिए बजट में जो ऐलान किए गए हैं, उनके मुताबिक पहली बार नौकरी हासिल करने वाले कर्मचारियों को एक महीने की सैलरी सरकार उनके बैंक खाते में ट्रांसफर करना भी बहुत सतही उपाय है। कंपनी किसी भी कर्मचारी को एक महीने के लिये क्यों रखेगी? जिसको रखेगी, उसे हर माह वेतन देना होगा। ऐसे में नए कर्मचारी को केवल एक माह का वेतन सरकारी खजाने से देना तात्कालिक लुभावना टोटका है। एक माह की तनख्वाह सरकारी खजाने से निकलवाने के लिए नियोक्ता को कितनी मशक्कत करनी पड़ेगी, यह समझा जा सकता है। ऐसे में कितने उद्योगपति इस पचड़े में पड़ना चाहेंगे, यह भी बड़ा सवाल है।

नजरिया

डॉ. सुधीर सक्सेना

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

महाराष्ट्र की सियासत: प्याली में तूफान या....?

फिलवक्त महाराष्ट्र अशांत है; सामाजिक और राजनीतिक दोनों दृष्टियों से अशांत। यह अशांति वहां गहराती जा रही है। एक ओर मनोज जरांगे पाटिल का आंदोलन और दूसरी ओर लोकसभा के चुनावी नतीजों के बाद बनते- बिगड़ते सियासी समीकरण। सबकी प्रतिष्ठा दांव पर है। न सिर्फ मोदी और शाह, बल्कि उनके क्षेत्रीय क्षत्रप देवेन्द्र फडनवीस के लिए करो या मरो का सवाल है। यही स्थिति एकनाथ शिंदे और अजित पवार की है। उनके समक्ष अस्तित्व का विषम संकट है। शरद पवार और उद्धव ठाकरे के लिए यह उनके जीवन की कठिनतम अग्निपरीक्षा है। महाराष्ट्र की राजनीतिक रणभूमि का काबिले-गौर और दिलचस्प पहलू यह है कि हर योद्धा आहत है और व्रणों, दंश और पीड़ा के साथ जी रहा है। धुकधुकी सत्ता पक्ष और प्रति-पक्ष दानों शिविरों में है, लेकिन सत्ता शिविर यानि महायुति के अधिपतियों को यह डर सता रहा है कि कहीं उनके कुछ योद्धा बर्हिगमन कर प्रतिपक्ष यानि महागठबंधन के शिविर में न चले जाएं।

इसमें शक नहीं कि महाराष्ट्र के नतीजे अप्रत्याशित रहे हैं। बीजेपी को ऐसे परिणामों की कतई उम्मीद नहीं थी। जाहिर है कि सहयोगी दल भी इसी गुमान में थे कि उनका बाल बांका न होगा। मगर नतीजे अलहदा आये। जिसे बीजेपी लगातार सियासी बट्टे-खाते में डाल रही थी, वहीं कांग्रेस सबसे बड़े दल के तौर पर उभरी। सबसे बड़ी बात यह कि महाराष्ट्र के मतदाताओं ने शरद पवार और उद्धव ठाकरे की दांव पर लगी प्रतिष्ठा की लाज रखी। यकीनन नतीजों ने इन दोनों नेताओं के लिए संजीवनी का काम किया। नतीजतन उद्धव की महत्वाकांक्षाएँ जहाँ नये सिरे से कुलांचे भरने लगी, वहीं अस्सी - पार के शरद पवार नये सिरे से मोर्चा बांधने की मुहीम पर निकल पड़े हैं। दो घाटों के बीच बह रही महाराष्ट्र की राजनीतिक धारा का प्रवाह इन दिनों काफी तेज है। इस प्रवाह को और गति देने का काम किया 15 जुलाई को काबीना मंत्री छगन भुजबल की शरद पवार से बैठक ने। छगन कभी बाल ठाकरे तो कभी शरद पवार के सहयोगी रह चुके हैं और उनकी ऊंगली सूबे की नब्ज पर रहती है। 15 जुलाई को छगन मुंबई में 'साहेब' के सिल्वर ओक स्थित आवास पर गये। महारथी शरद और रथी छगन की यह मुलाकात करीब 90 मिनट चली। बताया गया कि छगन चाहते हैं कि पवार साहेब मराठा और ओबीसी के आरक्षण पर जारी गतिरोध को हल करने में मदद करें। इसके एक दिन पहले ही महा विकास आघाड़ी ने आरक्षण पर सर्वदलीय बैठक का बहिष्कार किया था। आरक्षण को लेकर मराठा बिरादरी और ओबीसी समुदाय के बीच अर्से से तलवारें खिंची हुई हैं। मराठा जहाँ ओबीसी के अंतर्गत आरक्षण चाहते हैं, वहीं ओबीसी चाहते हैं कि उनके कोटे से छेड़छाड़ नहीं हो। भुजबल ने कहा कि वह बहैसियत मंत्री या सियासत के लिए पवार साहेब से मिलने नहीं गये, बल्कि भयावह संकट के समाधान के लिए आये हुए हैं। स्थिति इतनी विकट है कि ओबीसी और मराठे

आमने-सामने है। वे एक दूसरे के प्रतिष्ठानों का बायकॉट कर रहे हैं। पवार ने अखबारनवीसों से कहा कि उन्हें सरकार के प्रतिनिधियों की मराठा लॉबी के मनोज जरांगे पाटिल और ओबीसी-प्रतिनिधि लक्ष्मण हाके से बातचीत के ब्यौरे की कोई जानकारी नहीं है, लिहाजा वह तुरंत हस्तक्षेप नहीं कर सकते। किंतु वह मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे से इस बाबत चर्चा कर बातचीत से सुलह की कोशिश करेंगे।

अपने राजनीतिक फैसलों को लेकर चर्चित रहे छगन भुजबल ने यह भी कहा कि इस मुलाकात में कोई लुकाछिपी नहीं है और वह इस पेचीदा संकट के समाधान के लिए किसी के भी दरवाजे पर जा सकते हैं। लेकिन इस बैठक ने कयासों के मद्धिम अलाव में सूखी छिपटियां डाल दीं। छगन भुजबल ने कैफियत दी कि वह इस बैठक के बारे में अजित पवार और अन्य एनसीपी नेताओं को जानकारी देकर मिलने आये हैं। मगर यह किसी से छिपा नहीं हैं कि वह पार्टी के शीर्ष नेतृत्व से खुश नहीं हैं। वजह यह कि उन्हें नाशिक से टिकट नहीं दिया गया और न ही उनके पुत्र को उपकृत किया गया।

जहां तक भुजबल को लेकर औरों के रवैये का प्रश्न है, भुजबल विवादास्पद नेता के तौर पर उभरे हैं। पार्टी और महायुति के भीतर भी उन्हें शक की नजर से देखने वालों की कमी नहीं है। आरक्षण के मुद्दे पर परिदृश्य में तेजी से उभरे जरांगे पाटिल भुजबल की भूमिका से खासे खफा हैं, वह कहते भी हैं कि विस्फोटक स्थिति के लिये भुजबल जिम्मेदार हैं। क्योंकि भड़काऊ भाषा का प्रयोग सबसे पहले उन्होंने ही किया। उन्होंने उसी प्लेट में थूका, जिसमें खाया। डिप्टी सीएम देवेन्द्र फडनवीस ने उन्हें जेल जाने से बचाया और काबीना मंत्री बनाया, लेकिन उन्होंने उन्हें भी नहीं बख्शा। उनके बारे में उन्होंने अनाप-शनाप बोला और पीएम मोदी पर भी लांछन लगाया। दिलचस्प तौर पर जरांगे पाटिल उपमुख्यमंत्री फडनवीस के बारे में भी अच्छी राय नहीं रखते। वह फडनवीस को संकट के समाधान में रोड़ा मानते हैं। गौरतलब है कि जरांगे पाटिल ने 13 जून को मराठा आरक्षण के मुद्दे पर अपना अनिश्चितकालीन अनशन एक माह के लिए टाल दिया था। तदंतर उन्होंने राज्य सरकार को 20 जुलाई तक का अंतिमेत्थम दिया। समस्या के हल नहीं होने से स्पष्ट है कि क्षुब्ध जरांगे पाटिल कोई ऐसा कठोर कदम उठा सकते हैं जो सरकार को उलझन और परेशानी में डाल दे। वह राजधानी मुंबई में लंबा कूच पर विचार कर रहे हैं और राज्य विधानसभा की सभी 288 सीटों पर प्रत्याशी खड़ा करने पर भी।

मुंबई में पवार साहेब और भुजबल की भेंट से एक दिन पहले पवार परिवार के दुर्ग बारामती में बड़ा जमावड़ा हुआ। इस जमावड़े ने इस बात की पुष्टि कर दी कि चाचा-भतीजे के बीच सुलह- समझौते की कोई संभावना नहीं है। 14 जुलाई को बारामती में उपमुख्यमंत्री अजित पवार ने अपने विधानसभा चुनाव का बिगुल फूंका। इस मौके पर प्रफुल्ल पटेल, छगन भुजबल, सुनील तटकरे और धनंजय मुंडे समेत एनसीपी के प्रमुख नेता उपस्थित थे। उल्लेखनीय है कि अजित पवार सूबे के वित्तमंत्री भी हैं। उन्होंने लोगों से विपक्ष के बहकावे में नहीं आने की अपील की और संविधान में संशोधन जैसी बातों को कोरी गप्प बताया। उन्होंने बताया कि उन्होंने अमित शाह से चीनी का समर्थन मूल्य बढ़ाने का आग्रह किया है। अजित इस सारी कवायद का मकसद दरअसल अपनी सीट बचाना है। काका शरद पवार की बेटी सुप्रिया सुले के हाथों अपनी पत्नी सुनेत्रा पवार की हार का गम उन्हें साल रहा है। वह सन् 1997 से अब तक बारामती से सात बार विधानसभा के लिए चुने गये हैं, लेकिन शरद पवार ने अपने पालित भतीजे को उसी के किले में मात देने की कसम सी खा रखी है, लिहाजा अजित फूंक-फूंक कर कदम रख रहे हैं। शरद पवार के ताबड़तोड़ दौरों और गांव-गांव में सघन जनसंपर्क ने उनके माथे पर सलें डाल दी हैं। उन्हें यह भी पता है कि चाचा शरद उनके भतीजे युगेन्द्र पवार को बढ़ावा दे रहे हैं, और कोई ताज्जुब नहीं कि सन्निकट विधानसभा चुनावों में मुकाबला युगेन्द्र और अजित पवार के बीच हो।

दोनों पक्षों के बीच तलवारें खिंची हुई हैं। लोकसभा चुनाव के नतीजों ने महायुति के घटकों के मध्य समरसता और विश्वास को तार-तार कर दिया है। आरएसएस के मुखपत्र आर्गेनाइजर में छपे लेख पर यकीन करें तो सूबे में हार का दोषी बीजेपी के कार्यकर्ता एनसीपी (अजित) को मानते हैं। सांसद सुप्रिया सुले ने इसे महायुति का अंदरूनी मामला बताया। अलबत्ता माना जा रहा है कि बीजेपी अजित पवार से पिंड छुड़ाना चाहती है। इस बीच एनसीपी (अजित) को झटके लगने का दौर जारी है। 17 जुलाई को पिंपरी चिंचवड़ के प्रभावशाली नेता अजीत गव्हाणे समेत बीसेक स्थानीय नेताओं के शरद पवार धड़े में शामिल होने से एनसीपी (अजित) की स्थिति कमजोर हुई है। माना जा रहा है कि गव्हाणे भोसारी से बीजेपी के महेश लांडगे के खिलाफ शारद-धड़े के उम्मीदवार होंगे। इस बीच महाराष्ट्र पब्लिक सिक्यूरिटी बिल ने जहाँ सामाजिक कार्यकर्ताओं और बौद्धिकों की भुकुटि में बल डाले हैं वहीं कोल्हापुर में चलो विशालगढ़ मार्च ने नया बखेड़ा खड़ा कर दिया है। फलतः नवनिर्वाचित कांग्रेस सांसद छत्रपति शाहूजी महाराज गजपुर और मुस्लिम वाड़ी के पीड़ितो से मिले। गौरतलब है कि मार्च का आह्वान बीजेपी एमपी संभाजीराजे छत्रपति ने किया था। बीजेपी को यकीन है कि ऐसी घटनाओं से ध्रुवीकरण उसके पक्ष में होगा, जबकि इसे बूमरैंग मानने वालों की भी कमी नही है। बहुत मुमकिन है कि तूफान प्याली की कोरों तक सीमित नहीं रहे और उसका असर प्याली की कोरों के बाहर भी नजर आये।

कलरफुल इंडिया

कर्मयोगी

(वरिष्ठ पत्रकार और विश्लेषक)

सिरसा में 'रंगीन भारत-खूबसूरत भारत' का संकल्प

हरियाणा के सिरसा में सक्रिय पर्यावरणवादी व जमींदार गुरविंद सिंह घुम्मन अपनी तरह का अनोखा मिशन चला रहे हैं। ये है 'ब्यूटीफूल इंडिया, कलरफुल इंडिया' अभियान। वे तमाम उपयोगी पौधे लगाकर और उपयोगी बीज बांटकर इस मिशन को अंजाम दे रहे हैं। इस अभियान के तहत 2018 में 7 किस्म के 167 पौधे सिरसा में लगाए। इस अभियान को लोगों व सामाजिक संगठनों की तरफ से सकारात्मक प्रतिसाद मिला। शहरवासियों ने चाव से पौधे लगाए। ये पौधे सार्वजनिक स्थल, सामाजिक संस्थाओं व धार्मिक संस्थाओं के परिसर में लगाए गए। आज भी उनके लगाए एक-एक पौधे की अच्छी देखभाल हो रही है।

ऐसे वक्त पर जब दुनिया भयावह ग्लोबल वार्मिंग के संकट से जूझ रही है। इसके भयावह खतरे हमारे दरवाजे तक दस्तक देने लगे हैं। हमें खेत-खलियानों व मानव जीवन को बढ़ते तापमान से बचाने के लिए धरती को पेड़-पौधों से भर देना होगा। जो देश की खूबसूरती को चार चांद लगाएगी, वहीं हमारे वातावरण में तापमान को भी नियंत्रित करेगी। दरअसल, नई पीढ़ी ऐसी विरासत से वंचित है जिसे सदियों से हमारे पुरखों ने सजा-संवार कर रखा था। इसी उद्देश्य से हरियाणा के सिरसा में सक्रिय पर्यावरणवादी व जमींदार गुरविंद सिंह घुम्मन 'ब्यूटीफूल इंडिया, कलरफुल इंडिया' अभियान चला रहे हैं। वे तमाम उपयोगी पौधे लगाकर और उपयोगी बीज बांटकर इस मिशन को अंजाम दे रहे हैं।

वे मानते हैं कि बीज के बेहतर इस्तेमाल से हम अपनी प्राण वायु हवा को शुद्ध करके वायु प्रदूषण के भयावह खतरों से भी बच सकते हैं। वहीं दूसरी ओर अपने परिवेश को मोहक बना सकते हैं। उनका कहना है कि जहां खेती के संस्कार मुझे सिरसा के खैरपुर में पिता गुलजार सिंह से मिले, वहीं बागवानी के अनुभव माताजी श्रीमती जोगिंद्र कौर से मिले हैं। जिंदगी में मैंने भारत के विभिन्न राज्यों और विदेशों में खूब घूमने का अवसर मिला। दक्षिण भारत व विदेशों का भ्रमण किया तो फूलों वाले वृक्षों ने मन मोह लिया। देखे तो विचार आया कि ऐसा मनमोहक वातावरण भारत के हर शहर में क्यों नहीं।

शुरू में मेरे उनके मन में विचार आया कि इसकी शुरुआत अपने राज्य हरियाणा में अपने शहर सिरसा से क्यों न की जाए। प्रारंभ में प्रायोगिक तौर पर उन्होंने अपने मिशन का नाम 'ब्यूटीफूल इंडिया, कलरफुल सिरसा' रखा। इस अभियान के तहत अगस्त, 2018 में 7 किस्मों के 167 पौधे पुणे महाराष्ट्र स्थित एक नर्सरी से मंगवाकर अपने शहर सिरसा में लगवाए। इस अभियान को लोगों व सामाजिक संगठनों की तरफ से सकारात्मक प्रतिसाद मिला। शहरवासियों ने बड़े चाव से पौधे लगाए। पौधे सार्वजनिक स्थल, सामाजिक संस्थाओं व धार्मिक संस्थाओं के परिसर में लगाए गए। आज भी उनके लगाए एक-एक पौधे की अच्छी देखभाल हो रही है। गांवों में सरपंचों को जिम्मेदारी दी गई और समस्त ग्रामवासियों के सहयोग से पौधों के बीज रोपित किये गए। उसके बाद वे 60 किस्म से अधिक गुणवत्ता के बीज लाये, जो कि गांव की फिरनी, धार्मिक स्थलों, पंचायत घरों, स्कूल, आंगनवाड़ी केंद्र इत्यादि में लगाए गए।

गुरविंद सिंह घुम्मन बताते हैं यह हमारा दुर्भाग्य है कि समय के साथ-साथ कई पेड़ों व पौधों की प्रजातियां लुप्त

होने के कगार पर हैं। विडंबना है कि उत्तर भारत में कीकर के पेड़ खत्म हो रहे हैं। निश्चित रूप से आज से 15-20 वर्ष बाद अगर कोई इनके बीज लेकर आएगा, तो लोग पूछेंगे कि ये पेड़ कौन सा है। दरअसल, मैं कोई नया बीज नहीं लेकर आया हूं। ये सभी बीज उत्तर भारत की जलवायु के अनुकूल हैं। सौभाग्य से प्रकृति की यह धरोहर आज भी दक्षिण भारत की कुछ नर्सरियों में उपलब्ध है। वे बताते हैं मैंने कई गांवों के भाइयों से इस बाबत बातचीत की तो उन्होंने बताया कि हमें न तो इन पौधों का पता है और न ही हमें यह ज्ञात है कि यह पौधे व बीज कहां से मिलेंगे। उनका सुझाव था कि आप हमें उच्च कोटि के बीज उपलब्ध करा दीजिए, हम किसान हैं, स्वयं पौधे रोपित कर लेंगे।

दरअसल, उनके द्वारा दक्षिण भारत से लाए गए ये बीज तीन प्रकार के है। पैकेटों में जो सीरियल नंबर दिया हुआ है। दूसरे पर्चे पर सीरियल के साथ पौधों के नाम, फूलों व बगैर फूलों वाले पौधे विवरण लिखा हुआ है। किन-किन माह व समय पर पौधे रोपित होंगे। कालांतर कृषि व बागवानी के विशेषज्ञों से विचार- विमर्श के अनुसार हमारे क्षेत्र में जुलाई व अगस्त सभी बीजों को बोने के लिए अच्छा समय है। साथ ही इसका पुनः रोपण फरवरी मार्च में किया जा सकता है। गुरविंद सिंह घुम्मन बताते हैं ये बीज बड़े होकर वृक्षों का रूप लेंगे जो कि रंग बिरंगे फूलों से आपके क्षेत्र को महकाएंगे। उस महक से हमारी आने वाली पीढ़ियां आनंदित होंगी। अगर आप चाहते है कि हमारे बच्चे मुस्कुराए तो आओ चंद बीजों से इस धरा का श्रृंगार करें।

अध्ययन में पाया गया कि बहुसंख्यक भारतीय पारंपरिक पेड़ (टाली, कीकर, नीम, पीपल, सफेदा आदि) लगाते है। जो केवल हरियाली के लिए है, जबकि, घुम्मन का विचार है क्यों ना फूलों वाले हर्बल पेड़, पारंपरिक पेड़ और सुन्दर दिखने वाली झाड़ियां भी लगाई जायें। वे हैं कि वर्ष 2018 में मैंने फूलों वाले पेड़, हर्बल पेड़ और पारंपरिक पेड़ और झाड़ियां की सात किस्मों को पुणे की एक प्रसिद्ध नर्सरी से 167 पौधे खरीदे। पेड़ लगाने का यह कार्य क्षेत्र के पुजारियों, स्थानीय नेताओं, स्थानीय सरकारी प्रशासकों, पुलिस विभाग, सिरसा के उत्साही लोगों, छात्रों शिक्षकों और विभिन्न व्यवसायों से जुड़े नागरिकों की सहायता से पूरा किया गया।इन पेड़ों को सिरसा के आस-पास के अस्पतालों, सरकारी स्कूलों, पार्कों, पुलिस स्टेशनों और शहर के अन्य सार्वजनिक स्थानों सहित विभिन्न जगहों पर लगाया है।

यह एक बड़ी सफलता थी परन्तु नर्सरी से ये पौधे खरीदना महंगा था, इसलिए विचार किया कि इस पहल को आगे बढ़ाने के लिए बीज खरीदना एक प्रभावी तरीका है। इसलिए 2019 उन्होंने 72 किस्मों के लगभग 125000 बीज खरीदे। इन बीजों के 1200 किट बनाए और हरियाणा में 500 गांवों में, पंजाब में 300 गांवों में और शेष 400 निजी और सरकारी स्कूलों, धर्मशालाओं, गुरुद्वारों, मंदिरों, चर्चों,ब्रह्मकुमारी आश्रम, कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना व हिसार आदि के पर्यावरण संरक्षणवादियों को बांटे। सिरसा में इस पहल की शुरुआत करने के बाद, मिशन का लक्ष्य सरकारी एवं निजी स्कूलों, कॉलेजों, अस्पतालों, पार्कों, पवित्र स्थानों और अन्य सार्वजनिक क्षेत्रों में, देश के हर कोने, हर कस्बे, गांवों और यहां तक कि किसानों की ढाणियों तक पहुंचना रहा है। इसमें दो राय नहीं कि इसी प्रकार के बीज पूरे देश में उपलब्ध होने चाहिए।

हम देश को संवारने तथा इस आन्दोलन का हिस्सा बनने के लिए देश के कॉरपोरेट घरानों, सामाजिक संगठनों, पर्यावरण विशेषज्ञ, संरक्षणवादियों, नागरिकों और केंद्र और राज्य सरकार के समर्थन हासिल करके अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। बेहतर होगा कि दुनिया के विभिन्न देशों रह रहे भारतीय एन. आर. आई. को भी अपने देश के प्रति प्रेम और लगाव का निमंत्रण दिया जा सकता है। उन्हें अपने पैतृक गांवों में बीज और पौधे दान करने के लिए प्रेरित किया जाए। इसके अलावा बीज विक्रेताओं और नर्सरी के संचालकों को भी इस आंदोलन में शामिल किया जाना चाहिए। इस अभियान के सिरे चढ़ने से इन सभी पेड़ों का उनके अतिरिक्त सौन्दर्य, रंग और छाया प्रदान करने के अलावा पर्यावरणीय लाभ भी होंगे। इस पहल में केवल सरकार द्वारा अनुमोदित पेड़ों का उपयोग किया जाएगा। इसके अतिरिक्त हमें अपने विरासत में मिले पौधों और पेड़ों को संरक्षित करना चाहिए। इस तरह के अभियान चलाकर हम उन्हें विलुप्त होने से बचा सकते हैं।

भारत पर्व, त्योहार व मेलों का देश है। राष्ट्रीय पर्वों में हजारों-लाखों लोग जुड़ते हैं। जिसके जरिये हम सामाजिक चेतना का प्रसार करके इस अभियान को सफल बना सकते हैं। साथ ही नए-नए पेड़ लगाकर अपने देश को सुन्दर बनाना चाहिए। कोशिश है कि इस मिशन के काम को आगे बढ़ाया जाए। इस महत्वपूर्ण पहल के लिए प्राथमिक तर्क यह है कि हम एक देश के रूप में एक ही पारंपरिक प्रकार के पेड़ लगाना जारी रखते हैं। लेकिन, घुम्मन का विचार यह है कि ऐसे पेड़ क्यों न लगाएं, जो पर्यावरणीय दृष्टि ही लाभकारी न हों बल्कि सौंदर्य बढ़ाने वाले भी हों। जिसका लाभ यह होगा कि आने वाली पीढ़ियों के लिए परिवेश अधिक जीवंत, रंगीन और आनंददायक बन पाएगा। श्री घुम्मन का मानना है कि यह एक नेक पहल है। इस सपने को पूरे देश में महसूस किया जाना चाहिए। हमारे भारत को सुंदर,रंग बिरंगा और स्वस्थ बनाने में हर भारतीय को अपना योगदान देना चाहिए।

एकल परिवार एक प्रश्नचिह्न

अभिव्यक्ति

अदिति सिंह भदौरिया

लेखिका स्तंभकार हैं।

हम हर रोज़ एक नई बात को सीखते है और किसी ना किसी बात के प्रति आकर्षित भी हो जाते है। यह एक स्वभाविक प्रक्रिया है। आज हम है तो कल कोई ओर होगा। अपनी आँखों से अपनी अगली पीढ़ी को बढ़ते देखने से ज़्यादा सुख शायद ही किसी और चीज़ में हो। लेकिन एक बात जो रह-रहकर हमारे भीतर तक झकझोर देती है, वह यह है की क्या हम अपनी आगामी पीढ़ी को परिवार का सुख लेते हुए देख पाएंगे? जिस प्रकार से एकल परिवार बढ़ रहा है। उसमें रहने वाले लोग सिर्फ अपने बारे में ही सोच पाते है। क्या यह आगामी पीढ़ी के लिए घातक नहीं हो रहा? यदि परिवार ही नहीं होंगे तो मानवीय मूल्यों को समझने व उसे व्यक्त करना कैसे सीख पाएंगे? बहुत कुछ पाने की चाह में हम अपने-आप को ही खोते जा रहे है। हम नहीं समझ पा रहे की कहां गलती हो रही है? पर गलती तो हो रही है, यह भी सच है।

परिवारों के टूटने का कोई एक कारण नहीं है। यह नहीं कहा जा सकता की रोजी-रोटी के चक्कर में घर और अपने गाँव से दूर आने से परिवार टूट रहे है।अपनेपन के ख़त्म होने से परिवार टूट रहे है। हर रिश्ते में बढने वाले शक, द्वेष और एक-दूसरे से आगे बढने की होड़ ने परिवारों को भीतर से तोड़ कर रख दिया है। यदि घर का बड़ा बेटा अपनी खुशियों से पहले परिवार की खुशियों को रखता है तो वह मूर्ख समझा जाता है। अपने ही बच्चों और उनके भी बच्चों में भेद-भाव की भावना से परिवार के बड़े भी अछूते नहीं रहे। रिश्ते को निभाने से ज्यादा उन्हें किस तरह कैश किया जाए। इस बात पर ज्यादा ध्यान दिया जाता है। इस सबका प्रभाव हमारी आगामी पीढ़ी को भुगतना पढ़ रहा है। जब उनके पास कहने के लिए भी रिश्ते नहीं होंगे। कभी काम का बहाना बनाकर तो कभी लेट शादी के साइड-इफेक्ट्स के कारण एक ही बच्चे के होने से परिवार पूरी तरह परिवार बन ही नहीं पा रहा है। एक ही बच्चा यह समझ ही नहीं सकता कि ना चाहते हुए भी किस खुशी से वंचित रह रहा है।आजकल की भागदौड़ भरी ज़िन्दगी डरसे हम कुछ पल ही चुरा सकते है, फिर उन पलों को सहेजने की बात हो तो हम क्या करे यह एक ज्वलंत प्रश्न बनकर हमारे सामने खड़ा है।

एक बच्चे तक तो फिर भी कुछ समझा जा सकता है लेकिन जब हम नई पीढ़ी से बात करें तो उनके भीतर बच्चा ना करने का जो डर है उसे नज़रंदाज़ नहीं किया जा सकता। सामाजिक, आर्थिक एवं प्राकृतिक दृष्टि से होने वाले बदलाव शायद हमारी भावी पीढ़ी अपना नहीं पा रही है। इसलिए एक डर उन्हें उनके ही सपनों के घर को बनाने से रोक रहा है। यह सच में एक दुखद सच्चाई है की जिस समय हमें अपनी आगामी पीढ़ी का हौंसला बढ़ाना चाहिए, ठीक उसी समय हम अपने भविष्य के लिए भी एक अनचाहा सा डर महसूस कर रहे है। हम समझ ही नहीं पा रहे कि जिस आने वाले कल की हम बात कर रहे है वह किसके हाथों में है? अपने ही बच्चों को परिवार से विमुख होते देखना ही अपनेआप में हमारी हार है। लेकिन यहाँ गलती किसी एक की नहीं है। लोगों में सीमाओं की दूरी आने से पहले हमारे मन में अपनों के लिए ही दूरियां आ चुकी है। हम हर सम्भव कोशिश करते है कि अपने काम में, अपने आस-पास वाले से बनाकर रखे जिससे कि समय आने पर हम उसकी मदद ले भी सके और उसकी मदद कर भी सकें। लेकिन यही भावना हमारे रिश्तों से खत्म होती जा रही है।

हमारे भीतर की अति महत्वाकांक्षा हमारे लिए ही घातक हो रही है। एकल परिवार से बच्चों में सामजिक अलगाव के जोखिम बढ़ने लगते है। यहाँ बात यह भी है कि क्या हम खुद अकेले होते जा रहे है या हमें अकेले किया जा रहा है। बढ़ता एकल परिवार एक चुनौती बनता जा रहा है। घर के बड़े अपने सालों से जिस जगह पर रहते है उसे छोड़ नहीं पाते जोकि स्वभाविक भी है और बच्चे अपने आने वाले कल के लिए अपनी जड़ों से टूटते जा रहे है। फिर एक ऐसे चक्रव्यूह में फसते चले जाते है, जिसमें ना केवल हम बल्कि आगामी पीढ़ी को अकेलापन, डिप्रेशन एवं द्वेष तोहफे के रूप में हमारे पास भी आता है और हम आगे भी यही तोहफे में देते है। बातें तो बहुत है और हल भी हमारे पास ही है। जिस दिन हम अपने बड़ों की खुशी में अपनी खुशी ढूंढने लगे और तब एकल परिवार की कड़ी को टूटने में देर नहीं लगेगी। जहाँ बच्चे वही परिवार यह बात घर के बड़ों को भी समझनी होगी। यह नहीं कहा जा सकता कि इन्हीं दो बातों से एकल परिवार को संयुक्त परिवार में बदला जा सकता है, लेकिन शुरुआत तो की जा सकती है। और पहला कदम बढ़ा लेना चाहिए, इससे पहले की दादी-नानी कि कहानियाँ किताबी बातें लगने लगे और हम खुद ही एक प्रश्न बनकर रह जाए।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

संपादक - उमेश त्रिवेदी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)

RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

प्रीतम लखवाल

लेखक व्यंग्यकार हैं।

चाय में गिरता बिस्किट और आम आदमी का बजट

चाय के शौकीनों के लिए यह बड़ी दुविधा रहती है कि अगर वे बिस्किट चाय के साथ लेते हैं तो यह कोई गारंटी नहीं दे सकता कि वह टूटेगा नहीं। टूटना उसकी फितरत है। इससे उसको कोई फरक नहीं पड़ता। मिस्टर अधकचरे लाल को भी यही शौक था। वे तब से चाय-बिस्किट खा रहे थे, जब पैकेट आज के जंबो पैक जैसा आया करता था। अब वह पैकेट 40 प्रतिशत रह गया, लेकिन उसकी लोकप्रियता कम नहीं हुई। यहां मैं बिस्किट की महागाथा नहीं लिख रहा हूं। मैं तो यह बताना चाह रहा हूं कि जंबो से नैनो हुए बिस्किट के पैकेट में अब लोचा हो रहा है। ऊपर से पैक तो बिल्कुल सही सलामत दिखता है, लेकिन जब उसका रैपर खुलता है तो असलियत सामने आ जाती है, ठीक सरकारी आम बजट की तरह। घर के बजट की बात ही अलग है। आजकल वह बनता ही कहां है। दाल, तेल, साबुन, आटा और नमक तक आते-आते तो पैन भी हांफने लगता है। सब्जी और अन्य के लिए गृहणियों को अलग से अंतरिम बजट रखना पड़ता है। इससे घर का शेयर बाजार नहीं उछलता, बल्कि गृह स्वामी पर तानों का सेंसेक्स जरूर सातवें आसमान पर होता है। इधर, अधकचरे लाल ने फिर बिस्किट का पैकेट खोल लिया। चाय के कप से उठती भाप उनकी रूह को बैचेन कर रही थी कि क्या देखते हैं कि उनके खोले गए बिस्किट के पैकेट में फिफ्टी परसेंट टूटकर चूरा हो चुके हैं। जैसे बजट पेश होते ही आम आदमी के अरमान चूर-चूर हो जाते हैं। जो व्यक्ति अपने मोबाइल से कॉल करने के लिए 10 रुपए का रिचार्ज करवाने में 10 बार सोचता है और अपने की-पेड मोबाइल से सिर्फ मिस्डकॉल करने को अपना नैतिक धर्म मानता है, उसके लिए एनरायड मोबाइल और चार्जर के सस्ते होने का क्या फायदा? वह तो सोशल होकर भी आज की मीडिया की जद में नहीं है। क्या सस्ते से उसके घर में कोई धन की वर्षा नहीं हो पाएगी। न ही उसके बच्चे की स्कूल ड्रेस की फटी नेकर ठीक से आ पाएगी। हां, उसकी जरूरत महंगी होने से उसकी कमर धनंजय के पिनाक की भांति झुक जाएगी। अधकचरे लाल का यह दर्शन टूटे बिस्किट पर भारी पड़ गया और उनका तीसरा बिस्किट भी टूटा निकल गया और वे कंपनी को कोसते-कोसते अखबार की हैडलाइन में अपना हैड दे बैठे। लिखा था-खोला खजाना...। अब वे सोच में पड़ गए कि किसके लिए खोला खजाना? इनकम टैक्स में राहत उनके लिए है जो हर साल केंद्रीय वेतन आयोग से फलां वेतनमान लागू कर अपनी तनख्वाह बढ़ोतरी की आस लगाए रहते हैं और वेतनमान लागू होते ही इनकम टैक्स की स्लैब में और अधिक छूट की उम्मीद इसलिए लगाए रहते हैं कि अधिक टैक्स देने से उनके घर का बजट प्रभावित होगा और गृहस्वामिनी उन्हें उल्हाना देने में विपक्ष की तरह जरा भी नहीं संकोच नहीं करेगी। उधर, अधकचरेलाल का आखिरी बिस्किट तो सलामत निकल गया, लेकिन जैसे ही चाय में डुबाया तो उसका आधे से अधिक हिस्सा आत्म हंता बन गया और कप के पेंदे में बैठ गया। टीवी स्क्रीन पर बजट डिबेट में बैठे एक नेता जी, एक प्रवक्ता जी(जो केवल स्तुति प्रस्तोता अधिक होते हैं), एक विपक्षी और किसी अखबार के अदद रिटायर्ड वरिष्ठ पत्रकार ऑनस्क्रीन नजर आने लगे। नेता जी बोले-किसान, युवा, महिला और गरीब का कल्याणकारी बजट है। प्रवक्ता जी ने भी थाप लगाई कि संकल्प पूरा करने वाला बजट है। वरिष्ठ पत्रकार महोदय अलग-अलग तरीके से बजट बिंदुओं को विश्लेषित कर रहे थे तभी विपक्षी ने ऊंगली उठाई, क्योंकि विपक्ष होता ही है ऊंगली उठाने के लिए। वह बोला-नीट के पेपर की तरह संकल्प पत्र भी लीक हो गया। तभी चैनल बदलते हुए अधकचरे लाल टूटकर गिरे बिस्किट के अवशेष कप में ढूंढने लगे और बजट की डिबेट पूरी हो गई।

लिखना और लेखक होना बिल्कुल आसान नहीं

लेखक को धैर्य रखना पड़ता है वह भी ऐसा वैसा नहीं पहाड़ जैसा धैर्य...कैसी भी पीड़ा हो किसी भी तरह का दर्द हो लेखक उस दर्द को न केवल जीता है वल्कि औरों को भी दर्द को जीने की ताकत देता है। लेखक के लिखे को जब पाठक पढ़ें और उसका दिमाग घूम जाएं कि यहां क्या लिख दिया गया है ? यह लिखा तो क्यों लिखा ? या यह सच मेरे सामने था और मैं सोचता ही रहा और लेखक ने लिखा दिया । जब लेखक का लिखा हुआ पढ़ कर लगे कि अरे ! लेखक ने तो मेरी पूरी जिंदगी लिख दी, जो मैं मन से सोचता था या जो कुछ करना चाहता था वह सब लेखक ने पूरा उतार दिया और अपने कैरेक्टर से वह सब सब कहलवा देता है जो कहा जाना चाहिए । जब लेखन जिंदगी की यथार्थ गाथा को इस तरह रखने में समर्थ हो जाता है कि उसमें हर आदमी अपने को देखें जांचे परखे तो समझ लीजिए कि लेखन सही दिशा में जा रहा है । यहीं नहीं जब किसी लेखक के लिखे हुए को पाठक पढ़ने के लिए इंतजार करें या पाठकीय प्रतिक्रिया उठती रहे तो लेखन की जीवंतता सामने आ जाती है ।

तीसरा कोना

विवेक कुमार मिश्र

लेखक हिंदी साहित्य के प्रोफेसर हैं।

लेखक जी लेखक ही होते हैं । अपने ताने बाने को सज-धज को सज कर सजाते हैं । लिख दिया और लेखक कहलाने लगे इत्ती भर कथा नहीं है... लेखक हो जाना कहां आसान होता, देखा जाए तो इस संसार में कुछ भी आसान नहीं है पर लेखक होना तो बिल्कुल ही आसान नहीं है । हर समय तलवार की धार पर चलने जैसा होता है । जरूरी नहीं कि आप लिखे और वह सब लोगों के समझ में आ जाए। लिखे को धैर्यपूर्वक पढ़ा जाना जरूरी होता है और हर लिखे को सही पाठक और सही संदर्भ मिले यह भी जरूरी नहीं है । हो सकता है कि जो कुछ आपने लिखा उस पर किसी की नज़र ही नहीं गई और एक दिन किसी सहृदय पाठक की नजर पड़ी और आपका लेखन एकदम से चमक उठा , आपको जो प्रसिद्धि मिल सकती है वह सब मिल जाए और न मिले तो न मिले।

लेखक को धैर्य रखना पड़ता है वह भी ऐसा वैसा नहीं पहाड़ जैसा धैर्य...कैसी भी पीड़ा हो किसी भी तरह का दर्द हो लेखक उस दर्द को न केवल जीता है वल्कि औरों को भी दर्द को जीने की ताकत देता है । लेखक के लिखे को जब पाठक पढ़ें और उसका दिमाग घूम जाएं कि यहां क्या लिख दिया गया है ? यह लिखा तो क्यों लिखा ? या यह सच मेरे सामने था और मैं सोचता ही रहा और लेखक ने लिखा दिया। जब लेखक का लिखा हुआ पढ़ कर लगे कि अरे ! लेखक ने तो मेरी पूरी जिंदगी लिख दी, जो मैं मन से सोचता था या जो कुछ करना चाहता था वह सब लेखक ने पूरा उतार दिया और अपने कैरेक्टर से वह सब सब कहलवा देता है जो कहा जाना चाहिए । जब लेखन जिंदगी की यथार्थ गाथा को इस तरह रखने में समर्थ हो जाता है कि उसमें हर आदमी अपने को देखें जांचे परखे तो समझ लीजिए कि लेखन सही दिशा में जा रहा है। यहीं नहीं जब किसी लेखक के लिखे हुए को पाठक पढ़ने के लिए इंतजार करें या पाठकीय प्रतिक्रिया उठती रहे तो लेखन की जीवंतता सामने आ जाती है ।

लेखक को चाहिए कि वह सहज रूप से वह सब लिखे जो लोगों को आसानी से समझ में आ जाएं और लेखक को पढ़ते हुए वह जगह जगह पर चौंकें, इतना ही नहीं यह सोचने पर बाध्य हो जाए कि यह सब लेखक ने कैसे लिख दिया। लोग यह भी सोचने लगते हैं कि लेखक को समय कहां से मिल जाता कि वह दुनिया में रहते हुए भी इतना कुछ एक साथ कैसे कर लेता है । वह जो लिखता है उसमें जिंदगी शामिल होती है बिना किसी जीवन संसार के, बिना किसी संघर्ष के लेखक की कल्पना नहीं की जा सकती । यह भी सच है कि लेखक की कल्पना भी यथार्थ से कहीं ज्यादा यथार्थ होती है और लेखक जो यथार्थ रच रहा होता है वह कल्पना का सच होता है । इस तरह लेखक के यहां यह दुनिया एक नई ही दुनिया बन जाती है। लेखक के संसार में आते ही हम एक अलग ही संसार में आ जाते हैं और हमारे लिए संसार का अर्थ वह अर्थ भी हो जाता है जो लेखक हमें देता है ।?जीवन प्रक्रिया को समझने के लिए हमें लेखक के संसार को जीना ही पड़ता है। ऐसा नहीं हो सकता है कि आप प्रेमचंद को पढ़ें और प्रेमचंद की दुनिया आपकी अपनी दुनिया में न आ जाए। प्रेमचंद का साहित्य संसार इस तरह आपके भीतर आ जाता है कि आप अपने आप ही ग्रामीण यथार्थ और समाज की तह में पल रहे सच को जानने लग जाते हैं । उस सच के बहुत करीब हो जाते हैं जिससे आमतौर पर लोग बच कर निकल जाना चाहते हैं पर प्रेमचंद को पढ़ने वाला ग्रामीण यथार्थ और सामाजिक सच को कैसे दूर से देख चल देगा ? वह तो हालात में परिवर्तन लाने का स्वप्न देखेगा। यथास्थिति

को बदलने के लिए तड़पेगा।

इसी तरह यदि कोई भक्ति कविता का अध्येता है तो वह निश्चित ही अंधकार से लड़ते हुए जिंदगी की कहानी लिखेगा, स्वचेतना के साथ मुक्ति के अध्याय को समझेगा और मुक्तिकामी बनेगा । लेखक को पढ़ते हुए हम लेखक की दुनिया से उस यथार्थ को जीते हैं जो लेखक एक समाज को सौंपता है । लेखन एकाकी जीवन की उपज नहीं होती वल्कि लेखन के लिए गहरे सामाजिक बोध को जीना पड़ता है। लेखक की सामाजिकता ही समाज और संसार का निर्माण करने के साथ साथ संस्कृति का भी निर्माण करती है। भक्ति काव्य को जब भी पढ़ने की कोशिश करते हैं तो एक सहज लोक विवेक जागृत हो जाता है कि सामाजिक प्रश्नों के साथ कैसे चलना है। समाज को जगाने के लिए क्या कुछ करना है और अपने समय समाज के प्रश्नों को उठाना भर नहीं है बल्कि उनका समाधान भी खोजना है। उस विकल्प की तलाश करनी होगी जिसके लिए लेखक लेखक होता है । लेखक के आशय और निष्कर्ष कल्पना की उपज नहीं होते वहां पूरा संसार अपने यथार्थ के साथ उपस्थित होता है और इस यथार्थ से ही टकराते हुए लेखक नई दुनिया बनाता है। इसलिए लेखन आसान रास्ता नहीं है बल्कि जिंदगी का सबसे कठिन रास्ता होते हुए भी जीवन का सबसे आकर्षक पड़ाव होता है। इस तरह यह कह सकते हैं कि एक लेखक के लिए लिखना और जिंदा रहना ही जीने की सही कसौटी है।

लेखक होने के लिए बहुत कुछ करना पड़ता है । बड़े से बड़े लेखक की एक एक करवट का हिसाब रखना पड़ता है और उस लेखक के रहते न रहते क्या कुछ छुट गया उसे तुरंत पकड़ना पड़ता है । ऐसा नहीं है कि आप एक दशक सोचने में लगा दो और दो दशक लिखने में फिर छपने के लिए एक दशक का इंतजार करों और छपते छपते छपों फिर हो गये लेखक और हो गया नाम। फिर तो कुछ कहने सुनने की जरूरत नहीं है। लेखक होना यदि इतना ही आसान होता तो हर कोई लेखक नहीं हो जाता । अब आप ही देखो इतने लोग घूमते रहते हैं सभा गोष्ठी में पर लेखक कितने हैं और कितने पाये के हैं यह सबको पता है खुद लेखक जी को पता है। लेखक जी हमेशा काला चश्मा लगाकर रखते हैं कि किसी की नजर न लग जाए और लिखने में व्यवधान न आ जाए । जब कोई कहता है कि आजकल नया क्या चल रहा है तो लेखक जी खिल जाते हैं और ऐसे खिलते हैं कि कोई फ्रंट फुट का खिलाड़ी गोल मारकर आसमान में उछल गया हो कुछ इसी तरह लेखक जी उछल पड़ते हैं।

इस समय के आनंद का हिसाब कोई नहीं लगा सकता। लेखक जी हमेशा सोचने की मुद्रा में मग्न रहते हैं न इधर की सुनते न उधर की सुनते, हर समय उन्हें पता नहीं कहां से भीतर की आवाज सुनाई देती रहती है कि ऐसा हो गया तो वैसा हो गया और फिर इस हिसाब से कलम उठा कर चल देते हैं । लिखने की मेज पर और लिखना इतना आसान कहां? बैठे रहिए मेज पर घंटों बैठे रहिए एक शब्द लिखने में नहीं आता और सिर धुनते बड़बड़ाते से अपनी दुनिया से बाहर निकल कर आसमान निहारते हैं कि कहीं से कुछ मिल जाएं । कुछ आश्चर्य घटित हो जाए फिर कुछ लिखा जाए ...इसी तरह लेखक जी लेखन के कच्चे उत्पाद की खोज में चौबिसों घंटे और सालों व्यस्त रहते हैं कभी खाली नहीं मिलते और आम भाषा मे उनके पास ऐसा कोई काम भी नहीं है जिसे काम कहा जा सके पर वे अपने लेखक जी को हमेशा संभाल कर रखते हैं और चश्मा इसीलिए लगाकर रखते हैं कि किसी की नजर न लग जाए!

डूबतों को तिनका भी नसीब नहीं

जल दुर्घटना रोकथाम दिवस

विश्वास घुषे

लेखक मंदार एंड नो मोर फ़ाउण्डेशन के संस्थापक हैं।

किसी तने लोग जानते हैं कि 25 जुलाई जल दुर्घटना रोकथाम का अंतर्राष्ट्रीय दिवस होता है? संयुक्त राष्ट्र महासभा ने अप्रैल 2021 में इस दिवस का प्रस्ताव पारित किया, जिसे विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी अपनाया। क्या शासन को इसकी कोई जानकारी है? यदि है, तो क्या उनकी ओर से कोई प्रभावी प्रयास देखे सुने जा रहे हैं? क्या ऐसी पहल की है, जिससे समाज सेवा कार्य में सहभागी बन सके? क्या नगर निगम एवं जल प्रबंधन आदि सरकारी विभाग, जिन पर लोगों की सुरक्षा की ज़िम्मेदारी होती है, इस विषय में कोई ठोस कार्य रहे हैं?

ये प्रश्न किसी पर भी उंगली उठाने के लिये नहीं हैं। सभी को आत्मचिंतन की आवश्यकता है। स्वप्रेरणा से ही उत्कृष्ट कार्य संभव है ताकि उपेक्षा से होने वाले परिणामों पर ध्यान जा सके। दुनिया में प्रतिवर्ष 2,36,000 लोगों की डूबने से मौत हो जाती है। यानि 647 प्रतिदिन, या 27 प्रति घंटा। इनमें 1 से 14 वर्ष के बच्चों की संख्या 82,000 है। ये विश्व स्वास्थ्य संगठन के आंकडे हैं। और भारत की क्या स्थिति है? राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो देश में दुर्घटनाओं से होने वाली मौतों का हिसाब रखता है। इनमें डूबने को भी एक मुख्य कारण माना गया है क्योंकि 2021 में दुर्घटना से हुई कुल मौतों में यह 9.30 प्रतिशत था। कुल 36,362 लोगों की इससे मृत्यु हुई। यानी प्रतिदिन 100, या हर घंटे 4 मौतें! महाराष्ट्र में यदि सबसे अधिक 5056 मौतें होती हैं, तो मध्यप्रदेश भी पीछे नहीं है, जो हर साल 4719 डूबने से हुई मौतों का गवाह बनता है।

सब कितना दुखद, भयावह निराशाजनक है! अनेक परिवार उजड़ गए हैं। अपनों को जल दुर्घटनाओं में खोने की त्रासदी को भुगतने वाले कुछ परिवार, मित्रगण या रोटरी जैसी संस्थाएँ इसमें कुछ कार्य कर रही हैं। भोपाल स्थित 'मन्दार एंड नो मोर' अभियान तो इसी कारण 2015 में अस्तित्व में आया और सुरक्षा के कार्यों को समर्पित हो गया है। केरवा जलाशय और पातालपानी में इस संस्था के कार्य करने के बाद दुर्घटनाएं अनेक सालों तक थम गईं। इनके जागरूकता कार्यक्रम 'तिनका', 'कारवाँ सुरक्षा का', नुक्कड नाटक और प्राथमिक उपचार, सीपीआर आदि के प्रशिक्षण कार्यक्रम बहुत सराहे जाते हैं।

प्रत्येक नागरिक रोकथाम में सहयोग कर सकता है। हम अनेक तरह के जलाशयों से घिरे रहते हैं जहां कभी भी ऐसा हादसा हो सकता है। आधी बाल्टी पानी में भी छोटे बच्चों के डूबने के समाचार आते रहते हैं। गर्मी की छुट्टियों अथवा वर्षा ऋतु में जब अनेक स्थान जल भराव रूप ले लेते हैं और जलाशयों में भी पानी का स्तर एवं बहाव बढ़ जाता है, तब खेल-खेल में डूबने की दुर्घटनाओं की आशंका और अधिक हो जाती है। ऐसे ही समय में सभी को जागरूक एवं सचेत

करना बहुत प्रभावी रहता है।

साथ ही समाज को यह भी स्मरण दिलाना आवश्यक होता है कि हमेशा पीड़ित व्यक्ति ही किसी दुर्घटना के लिये जिम्मेदार नहीं होता। प्रत्येक हादसे को किशोर उम्र में की गई लापरवाही कहकर हम समस्या को नज़रअन्दाज़ नहीं कर सकते। जनसामान्य की सुरक्षा के लिये सभी को मिलकर अनेक उपाय करने पडते हैं।

विश्व जलदुर्घटना रोकथाम दिवस का संदेश है कि डूबने की दुर्घटना किसी के साथ कभी भी हो सकती है। आशा है कि आज आप भी यह संकल्प लेंगे कि स्वयं सुरक्षित रहेंगे और अपने परिवार एवं मित्रों को भी सुरक्षा के प्रति सचेत रहने का स्मरण कराएंगे। यही इस दिवस का उद्देश्य है।

वक्रोक्ति

प्रकाश हेमावत

लेखक व्यंग्यकार हैं।

बजट: साहित्यकार सामाजिक रूप से हाशिए पर

देश के आर्थिक विकास को ध्यान में रखकर सब का साथ सबका विकास करने के लिए बजट बनाकर बजट प्रस्तुत कर दिया गया और चारों तरफ जयकारा की जा रही है इस बजट की प्रतिक्रिया इस प्रकार हो जैसे ठंड के मौसम में ठंड को दूर करने के लिए हम थोड़ी देर के लिए अलाव के पास बैठ जाते इस बजट पर प्रतिक्रिया लेने के लिए किसी इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, प्रिंट मीडिया को तनिक चिंता नहीं है ऐसा लग रहा है कि, साहित्यकारों को जैसे हाशिए पर फेंक दिया गया है ।

बजट जनता के सामने आ गया तमाम प्रकार की क्रियाएं, प्रतिक्रियाएं पत्रकारों द्वारा ली जा रही है। दुख इस बात का है देश, समाज, व्यक्ति के हर क़दम क़दम पर होने वाली घटनाओं पर ध्यान देने व रखने वाले साहित्यकार सभी परिस्थितियों का अध्ययन कर अपनी सटीक बात पाखी नजरों से देख कर हर समय हर पल कहता रहता है । मुझे अच्छी तरह से याद है कि, नेहरू जी के समय हमारे अग्रज साहित्यकार ने कहा था कि 'जब जब इस देश की राजनीति डग मगाएगी तब तक साहित्य उसे अपना सहारा देता रहेगा' मगर दुख की बात यह है कि, आज साहित्यकारों के लिए कोई जगह नहीं बची है । साहित्यकारों का सम्मान नहीं किया जा रहा है । साहित्यकारों को किसी सरकारी कार्यक्रम में शामिल नहीं किया जा रहा और ना ही किसी प्रकार से मदद या सलाह ले जारही है साहित्य के ऊपर राजनीति की काली छाया का ग्रहण लगा हुआ है । सृजनकर्ता साहित्यकारों की जगह आज फेसबुक और व्हाट्सएप की यूनिवर्सिटी में पढ़ने वाले और पढ़ाने वाले साहित्यकारों ने ले ली । जिन्हें साहित्य का 'स' मालूम नहीं । विचारों का 'वि' मालूम नहीं । कल्पनाओं 'का' कभी नहीं मालूम वह आज विभिन्न विषयों पर व्याख्यान देखकर अपने विचारों की अभिव्यक्ति कर रहे हैं । ऐसे साहित्यकार साहित्य का विकास कर रहे (सत्यानाश) है वही आज के साहित्यकार होते है जिन जिन है मठाधीश कह सकते हैं यह कहते मुझे कोई शर्म महसूस नहीं हो रही। अरे साहित्यकार साहाब आप यह क्या कह रहे हो ? अरे मेरे ग़रीब दास कह नहीं रहा हूं मुझे आज बहुत गुस्सा आ रहा है ? सरकार ने 'अपने' विकास के लिए बजट में विभिन्न प्रकार की घोषणा, छूट एवं सुविधाएं दे दी गई इस बात की मुझे कोई शिकायत नहीं लेकिन साहित्यकारों के लिए कुछ नहीं तों बहुत दुख होता है। बजट को देखकर, सुनकर और पढ़कर दुखद आश्चर्य होता है कि, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने अपने स्टूडियो में बिठाकर राजनीति के एवं आर्थिक पहलुओं को देखने वाले सामाजिक नेता, कार्यकर्ता विशेषज्ञों से राय, मशवरा करके अपनी पब्लिक सिटी करवा करवा लेते हैं प्रिंट मीडिया ने विशेषज्ञों के विचार लेकर उनके

छायाचित्र तक प्रकाशित किए हैं । कई समाचार पत्रों ने विचित्र शीर्षकों की झड़ी लगा दी। मंदी और महंगाई के बावजूद विकास की छलांग लगाने वाला बजट, उम्मीद की किरण वाला बजट उम्मीदों को जगाने वाला बजट, इस तरह की हेडिंग बना बना कर अपना काम चला लिया । यह बजट मिडिल क्लास के लिए फायदा वाला सिद्ध होगा महिलाओं, किसानों, छात्रों ग्रहणीयों के हितकारी वाला बजट होगा यह बजट नुकसानदायक है यह तो समय की पदचाप के बाद ही पता चलेगा।

अरे चिंतन दास तनिक ठहरो तो सही थोड़ी सी सांस तो ले लो एक ही सांस में तुमने अपना सारा गुस्सा मुझ पर उतार दिया? मैं कोई सरकार का नुमाइंदा हूं या फिर बजट बनाने वाला ? हां हां तुम नहीं हो लेकिन क्या करूं तुम मेरे अच्छे दोस्त हो इसलिए तुमसे चाय पीने के बहाने तुम्हारे पास चला आता हूं और अपने मन की बात तुम्हें कह देता हूं। माना कि साहित्यकारों के लिए बजट में नाम मात्र का भी नाम नहीं है? काम नहीं है? तो काहे का बजट कैसा बजट ? मैं इसका विरोध करता हूं? मैंने अभी तक अपने साहित्यिक जीवन में कभी किसी भी सरकार के द्वारा बनाए गए बजट का विरोध नहीं किया किंतु इस बजट का विरोध करता हूं। अरे थोड़ा ठहरो शितल चंद अपने गुस्से को पानी की तरह बहा दो। मेरी बात को थोड़ा सा समझिए और कूल डाउन हो जाएं। ठीक है थोड़ा सा अपने को कुल डाउन करता हूं। मैं तुम्हारी बात मान लेता हूं । देखिए चिंतन जी हम आपके चिंतन, मनन, अध्ययन का उतना ही सम्मान करते हैं जितना हम आपके ज्ञान का, आपके विवेक का, आपके बुद्धि का सम्मान करते हैं। आप इस देश के भविष्य के निर्माण करने वाले हो देश की दशा और दिशा को तय करने वाले हो। आगामी बजट में आपकी बात को ध्यान में रखकर आप के सम्मान को ठेस नहीं पहुंचे इसके लिए सरकार कोई न कोई सार्थक कदम उठाएगी।

बात वही है जब आप हमें इतना सम्मान दे रहे हैं तो सरकार हमें सम्मान क्यों नहीं दे रही है ? सभी साहित्यकारों को हाशिए पर लाकर रख दिया है? हमारी भी मांगे पूरी करना होगी । बजट के कुछ हिस्से में हमारी भी हिस्सेदारी होना चाहिए इसमें गलत क्या है? जब सभी का ध्यान रखा जा रहा है सबका साथ सबका विकास तो फिर हमारे साथ ऐसा क्यों यह बात समझ में नहीं आ रही है ? हमें साहित्यिक संकलन के प्रकाशन में छूट मिलना चाहिए। शासन प्रशासन यह सरकार द्वारा दिए जाने वाले सम्मानों की सम्मान की राशि बढ़ाई जाना चाहिए। जब निशा बांधों को स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को तमाम प्रकार की छूट एवं लाभ मिलता है तो फिर साहित्यकारों को भी छूट मिलना चाहिए। सभी बुजुर्गों साहित्यकारों को पेंशन देनी चाहिए। आर्थिक स्थिति से कमजोर साहित्यकारों को प्रोत्साहन के रूप में आर्थिक सहायता मिलनी चाहिए। आर्थिक मदद के लिए निश्चित उम्र की तय सीमा को समाप्त करना चाहिए। अरे भाई इस बजट को देखकर, सुनकर ऐसा लगता है कि,बजट और साहित्यकार नदी के दो तट हों गए हैं जो कभी नहीं मिल सकते।

भाजपा को भ्रम के दायरे से बाहर निकालने की जरूरत

दृष्टिकोण

राजेंद्र बज

लेखक स्तंभकार हैं।

सत्तारूढ़ भाजपा के लिए यह चिंता का विषय होना चाहिए कि आए दिन कहीं न कहीं वैचारिक असहमतियों की अनुगूंज सुनाई देने लगी है। हालांकि वर्तमान में ऐसी असंतुष्टि का इजहार भाजपा में इतना उछल कर नहीं हो रहा कि विरोधियों के उत्साह का कारण बन सके। क्योंकि विरोधी दल के तमाम छोटे-बड़े नेताओं की तुलना में भाजपा नेतृत्व एवं उनकी विश्वासपात्र मंडली का राजनीतिक प्रभुत्व, अपेक्षाकृत अधिक विस्तार लिए हुए है। लेकिन जमीनी स्तर पर भाजपा में भाजपा के निष्ठावान कार्यकर्ताओं को जितना मान-सम्मान सत्ता प्राप्ति के पूर्व की भाजपा में मिलता था, उतना आज नहीं मिल रहा। यह आकलन हाल ही में संपन्न आम चुनाव के नतीजे की समीक्षा से निकाल कर आया है। खैर।

गौरतलब है कि जिस प्रकार लगभग 50 वर्ष पूर्व सर्वशक्तिमान राजनीति की स्थापित शख्सियत श्रीमती इंदिरा गांधी की रीति-नीति से असंतुष्ट रहकर एकाएक जेपी के आंदोलन ने जनमत को झकझोर कर रख दिया था, उसी तर्ज पर कहीं ऐसा न हो कि देश में एकाएक ऐसा नेतृत्व उभर कर आ जाए, जो सत्ता के सिंहासन को डोला सके। वैसे जाहिर तौर पर भाजपा को एक बेहद अनुशासित राजनीतिक दल के रूप में जाना जाता है। दलीय स्तर पर वैचारिक असहमतियों को भी भरपूर सम्मान दिया जाता है। बावजूद इसके इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि भाजपा में अपने और पराये में अंतर किया ही नहीं जाता हो।

एक प्रकार से भाजपा में भी अंदरुनी तौर पर परस्पर विरोधी शख्सियत शह और मात का खेल खेलती देखी जा सकती है। इस संदर्भ में यह उल्लेख भी किया जा सकता है कि 2014 के आम चुनाव के पश्चात भाजपा संगठन ने या यूं कहे कि नेतृत्व ने अपने तमाम वरिष्ठ मार्गदर्शक साथियों को सत्ता में आते ही दरकिनार कर दिया था। यह अलग बात है कि नेतृत्व ने अपनी राजनीतिक सूझबूझ का अद्भुत प्रदर्शन करते हुए देश ही नहीं अपितु अंतरराष्ट्रीय राजनीति में भी अपना महत्वपूर्ण मुकाम बना लिया था। तमाम सर्वेक्षण और आंकड़ों के आधार पर नागरिकों को भी लगने लगा कि देश उनके नेतृत्व में निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर हो रहा है।

यही कारण रहा कि 2019 के आम चुनाव में भाजपा ने उनके नेतृत्व में पिछली बार की अपेक्षा अधिक जन समर्थन प्राप्त किया। लेकिन जैसा कि कहा जाता है कि जब विरोधी ताकतवर नहीं हो, तो एकछत्र सत्ता के चलते शासक का निरंकुश हो जाना, बहुत हद तक अवश्यंभावी हो जाता है। अब 2024 के आम चुनाव के परिणाम को ही देखें, तो कहीं न कहीं यह बात भाजपा और उसके नेतृत्व पर काफी हद तक लागू होती दिखाई देती है। चुनाव प्रचार के दौरान भाजपा एवं उसके नेतृत्व के बहकते बोलवचन ने नागरिकों के एक बड़े वर्ग को काफी हद तक निराश कर दिया था। इसके चलते सर्वथा दिशाहीन विरोधी दल एवं उसके नेताओं को इस स्थिति का सीधा लाभ मिला।

कल तक जिस कांग्रेस के अस्तित्व को लेकर तमाम तरह की आशंकाएं जताई जा रही थी, देखते ही देखते उसने अपनी राजनीतिक ताकत में दुगना इजाफा कर लिया। खैर, मुद्दे की बात यह है कि इन दिनों भाजपा में कल तक का आंतरिक अनुशासन खतरे में पड़ा दिखाई देता है। हाल फिलहाल तो ऐसा असंतोष भाजपा के आंतरिक परिवेश में दिखाई देता है। लेकिन इस बात की कोई गारंटी नहीं कि भविष्य में यही असंतोष कभी सार्वजनिक रूप से व्यक्त नहीं किया जाएगा। किसी को कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए यदि भाजपा का उपेक्षित वर्ग अपने समय का इंतजार करता दिखाई देता रहा हो। वैसे भी जब भाजपा की सरकार ही समर्थकों की बैसाखी पर टिकी हुई है। इसलिए बीते 10 वर्षों की रीति-नीति पुनरावृत्ति खतरे से खाली नहीं होगी।

वैसे अब भी समय है, ऐसे में समय रहते भाजपा द्वारा उपेक्षित वर्ग को मुख्यधारा में साथ लेकर चलना होगा। तमाम जनप्रतिनिधि, जिसमें से अधिकांश भाजपा नेतृत्व के आभामंडल से भाजपा के चमकदार सितारे बने हैं, उन्हें जमीनी कार्यकर्ताओं की महत्ता को समझना होगा। उन्हें अब सच्चे अर्थों में जमीन से जुड़ने की जरूरत है। कुल मिलाकर भाजपा को कांग्रेसी हाईकमान की संस्कृति के दायरे से बाहर निकलना होगा। यूं भी भाजपा अपने सर्वमान्य एकल नेतृत्व के सहारे आखिर कब तक दम पकड़ती रह सकेगी ? भाजपा के जनाधार का जनक जमीनी कार्यकर्ता ही है, इसलिए उन्हें अपने साथ आगे लेकर चलना होगा।

अटैचमेंट पर अब काम नहीं कर पाएंगे शिक्षक, एक आदेश ने उड़ाई कई शिक्षकों की नींद

मूल पदस्थापना स्थल पर तत्काल लौटने के निर्देश, अतिथियों पर भी लटकी तलवार

बैतूल। स्कूली शिक्षा विभाग के अंतर्गत कार्य करने वाले शिक्षक अब अटैचमेंट (गैर शैक्षणिक) कार्य नहीं कर पाएंगे। लोक शिक्षण संचालनालय द्वारा जारी एक आदेश में सभी जिला कलेक्टर, जिला पंचायत सीईओ को निर्देशित किया गया है कि स्कूली शिक्षा विभाग के अंतर्गत जो भी शिक्षक गैर शैक्षणिक कार्यों में लगे हुए हैं उन्हें तत्काल मूल पदस्थापना स्थल पर भेजा जाए। ऐसे में अब उन शिक्षकों के मंसूबों पर पानी फिरता नजर आ रहा है, जिन्होंने अपने रसूख के बल पर अपना अटैच मेंट गैर शैक्षणिक कार्यों में करवा रखा है। जारी आदेश में स्पष्ट किया गया है कि ऐसे शिक्षकों को चिन्हित कर उन स्कूलों में भेजा जाए जिनमे शिक्षकों की कमी है या फिर अतिथि शिक्षकों की सेवाएं ली जा रही हैं।

मनमानी नौकरी करने पर कसेगी लगाम- जानकारी के अनुसार स्कूली शिक्षा विभाग में ऐसे कई शिक्षक हैं, जिन्होंने विभिन्न विभागों में अपना अटैचमेंट करवा रखा है। इन शिक्षकों का वेतन तो मूल पदस्थापना स्थल से निकल रहा है, लेकिन शिक्षक अपनी सेवाएं दूसरे कार्यों के लिए दे रहा है। ऐसे में दूर दराज के कई स्कूलों में खुद स्कूली शिक्षा विभाग शिक्षकों की पूर्ति नहीं कर पाने की स्थिति में बच्चों को पढ़ाने के लिए अतिथि शिक्षकों की सेवाएं ले रहा है। विभागीय सूत्रों के मुताबिक संचालनालय

के आदेश के बाद ऐसे शिक्षक चिन्हित किए जाकर सूची तैयार की जा रही है। इसके पश्चात जिन स्कूलों में शिक्षकों के पद खाली हैं या फिर जहां पर अतिथि शिक्षकों की सेवाएं ली जा रही हैं, उन स्कूलों में इन शिक्षकों को पदस्थ किया जाएगा।

कई स्कूलों में अतिथियों की हो सकती है छुट्टी- लोक शिक्षण संचालनालय द्वारा जारी आदेश का विपरीत असर उन अतिथि शिक्षकों पर भी पड़ेगा जो पिछले लंबे समय से स्कूलों में अपनी नियमित सेवाएं दे रहे है। विभागीय सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार ऐसा इसलिए किया जा रहा है की वर्तमान में कई शिक्षक अटैचमेंट पर कार्य कर रहे हैं और कई स्कूलों में पद खाली पड़ा हुआ है। ऐसा इसलिए किया जा रहा है कि अतिथि शिक्षकों को दिया जाने वाले मानदेय से शासन को प्रतिमाह अतिरिक्त वित्तीय भार वहन करना पड़ रहा है। अब अटैचमेंट खत्म कर जब स्कूलों में शिक्षकों की पदस्थापना हो जाएगी तो अतिथि शिक्षकों की शासन को जरूरत भी नहीं पड़ेगी और अतिरिक्त वित्तीय भार भी वहन नहीं करना पड़ेगा। लोक शिक्षण संचालनालय के इस आदेश का यदि अक्षरशरू पालन होता है तो कई अतिथि शिक्षकों की छुट्टी होना भी तय माना जा रहा है।

इनका कहना

लोकशिक्षण संचालनालय से आदेश प्राप्त हुआ है। गैर शैक्षणिक कार्यों में लगे शिक्षकों को चिन्हित कर मूल पदस्थापना पर भेजने की कार्यवाही की जाएगी।

- सुबोध शर्मा,
जिला योजना अधिकारी स्कूली शिक्षा विभाग बैतूल

स्कूल लीडर्स कॉन्क्लेव भोपाल में शामिल हुई सतपुड़ा वैली स्कूल डायरेक्टर दीपाली निलय डागा

बैतूल। एक्सट्रामार्क्स एजुकेशन द्वारा स्कूल लीडर्स कॉन्क्लेव की राष्ट्रीय श्रृंखला के माध्यम से होटल रेडिसन भोपाल में एक कार्यशाला का आयोजन किया जिसमें मध्य प्रदेश के प्रतिष्ठित स्कूलों में स्टेम शिक्षा को बढ़ाने पर चर्चा करने के लिए प्रिंसिपल डायरेक्टर, शिक्षक और विशेषज्ञ एकत्रित हुए। इस आयोजन में सतपुड़ा वैली स्कूल की डायरेक्टर दीपाली निलय डागा एक्स्ट्रा मार्क्स एजुकेशन नोएडा की निदेशक सुश्री पूनम सिंह जामवाल ने स्टेम में मध्य प्रदेश के महत्वपूर्ण योगदान पर प्रकाश डाला और डिजिटल साक्षरता और व्यक्तिगत शिक्षा के महत्व पर जोर दिया। पैनल चर्चा में दीपाली डागा ने एक्टिविटी बेस्ड लर्निंग पर प्रकाश डाला और सतपुड़ा वैली स्कूल कैसे शिक्षा को एकीकृत करने, रचनात्मकता को बढ़ावा देने और कक्षाओं को बदलने के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने पर ध्यान केंद्रित किया गया। इस कार्यक्रम में विलाबॉन्ग हाई इंटरनेशनल स्कूल, आईईएस ग्रुप ऑफ स्कूल, वात्सल्य विद्यालय के साथ सतपुड़ा वैली से प्रिंसिपल जया चक्रवर्ती मैनेजर शिवशंकर मालवीय सम्मिलित हुए। मुख्य अंतरदृष्टि में विविध छात्र मानसिकता के माध्यम से सीखने की खुशी को बनाए रखना, मध्य प्रदेश की इंजीनियरिंग विरासत का जश्न मनाना और रट कर याद करने के बजाय वैचारिक सीखने की वकालत करना शामिल है। विशेषज्ञों ने आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देने और अकादमिक अंको पर अधिक जोर देने को कम करने के लिए स्कूलों, अभिभावकों और छात्रों के बीच सहयोग की आवश्यकता पर बल दिया। कॉन्क्लेव का समापन डिजिटल युग में प्रत्यक्ष छात्र की उन्नति सुनिश्चित करने के लिए एकीकृत प्रयासों के आव्हान के साथ हुआ।

जिले में लक्ष्य से अधिक मूंग की खरीदी

जिले भर में 14 खरीदी केन्द्र बने

बैतूल। समर्थन मूल्य में मूंग की खरीदी जारी है। इस बार लक्ष्य से अधिक मूंग की खरीदी हो चुकी है। खरीदी की अंतिम तिथि के लिए 7 दिन शेष रह गए है। जिन किसानों ने स्लॉट बुक किए है, वे किसान 31 जुलाई तक उपज बेच सकेंगे। जानकारी के मुताबिक समर्थन मूल्य में मूंग की उपज खरीदी के लिए जिले भर में 14 खरीदी केंद्र बनाए गए है। मूंग बेचने के लिए 3620 किसानों ने पंजीयन किया था। अब 2720 किसानों से 5 हजार 390 मीट्रिक टन मूंग की खरीदी की है। कृषि विभाग के अधिकारियों के मुताबिक जिले में मूंग खरीदी के लिए 5 हजार मीट्रिक टन का लक्ष्य रखा था, लेकिन लक्ष्य से अधिक खरीदी हो चुकी है। खरीदी की अंतिम तिथि 31 जुलाई है। किसान अंतिम तिथि तक उपज बेच पाएंगे। तिथि आगे बढ़ने की संभावना नहीं के बराबर है।

शुरुआत के दिनों में खरीदी की रफ्तार बहुत धीमी से रही, क्योंकि मंडी में किसानों को अच्छे दाम मिल रहे थे, लेकिन जब मंडी में मूंग की उपज के दाम कम हुए तो किसानों ने समर्थन मूल्य में उपज बेचना शुरू किया। नतीजा यह है कि लक्ष्य से अधिक खरीदी ही चुकी है। कृषि विभाग के एसडीओ रामबीर सिंह राजपूत ने बताया कि समर्थन मूल्य में मूंग की उपज बेचने के लिए स्लॉट बुकिंग का काम 22 जुलाई से बंद हो चुका है। अब किसान स्लॉट बुकिंग नहीं कर पाएंगे। जिन

किसानों ने स्लॉट बुकिंग की है वे किसान 31 जुलाई तक उपज बेच पाएंगे। अभी लगातार बारिश होने के कारण कम किसान उपज लेकर पहुंच रहे है। अधिकारियों का कहना है कि जिन किसानों ने स्लॉट बुक किए है वे जल्द ही उपज लेकर खरीदी केन्द्रों पर पहुंचे, ताकि समय पर खरीदी हो सके और किसानों को परेशानियों का सामना नहीं करना पड़े। अभी कई किसानों को भुगतान नहीं जानकारी यह सामने आई है कि मूंग की उपज बेचने वाले कई किसानों का भुगतान अभी अटका है। शासन के निर्देश है कि किसानों को उपज बेचने के एक सप्ताह के भीतर राशि का भुगतान किया जाए, लेकिन राशि के भुगतान में लेटलतीफ हो रही है। किसानों का कहना है कि समर्थन मूल्य में उपज बेचने वाले किसानों को भुगतान की समस्या से हमेशा भुगतना पड़ता है।

इनका कहना

जिन किसानों ने 22 जुलाई तक स्लॉट बुक कर लिए है, वे किसान 31 जुलाई तक उपज बेच पाएंगे। इस बार जिले में लक्ष्य से अधिक मूंग की खरीदी हो चुकी है।

-रामबीर सिंह राजपूत,
एसडीओ, कृषि विभाग, बैतूल

दो घरों के बीच संकरी गली में फांसी के फंदे पर लटका मिला युवक का शव

बैतूल। बुधवार सुबह मुलताई के रामनगर वार्ड में दो घरों के बीच एक सकरी गली में एक युवक का शव फांसी के फंदे पर लटका हुआ दिखाई दिया। जैसे ही लोगों ने फांसी पर लटके युवक का शव देखा पूरे मोहल्ले में हड़कंप मच गया। तत्काल इसकी सूचना मुलताई पुलिस थाने में दी गई। जिसके बाद मौके

पर पुलिस पहुंची और तस्दीक की गई। उक्त शव की शिनाख्त ग्राम का चंदौरी खुर्द निवासी प्रदीप गोहित के रूप में हुई। पुलिस ने आसपास लोगों से पूछताछ की लेकिन किसी को इस बारे में नहीं पता कि वह यहां कैसे पहुंचा। अभी यह भी साफ नहीं हो पाया है कि उसने स्वयं फांसी लगाई या कुछ और हादसा हुआ है। फिलहाल पुलिस ने प्रदीप के शव को उतरवा कर सरकारी अस्पताल पहुंचा दिया है। जहां पर शव का पोस्टमार्ट्म करवाया जाएगा। पीएम रिपोर्ट आने के बाद ही स्थिति स्पष्ट हो पाएगी की यह आत्महत्या है अथवा हत्या।

सावंगा में बारिश से मुख्य मार्ग कीचड़ से सराबोर, पंचायत की अनदेखी से ग्रामीण परेशान

बैतूल। ग्राम पंचायत सावंगा में लगातार हो रही बारिश ने रास्तों को कीचड़ से भर दिया है, जिससे ग्रामीणों को भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। बच्चों को स्कूल जाने में समस्या हो रही है और पंचायत की अनदेखी ने ग्रामीणों की परेशानी को और बढ़ा दिया है। ग्राम पंचायत सावंगा में बारिश के कारण मुख्य मार्ग कीचड़ से सराबोर हो गए हैं। इस समस्या ने ग्रामीणों को बुरी तरह प्रभावित किया है। बच्चे स्कूल जाने में परेशान हैं और आम लोगों के लिए भी घर से बाहर निकलना मुश्किल हो गया है। स्थानीय निवासी अजीत राठौर ने बताया, रास्तों की स्थिति इतनी खराब है कि बच्चों को स्कूल भेजना एक चुनौती बन गया है। कई बार पंचायत से शिकायत की है, लेकिन अभी तक कोई समाधान नहीं निकला।

पंचायत की अनदेखी से बढ़ी ग्रामीणों की मुश्किलें- ग्रामीणों का आरोप है कि पंचायत के कर्ताधर्ता इस गंभीर समस्या को नजरअंदाज कर रहे हैं। कई बार शिकायतें की गई, लेकिन पंचायत की ओर से कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया। कई बार पंचायत से इस समस्या के समाधान की मांग की है, लेकिन कोई सुनवाई नहीं हो रही। कीचड़ भरे रास्ते न केवल हमारे बच्चों के लिए खतरनाक हैं, बल्कि बुजुर्गों और महिलाओं के लिए भी जोखिम भरे हैं।

जल्द समाधान की मांग- ग्रामवासियों ने उम्मीद जताई है कि पंचायत जल्द ही इस समस्या का समाधान करेगी। उन्होंने प्रशासन से भी इस मुद्दे पर ध्यान देने की अपील की है। ग्रामीणों का कहना है कि अगर जल्द ही कोई कदम नहीं उठाया गया तो उन्हें आंदोलन करना पड़ेगा। अब देखना यह है कि पंचायत और प्रशासन कब तक इस समस्या का समाधान करते हैं और ग्रामीणों को राहत मिलती है।

सरकारी स्कूल की छत से टपकता पानी, प्लास्टिक लगाकर पढ़ने को मजबूर बच्चे

बैतूल। मध्य प्रदेश में सरकार और प्रशासन पिछले कई सालों से सरकारी स्कूलों की हालत सुधारने का दावा कर रहे हैं। उच्च गुणवत्ता की शिक्षा देने की बात कही जा रही है सरकार कैंपेन चला रही है स्कूल चले हम पर स्कूली बच्चे कह रहे केसे चले हम स्कूल स्कूल में पानी टपकता है प्लास्टिक लगाकर एक कक्षा में पांच कक्षा के बच्चे पढ़ते है ये नजारा सरकार के दावों की पोल खोलता नजर आ रहा है। बैतूल जिला मुख्यालय में गंज के एकीकृत शासकीय प्राथमिक शाला में जो नजारा देखने को मिला उसे देखकर तो शायद ही कोई परिजन अपने बच्चों को सरकारी स्कूलों में पढ़ने भेजेगा इस स्कूल का पूरा भवन जर्जर हो गया है पूरा भवन बारिश में टपकता है इसलिए शिक्षकों ने एक कमरे में पांच क्लास के बच्चों को एक साथ बिठाकर पढ़ाई करा रहे है इतना ही नही बारिश में यह कक्षा की छत भी टपकती है इसलिए कमरे में प्लास्टिक लगाकर बच्चों को पढ़ाया जा रहा है।

स्कूल के शिक्षक संतोष करोले ने बताया की छत से टपकते पानी की चिंता स्कूल के शिक्षकों को भी है पर क्या करें मजबूरी है प्लास्टिक लगाकर पढ़ा रहे है छत का प्लास्टर भी झड़ता है डर बना रहता है कहीं की बच्चा घायल न हो जाए। इस पूरे मामले में शिक्षा विभाग के डीपीसी से जब पूछा गया तो जितेंद्र भनोरिया ने रटा रटाया जवाब देने में भी संकोच नहीं किया और जवाब दिया पूरे जिले में 2200 शासकीय शालाएं संचालित है जिसमे से 431 शालाओं में बारिश का पानी टपकता है छत कमजोर है पूरी जांच की है और मरम्मत के लिए बजट की मांग की है। बच्चों ने बताया कि स्कूल की हालत देख यहां आने से डर लगता है. बारिश में तो ऐसा लगता है कि सिर पर किसी भी वक्त प्लास्टर गिर सकता है. इसमें लोहे की छड़ें निकली रहती हैं. इनसे हमेशा चोट लगने का खतरा बना रहता है। जब शिक्षा विभाग के अधिकारियों को पता है की कितने स्कूलों की हालत चिंताजनक है बावजूद इसके खुले दिनों में कुछ क्यों नहीं किया गया स्कूलों की कक्षाओं की मरम्मत नहीं कराई गई और अब बरसात के दिन में बजट की मांग कर रहे है।

सस्पेंड सीएमओ के घर पहुंची फाइलें, अध्यक्ष-उपाध्यक्ष ने बनाया पंचनामा

बैतूल। नगर परिषद घोड़ाडोंगरी के निलंबित सीएमओ ऋषिकांत यादव के घर नगर परिषद के सहायक ग्रेड-2 नारायणराव घोरे ने नगर परिषद की महत्वपूर्ण फाइलें पहुंचाई। निलंबित सीएमओ द्वारा अपने घर पर महत्वपूर्ण फाइलों में हेराफेरी करने की मिली शिकायत पर नगर परिषद की अध्यक्ष मीरावंती उइके और उपाध्यक्ष सोनू खनूजा पार्षदों के साथ नगर परिषद कार्यालय पहुंचे और पंचनामा बनाया। वहीं मामले की शिकायत बैतूल कलेक्टर नरेंद्र सूर्यवंशी से भी की गई है। इस पर नगर पालिका परिषद के सीएमओ सीके मेश्राम नगर परिषद घोड़ाडोंगरी कार्यालय पहुंचे और नगर परिषद घोड़ाडोंगरी के सहायक ग्रेड-2 नारायणराव घोरे को निलंबित सीएमओ के घर से फाइल वापस लाने के निर्देश दिए।

पौधरोपण निरंतर किया जाना चाहिए : मंगल सिंह धुर्वे

बैतूल। पर्यावरण संरक्षण के लिए जरूरी है कि बच्चों को बचपन से ही इसका महत्व समझाया जाए। इसी उद्देश्य को लेकर हाई स्कूल चिखली माल विकासखंड घोड़ाडोंगरी में बुधवार को 'एक पौधा मां के नाम' अभियान के तहत छायादार और फलदार अनेक प्रजातियों के 21 पौधे रोपे गए। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व विधायक मंगल सिंह धुर्वे, मंडल प्रभारी भारतीय जनता पार्टी के आनंद प्रजापति, मंडल अध्यक्ष राजेश परते, मंडल उपाध्यक्ष इन्दू बारसे, बूथ अध्यक्ष राम भरोसे यादव, बूथ महामंत्री चुन्नीलाल यादव, जाखली सरपंच मनोज भलावी, शक्ति केंद्र प्रभारी रामाधार यादव, पंच गोकुल यादव, सुभाष यादव ,प्रभु दयाल यादव, मुकेश यादव, शिवदयाल यादव, फूल सिंह धुर्वे सरपंच ग्राम पंचायत चिखली माल, हाई स्कूल चिखली माल के प्राचार्य आनंद साहू एवं सभी शिक्षक उपस्थित रहे। मंगल सिंह धुर्वे द्वारा सभी को एक पौधा मां के नाम लगाने हेतु प्रेरित करते हुए कहा कि पौधारोपण निरंतर किया जाना चाहिए। आभार स्कूल के शिक्षक राजेश कुमार पाटिल द्वारा व्यक्त किया गया।

समीक्षा बैठक कार्यालयीन समय में ऑनलाइन कराई जाए

बैतूल। मप्र पटवारी संघ बैतूल द्वारा मुख्यमंत्री के नाम से जिला प्रशासन को राजस्व महा अभियान 2.0 एवं ई- डायरी के संबंध में ज्ञापन सौंपा। इस विषय में संघ के जिला अध्यक्ष जितेन्द्र पंवार ने बताया कि राजस्व महाअभियान प्रशासन द्वारा चलाये जाते हैं, संपूर्ण राजस्व अभियान में संपूर्ण कार्य करने का सबसे अधिक श्रेय पटवारी को जाता है। अभियान के समय राजस्व मंत्री के द्वारा अभियान के शुरुआत में ही कहा था। अभियान सफल करो, आपकी सारी मांगे पूरी होगी। मांगे पूरी होनी तो दूर हड़ताल अवधि का वेतन भी आज तक नहीं मिला है। उपाध्यक्ष अवधेश वर्मा और संजय मोरे ने कहा कि मुख्यमंत्री के काल में पटवारियों को गत पांच महीनों से वेतन भत्तों के लाले पड़े हैं। प्रदेश के किसी भी पटवारी को इन पांच महीनों के संपूर्ण वेतन भत्ते प्राप्त नहीं हैं। तत्काल उक्त वेतन भत्तों को दिया जाए। प्रांतीय प्रवक्ता विवेक मालवीय और उपाध्यक्ष कांता परते ने कहा कि अभियान के दौरान पटवारियों की मुख्यालय में रहने के निर्देश है, इसलिए अभियान के दौरान तहसीलों में नहीं बुलाया जाए। समीक्षा बैठके कार्यालयीन समय में ऑनलाइन करायी जाए क्योंकि पटवारियों में एक तिहाई संख्या महिला पटवारियों की है और कहीं भी मुख्यालयों में पटवारियों के आवास की व्यवस्था नहीं है। सचिव सुभाष पंवार ने कहा कि प्रशासन के द्वारा कार्यालयीन समय प्रातः 10 से 6 बजे तक किया गया है। इसी अवधि में पटवारियों से भी कार्य लिया जाए। शनिवार व रविवार अवकाश के दिनों में समीक्षा बैठक अथवा अन्य कार्य नहीं लेने चाहिए। कोषाध्यक्ष जगन्नाथ कुमरे और सह सचिव यशवंत वटके ने कहा कि पटवारियों को आधुनिक मोबाईल दिया जाय, जिससे सुविधाजनक तरीके से किसानों के कार्य कर सके। साथ ही लैपटाप की राशि बढ़ाकर 75000 की जाए। महासचिव मितेश घानेकर सीपीसीटी उत्तीर्ण सभी पटवारियों को परिवीक्षा अवधि से मुक्त कर उनके इंक्रीमेंट लगाए जाय। बाकी को एक वर्ष का अतिरिक्त समय दिया जाय। प्रवक्ता मुकेश यादव ने कहा कि वेतनमान संशोधित करने, समयमान वेतन विसंगति दूर करने एवं प्रदेश में डीपीसी के माध्यम से उसी जिले में पटवारियों की पदोन्नति राजस्व निरीक्षक के पद पर अभिलम्ब की जाए, साथ ही पटवारी संवर्ग से नायब तहसीलदार परीक्षा विभागीय आधार पर तत्काल आयोजित कराई जाए एवं मुख्यमंत्री की घोषणानुसार नवोदित पटवारियों को 100 प्रतिशत वेतन दिया जाय। इस अवसर पर संघ के पदाधिकारी और सदस्य बड़ी संख्या में मौजूद थे।

विशेष लोक अदालत सप्ताह 29 जुलाई से 3 अगस्त तक

बैतूल। सर्वोच्च न्यायालय में 29 जुलाई से 3 अगस्त तक विशेष लोक अदालत का आयोजन किया जाएगा। सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण डॉ.महजबीन खान ने बताया कि लोक अदालत में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा चिन्हित प्रकरणों में उनसे संबंधित पक्षकारों से संपर्क स्थापित कर तिथि का निर्धारण कर नियत तिथियों में पक्षकारों से सुलह वार्ता कर उनके प्रकरणों का निराकरण किया जाएगा। विशेष लोक अदालत के तहत जिला बैतूल अंतर्गत सर्वोच्च न्यायालय द्वारा चिन्हित प्रकरणों में उनके पक्षकारों को समझाइश दी जा रही है। सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण डॉ. खान ने पक्षकारों से अपील की है कि अधिक से अधिक संख्या में अपने प्रकरणों का निराकरण कर विशेष लोक अदालत का लाभ ले।

विचार

पल्लवी सक्सेना

लेखिका स्तंभकार हैं।

बहुत भारी होता है अकेलापन

अस्पताल की सारी सेवाओं को मेरा प्रणाम. किन्तु फिर भी अकेलापन दिनों दिन एक बड़े संकट में परिवर्तित होता चला जा रहा है फिर चाहे बात देश की हो या विदेश की पहले अकेले पैन का संघर्ष या समस्या केवल विदेशों में ही देखी सुनी जाती थी लेकिन अब यह समस्या अपने देश में भी तेजी से पैर पसारने लगी है. देखना सुनाना अलग बात होती है और महसूस करना अलग मैंने हाल ही मैं इस समस्या का अनुभव बड़ी गहनता के साथ किया और उसी के आधार पर मैं यह कहूँगी कि भारत ने चाहे भले ही पाश्चात्य संस्कृति की राह पर ही क्यूँ ना चलना शुरु कर दिया हो, तब भी हमारे देश में उतना अकेलापन अभी भी नहीं आया है जितना कि विदेशों में है. फिर चाहे बात आम जन जीवन की हो या अस्पताल की यहाँ रहकर समझ में आता है कि चार लोगों का आस पास होना एक बीमार इंसान के लिए क्या मायने रखता है. कैसा लगता है, जब आप गंभीर रूप से बीमार हों और आपके पास कोई भी ना हो. ना आपका कोई साथी,ना बच्चे, ना ही बात करने के लिए कोई रिश्तेदार.ऐसे में यदि आपसे कोई बात करने के लिए होता भी है तो वह केवल अस्पताल का स्टाफ होता है. वह भी सिर्फ उतनी देर के लिए जितनी देर वह आपके पास आपकी सेवा के लिए आते हैं. अन्यथा आप एकदम अकेले हैं. ना मरीज आपस में बात करते हैं ना सफाई कर्मचारी.

वैसे देखा जाए तो अस्पताल चाहे कहीं का भी हो माहौल अवसाद से भरा हुआ ही होता है. लेकिन फिर भी यदि आपके साथ आपके मित्र, सम्बन्धी हों तो आप ज्यादा जल्दी ठीक होते हैं /हो सकते हैं.अपने देश में तो चिकित्सक से लेकर सफाई कर्मचारी और अन्य मरीज या उनके परिजन ही आपस में बतिया लेते हैं और एक दूसरे का दर्द बाँट लिया करते हैं. किन्तु यहाँ ऐसा जरा भी नहीं है. यहाँ आपको ठीक होने के लिए एक बेहद ही शानदार पांच सितारा होटल जैसी साफ सफाई वाले वार्ड में प्रकृति नज़ारों के बीच रखा जाता है. जहाँ अत्यधिक ही शांति पूर्ण माहौल होता है. किन्तु चारों और फैला होता है एक गहन अवसाद अपने दर्द और अपनी पीड़ा से स्वयं अकेले जूझता हुआ मरीज जिसे कोई सांत्वना देने वाला भी नहीं होता कि कोई झूठे मुंह ही यह कह दे कि 'अरे चिंता मत करो सब ठीक हो जायेगा, बस कुछ ही दिनों की बात है.'

तब वास्तव में समझ में आता है रिश्तेदारों एवं सगे सम्बंधियों का महत्व. भले ही वह कितने भी

पंचायती क्यूँ ना हो, भले ही उनका आना आपके लिए कष्टप्रद ही क्यूँ ना हो, भले ही वह आपकी चिंता के लिए नहीं बल्कि दूसरों को दिखाने के लिए ही क्यूँ ना आये हो...., भले ही आप उनकी सच्चाई से कितनी भी भली भांति परिचित क्यूँ हो...,लेकिन उनके आने से कुछ देर के लिए ही सही आपका मन अपनी बीमारी से हट तो जाता है. दिखावे के लिए ही सही, कम से कम सामने वाला आपको हिम्मत तो बंधा के जाकर जाता है. कई बार तो यूँभी होता है. जब मरीज के साथ साथ देखने आने वाले को भी पता होता कि अब कुछ नहीं हो सकता. मरीज कभी भी स्वर्ग सिधार सकता है, फिर भी लोग कहते हैं चिंता ना करो ठीक हो जाओगे...

लेकिन विदेशों के मरीज इन सभी बातों और इस तरह के नाते रिश्तेदारों से वंचित हैं. हालांकि देखा जाए तो हर जगह की कुछ अच्छाइयां तो कुछ बुराइयाँ होती है. जैसे यहाँ यह अच्छा है कि एक बार यदि आपकी बीमारी की जड़ मिल गयी तो यहाँ आप पर पूरी ईमानदारी के साथ नज़र रखी जाती है. आपसे फोन पर लगातार संपर्क बनाए रखा जाता है. यह जानने के लिए आप कब कब क्या क्या महसूस कर रहे हैं. लेकिन फिर भी आपका अकेलापन अपनी जगह बरकरार ही रहता है. यहाँ की जीवनशैली के अनुसार ना बच्चे आपके साथ होते है ना नाते रिश्तेदार वृद्ध जनाओ के लिए तो यह और भी बड़ी गंभीर समस्या है. जो बीमार है वह तो दुख भोग ही रहे हैं किन्तु जो स्वस्थ हैं वह भी अकेलापन का इस कदर शिकार हैं की घंटों अकेले बस में घूमते हैं पर कोई दो बोल प्यार से बोलने वाला नहीं मिलता. बीमार हो जाएँ तो घर के कामों से लेकर अस्पताल तक कुछ भी सहायता करने वाला कोई नहीं मिलता जो करना है खुद ही करना है. इसे बड़ी विडंबना और क्या ही ह सकती है एक वृद्ध के लिए. हालाँकि अब तो अपने देश में भी यही हाल होता जा रहा है . लेकिन यह बहुत बड़ी और बहुत ही विकट समस्या है यदि जल्दी ही हमने अपने पुराने व्यवहार और संस्कृति को नहीं अपनाया तो वह दिन दूर नहीं हैं जब आने वाली पीढ़ी का बच्चा-बच्चा अकेला रह जाएगा और अवसाद का शिकार पाया जाएगा. जो सुनने में तो बहुत हल्का सा रोग लगता है मगर है बहुत गंभीर क्यूंकि यह आपके शरीर के केवल एक हिस्से पर नहीं बल्कि आपके पूरे व्यक्तित्व पर प्रभाव डालता है. जिसका असर आपके हर कृत्य पर दिखाई देता है इसलिए जागो ओ इंसान जागो ...

पानी आया और चला गया पर नुकसान करके, क्या गया अब यही जानना जरूरी..?

अनुविभागीय अधिकारी, तहसीलदार और मुख्य नगरपालिका अधिकारी ने किया मौका मुआयना..

नर्मदापुरम। पानी आया और चला गया पर क्या नुकसान करके गया यह जानना महत्वपूर्ण है... केवल दो घंटे की बरसात ने इस बार व्यवसाईयों के हुए नुकसान का आंकलन सहज ही कर लेना आसान नहीं.. व्यापारियों का हजारों का कच्चा माल हमेशा केवल जमीन पर ही रखा होता है वह भीग गया जिसे वह समेट नहीं पाया, अपनी पीड़ा वह किससे कहे। लेकिन यह जरूर है कि नगरपालिका का धार्मिक आयोजन समिति को उपकृत करने की योजना में हलवाई चौक का व्यापारी अनावश्यक रूप में लाखों का कर्जदार बन गया। इस परिषद के कार्यकाल की अब तक की अगर उपलब्धि देखी जाए तो वह मात्र दशहरा मैदान पर स्टेडियम का निर्माण कर उसे रामलीला समिति को सौंपना और दूसरा बजरिया स्कूल को तुड़वाकर वहां आडिटोरियम निर्माण कर अतिक्रमण कारी संस्था विशेष को सौंपने की सोची समझी योजना को मूर्त रूप देना समझ आ रहा है। स्टेडियम निर्माण के लिए जबकि नजूल खेल मैदान बेहतर विकल्प था पर किसी समिति विशेष को उपकृत करने के लिए डूब क्षेत्र का चयन तो सीधे सीधे नीचे के बाजार क्षेत्र को पूरी तरह बाढ़ प्रभावित क्षेत्र बनाकर अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारना है। वर्षों जहां रामलीला का मंचन हो रहा.. वहां स्टेडियम निर्माण से रामलीला मंचन प्रभावित न हो समिति को स्टेडियम सौंपा जाना तो लगभग तय है। इसी प्रकार परिषद की दूसरी उपलब्धि आडिटोरियम निर्माण कर

अतिक्रमण कारी संस्था के सुपुर्द करने की चाल भी.. मुख्यमंत्री ने जबकि यह कभी नहीं कहा था कि स्कूल तोड़कर आडिटोरियम बनाया जाए, फिर नगर में क्या सरकारी जमीन कम पड़ गई जो अतिक्रमण कारी की शह पर स्कूल तोड़कर आडिटोरियम बनाया जाये..? इसके अलावा परिषद की और कोई उपलब्धि हो तो बताएं ..? माया नारोलिया और अखिलेश खंडेलवाल की परिषद का कार्यकाल सब खराब बताते हैं पर वो लोगों से मिलते थे। इस बार ऐसा नहीं, फिर माया जी के पति उनके कार्यों में हस्तक्षेप नहीं करते थे। वर्तमान नपाध्यक्ष की मॉनिटरिंग क्या है..? अखबारी उपस्थिति के बाद नगर में नपाध्यक्ष की उपस्थिति नहीं होती.. विधायक प्रतिनिधि को अगर मुखौटा बनाना है तो फिर नपाध्यक्ष की क्या जरूरत.? एसडीएम, तहसीलदार, मुख्य नगरपालिका अधिकारी विधायक प्रतिनिधि के साथ दौरा कर रहे हों तो इससे बड़ी हास्यास्पद स्थिति और क्या हो सकती है। नपाध्यक्ष के क्षेत्र में 40 फुट चौड़ा नाला 15 फुट में सीमित हो गया तो दूसरी जगह की बात क्या..? विधायक भी खामोश है फिर विधायक जी का काम क्या बचा..? एमपीईबी का सब स्टेशन डूब में बन गया, नगरपालिका की छती पर बड़ा शापिंग माल वह भी बगैर पार्किंग के खुल गया रेलवे स्टेशन का महत्वपूर्ण रोड पर जाम होने लगा.. सोचें आखिर नपाध्यक्ष क्यों बनाया.? इससे अच्छा तो तहसीलदार बड़ोनिया का कार्यकाल था जिनका नगर पर कमांड तो था साथ ही जो नगरपालिका भी बाखूबी चला लेते थे और तहसील भी संभाल लेते थे। दो घंटे की बारिश में बरपे कहर को लेकर संगठन के लोगों ने, पदाधिकारियों ने, मंडल अध्यक्ष ने पार्टी जिलाध्यक्ष ने जागरूकता दिखाई क्या..? क्या पार्टी दफ्तर में इसे लेकर कोई बैठक हुई। पार्टी का नेतृत्व कहां है वोट मांगने तो सभी घर-घर जातें हैं हर गली का चप्पा-चप्पा इन्हें मालूम है फिर पार्टी की जिम्मेदारी क्या बनती..? गलत कामों को संरक्षण देकर आज सब मौन है। मानों पार्टी अलग वातावरण बना रही इसमें सबसे मजेदार बात यह है कि पार्टी जिस कार्यालय में है उसमें ही ड्रेनेज व्यवस्था नहीं है और पार्किंग का अभाव है ऐसे में वह नगरीय व्यवस्थाओं के लिए किसके कान मरोड़े उसे खुद नहीं पता फिर तीन इंजन की सरकार होने के बाद उसकी दूरदर्शिता का पता चलता है कि नजरिया तो बदला ही नहीं..?

भारतीय जनता युवा मोर्चा मनाएगा कारगिल विजय दिवस की 25वीं वर्षगांठ

धार। भारतीय जनता युवा मोर्चा राष्ट्रीय एवं प्रदेश के आह्वान पर भारतीय जनता युवा मोर्चा जिला धार द्वारा जिला केंद्र धार में कारगिल विजय दिवस की 25वीं वर्षगांठ मनाएगा जिसमें दो दिवसीय कार्यक्रम रखे गए हैं । उक्त प्रकल्प के दौरान 25 जुलाई को युवा मोर्चा द्वारा धार शहर में एक विशाल मशाल यात्रा का आयोजन किया जा रहा है मशाल यात्रा मोती बाग चौक धार से प्रारंभ होकर शहर के प्रमुख मार्गो से होती हुई लालबाग विक्रम ज्ञान मंदिर पर समाप्त होगी । युवा मोर्चा जिला अध्यक्ष जयसूर्या ने बताया कि समापन के अवसर पर युवा मोर्चा द्वारा शहीदों के सम्मान में एक 25 घंटे तक निरंतर जलने वाली जोत जलाई जाएगी एवं विक्रम ज्ञान मंदिर लालबाग में कारगिल विजय पर आधारित प्रदर्शनी लगाई जाएगी, 26 जुलाई को कार्यक्रम स्थल पर देश के लिए शहीद हुए जवानों के परिजनों एवं सेवानिवृत्ति सैनिकों का सम्मान किया जाएगा इस अवसर पर भाजपा के सभी वरिष्ठ नेता एवं पदाधिकारी उपस्थित रहेंगे। जानकारी भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ने दी।

मानव कल्याण एवं अच्छी वर्षा के लिए आहु पार्श्वनाथ पर हवन किया

धार। शहर के समीप प्राचीन संकट मोचन श्री आहु पार्श्वनाथ दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र पर गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर गुजरात राजस्थान इंदौर धार आदि जगहों के श्रद्धालु सुबह से शाम तक दर्शन के लिए उमड पडे । सुख शांति समृद्धि देश के हर नागरिक पर आपकी कृपा बनी रहे इस उद्देश्य को लेकर भगवान के मस्तक पर शांति धारा की गई। शांति धारा के

पश्चात मनोकामना पूर्ण रिद्धि सिद्धि संकट हरण श्री पार्श्वनाथ विधान कर 108 अभिमंत्रित मंत्रों के साथ भगवान को समर्पित किये जिसका लाभ रूपेश सुरेश बड़जात्या अनारद वाला परिवार धार व अनुराग जैन गाजियाबाद को मिला । इस पावनअवसर का मानव कल्याण एवं अच्छी भाषा के लिए हवन किया जिसका लाभ मणि प्रभा वैशाली बडजात्या को मिला महा आरती सुरेंद्र झांझरी परिवार धार ने की। धार्मिक क्रियाएं पंडित उपदेश जैन ने कराई।

समिति अध्यक्ष पवन जैन गंगवाल डॉ. कमल जैन ने बताया कि कई वर्षों से आहु पार्श्वनाथ तीर्थक्षेत्र पर पूर्णिमा महोत्सव मनाया जाता है जिसमें भारत वर्ष के कई भागों से श्रद्धालु दर्शन पूजा करके अपनी मनोकामना पूर्ण करते हैं साथ ही 11 अगस्त रविवार को भगवान पार्श्वनाथ जी का मोक्ष कल्याण महोत्सव मनाकर निर्वाण लाडू समर्पित किए जाएंगे। जानकारी मीडिया प्रभारी पारस जैन गंगवाल ने दी।

नेशनल अचीवमेंट सर्वे ब्लाक स्तरीय टास्क फोर्स की बैठक संपन्न

नरसिंहपुर। जिले में नेशनल अचीवमेंट सर्वे के सफल क्रियान्वयन हेतु गठित टास्क फोर्स की ब्लाक स्तरीय कार्यशाला का आयोजन कलेक्टर श्रीमती शीतला पटले के निर्देशन , सीईओ जिला पंचायत श्री दलीप कुमार के मार्गदर्शन में जनपद शिक्षा केंद्र करेली में शासकीय, अशासकीय विद्यालयों में नेशनल अचीवमेंट सर्वे के तैयारियों को लेकर की बैठक आयोजित की गई।विकासखंड सहायक संचालक शिक्षा प्रतीक्षा वाईकर ने सभी विद्यालयों में सुचारू क्रियान्वयन करने हेतु निर्देश दिया कि छात्र छात्राओं के समझ के स्तर को बढ़ाने हेतु विद्यालय में अभ्यास प्रक्रिया का

सतत होना जरूरी है जिसकी विकासखंड स्तर पर मॉनिटरिंग की जाएगी।विकासखंड नोडल श्री ब्रजेश फौजदार द्वारा नेशनल अचीवमेंट सर्वे की विद्यालय स्तर पर कक्षा शिक्षण के दौरान छात्र छात्राओं की तैयारी केसे कराएं संबंधी जानकारी दी गई।प्रभारी बी आर सी श्री प्रमेंद्र जाट ने नेशनल अचीवमेंट सर्वे छात्र छात्राओं को कलेण्डर एवं टूल के आधार पर विद्यालय में अभ्यास के दौरान प्रश्न के उत्तर ओएमआर सीट पर बच्चों से करवाएं। बीएसी अजीत जाट द्वारा नेशनल अचीवमेंट सर्वे की तैयारियों को लेकर चर्चा की गई। साथ ही मैपिंग अप्लोडिंग कक्षा पहली में प्रवेश, भवन मरम्मत, जल भराव की स्थिति की जानकारी,साक्षरता सर्वे कर आनलाइन एप पर दर्ज हेतु आवश्यक जानकारी दी गई। उक्त अवसर पर विकासखंड सहायक संचालक शिक्षा अधिकारी प्रतीक्षा वाईकर , प्रभारी बी आर सी प्रमेन्द्र जाट, बी ए सी अजीत जाट, एम आई इस एस ब्लाक कोआर्डिनेटर पंकज साहू, ब्लाक स्तरीय नेस टास्क फोर्स, विषयवार सपोट एवं ब्लाक स्तर (डीआरजी) , ब्लाक नेस प्रभारी, ब्लाक सहायक नेस प्रभारी, विषय शिक्षकों को आवश्यक सपोट हेतु बनाये गये नेस टास्क फोर्स के सभी अधिकारी, कर्मचारी, अशासकीय विद्यालयों के संस्था प्रमुख मौजूद रहे।

कलेक्टर ने किया छात्रावासों का औचक निरीक्षण

पढ़ाई के साथ खेल गतिविधियों में भी शामिल हों : कलेक्टर

नरसिंहपुर। कलेक्टर श्रीमती शीतला पटले ने बुधवार को जनजातीय कार्य विभाग द्वारा नरसिंहपुर में संचालित छात्रावासों का औचक निरीक्षण करने पहुंची, जिनमें सीनियर अनुसूचित जाति कन्या छात्रावास, आदिवासी कन्या छात्रावास, शासकीय जिला स्तरीय कन्या उत्कृष्ट छात्रावास शामिल हैं। कलेक्टर श्रीमती पटले ने इन छात्रावासों में छात्राओं को मिलने वाली सुविधायें, नाश्ता, भोजन, शिष्यवृत्ति, आवास, खेल- कूद सामग्री एवं पुस्तकालय के संबंध में छात्रावास अधीक्षिका एवं यहां मौजूद छात्राओं से जानकारी ली। कलेक्टर श्रीमती पटले से हुये संवाद में छात्राओं ने बताया कि छुट्टियां समाप्त होने के बाद वे यहां पुनः आये हैं और अपने अध्ययन में लगे हैं। चर्चा के दौरान कलेक्टर ने छात्राओं से उनके जीवन के लक्ष्य के बारे में जानकारी ली। छात्राओं ने भी उत्साह से बताया कि वे डॉक्टर, शिक्षिका, आईपीएस बनकर अपनी सेवायें देना चाहती हैं।

इस पर कलेक्टर ने छात्राओं का हौसला बढ़ाते हुए कहा कि छात्रावासों में जिला स्तरीय अधिकारियों को आप लोगों से संवाद करने एवं कॅरियर मार्गदर्शन के लिए भेजा जायेगा। छात्रायें पढ़ाई के साथ खेलकूद गतिविधियों एवं रचनात्मक कार्यों में भी सक्रिय रहे। उन्होंने छात्राओं को मन लगाकर पढ़ाई करने और अपने भविष्य को उज्जवल बनाने के लिए प्रेरित किया। सहायक आयुक्त जनजातीय कार्य विभाग श्री सुनील मरकाम को निर्देशित किया कि प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए छात्रावासों में मैग्जिन, न्यूज पेपर तथा समय-समय पर कॅरियर काउंसिलिंग के सत्र भी आयोजित करवायें।

जनसुनवाई में तीन बार आवेदन, पर नहीं हुई सुनवाई

हीरालाल गोलानी सोहागपुर

प्रदेश सरकार जन-मानस की समस्याओं के तत्काल निराकरण के लिए चाहे जितने जतन कर लें। लेकिन जब तक अधिकारियों के मन-मस्तिष्क में जन मानस की समस्याओं के निराकरण की सोच रखें। तभी नागरिकों को त्वरित लाभ मिल सकेगा। हाल ही में जनसुनवाई में तीसरी बार प्रधानमंत्री आवास योजना की किश्त के लिए दर दर भटक रहे शेख अनवर पिता स्वर्गीय शेख पापा निवासी अम्बेडकर वार्ड ने इस प्रतिनिधि को बताया कि नगर पंचायत परिषद में मेरा मकान प्रधानमंत्री आवास योजना में क्रमांक 180 है। लेकिन बार नगर पंचायत के चक्कर लगाकर थक हारने के बाद प्रदेश सरकार की महती योजना जनसुनवाई जनपद पंचायत कार्यालय में मैंने आवेदन पत्र प्रदान किया। लेकिन अब मैं तीसरी बार पुनः प्रधानमंत्री आवास योजना के स्वीकृत प्रकरण की राशि मांग रहा हूं। लेकिन मेरी सुनवाई करने वाला कोई नहीं है। इधर अम्बेडकर वार्ड पार्षद हेमलता मोहन कहार ने बताया कि इसके अलावा सैयद आबिद अली पिता शब्बीर एवं मोहम्मद रियाज पिता अख्तर खान के भी प्रकरण स्वीकृत हैं। लेकिन नगर पंचायत परिषद उसको किश्त प्रदान नहीं कर रही है।इस संबंध में हमने एक आवेदन नगर पंचायत परिषद में प्रदान किया है। वहीं इस मामले में पूर्व पार्षद मोहन कहार ने इस प्रतिनिधि को बताया कि मेरी पत्नी अंबेडकर वार्ड पार्षद हेमलता कहार ने अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष के चुनाव को न्यायालय में चुनौती दी हुई है।इसी कारण न हमारे वार्ड में कोई कार्य हो रहे हैं। वहीं अम्बेडकर वार्ड के प्रत्येक कार्य में अड़ेंगे लगाएं जा रहे। हमारे अम्बेडकर वार्ड में स्टीट लाइट भी बंद पड़ी हुई हैं। आपने इस मामले में जिला कलेक्टर सोनिया मीना से आग्रह किया है।कि जल्दी ही स्वीकृत प्रकरणों में हितग्राहियों को प्रधानमंत्री आवास योजना की किस्त प्रदान करवाने की दया करें।

खानापूर्ति है जनसुनवाई – नगर पंचायत परिषद इंदिरा वार्ड के वरिष्ठ पार्षद धर्मदास बेलवंशी ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर लिखा है कि सोहागपुर की जन सुनवाई महज एक दिखावा और खानापूर्ति बनकर रह गई है।प्राप्त आवेदन अनुविभागीय अधिकारी संबंधित विभाग के प्रेषित करके देते है बस। अंबेडकर वार्ड के गरीब जब एक ही व्यक्ति एक माह से प्रति मंगलवार को एस डी एम समक्ष आवेदन दे रहा है फिर भी संबंधित विभाग या जिम्मेदार अधिकारी पर कोई ठोस कार्यवाही नहीं कर रहे है ताकि गरीब की समस्या का समाधान हो सके। श्री बेलवंशी ने कलेक्टर महोदया से आग्रह किया है कि सोहागपुर में जनसुनवाई के में प्राप्त आवेदनों की समीक्षा करनी चाहिए। तो स्पष्ट हो जाएगा। कि जनसुनवाई सोहागपुर विधानसभा के मुख्यालय में कितनी कारगर हो रही है ।

बाढ़ आपदा प्रबंधन की समीक्षा बैठक सम्पन्न

अतिवर्षा की स्थिति में लोग जल स्रोतों के निकट न जायें

नरसिंहपुर। कलेक्टर श्रीमती शीतला पटले ने मंगलवार को कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में बाढ़ आपदा नियंत्रण के संबंध में तैयारियों की विस्तार से समीक्षा की। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि जिले में स्थापित जिला कंट्रोल रूम एवं अनुभाग स्तर पर बनाया गया कंट्रोल रूम 24 घंटे क्रियाशील रहे। कंट्रोल रूम में ऐसे अधिकारी-कर्मचारी की ही ड्यूटी लगाई जाए, जो बाढ़ आपदा के संबंध में भलीभांति परिचित हो और जानकारी का त्वरित आदान-प्रदान कर सके। कंट्रोल रूम में प्राप्त सूचनाओं पर त्वरित कार्यवाही की जाए। कलेक्टर ने निर्देशित किया कि ऐसे पुल- पुलिया जिनमें भारी वर्षा के दौरान जलमग्न होने की स्थिति निर्मित होती है, उनका चिन्हांकन कराएं। पुल- पुलिया से संबंधित निर्माण विभाग जलमग्न होने की स्थिति में तत्काल उन पुल- पुलियों को बंद कराएं। इनसे वाहनों का आवागमन किसी भी स्थिति में नहीं हो। वैकल्पिक वैरीकेडिंग की जाये। लोग एवं मवेशी जल स्रोतों के पास न जायें, इसके लिए भी स्थानीय स्तर पर अपील जारी हो। होमगार्ड की टीम, बोट, रस्सी, टॉर्च, लाइफ जैकेट की पहले से व्यवस्था रखी जाये। राजस्व विभाग का स्थानीय अमला, कोटवार एवं पटवारी मौजूद रहें। पानी कम होने के उपरांत संबंधित निर्माण एजेंसी यह भी सुनिश्चित करें कि पुल- पुलिया की गुणवत्ता की स्थिति अब कैसी है। लोक

निर्माण विभाग, नेशनल हाईवे, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के अंतर्गत अंडर ब्रिज में पानी भराव की स्थिति न हो। नेशनल हाईवे एजेंसी द्वारा डायवर्सन किये गये मार्ग के आसपास गड्ढे न हो यह भी सुनिश्चित करें। साथ ही इन मार्ग पर मिट्टी के कारण फिसलन न हो, इसका भी विशेष ध्यान रखा जाये, ताकि दुर्घटना न हो। संबंधित निर्माण एजेंसी जेसीबी एवं अन्य आवश्यक सामग्री के साथ तैनात हो। यह निर्देश कलेक्टर श्रीमती पटले ने छिंदवाड़ा, जबलपुर एवं नरसिंहपुर नेशनल हाईवे के अधिकारियों को दिये। अतिवृष्टि होने पर यह भी सुनिश्चित किया जाये कि ऐसे क्षेत्रों में स्कूलों एवं आंगनबाड़ियों का संचालन वहां की परिस्थितियों के आधार पर निर्णय लेकर हो। जल भराव की स्थिति होने पर महिला एवं बाल विकास का अमला घर- घर जाकर पोषण आहार का वितरण करवाना सुनिश्चित करवायें। बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में लोग न हो। उन्हें ऊंचे स्थानों पर शिफ्ट करने की तैयारी भी पहले से हो। जनपदों की ग्राम पंचायत, सामुदायिक भवन एवं नगरीय निकायों के आश्रय स्थल व सामुदायिक भवन में उनके रहने व भोजन की भी व्यवस्था संबंधित अधिकारी पहले से सुनिश्चित करेंगे। जल जनित बीमारियों की रोकथाम के लिए स्वास्थ्य विभाग का अमला आवश्यक दवाईयों का छिड़काव सुनिश्चित करें।

मेरे पापा सेफ हैं और आपके.. हेलमेट जागरुकता अभियान

नरसिंहपुर। पुलिस अधीक्षक, श्री अमित कुमार के निर्देश पर जिले के सार्वजनिक स्थलों पेट्रोल पंपों, यात्री वाहनों पर बैनर एवं फ्लेक्स लगाते हुए जिले वासियों को दिया जा रहा है संदेश। अभियान का मुख्य उद्देश्य, सडक दुर्घटनाओं में होने वाली मृत्यु में कमी लाना है मेरे पापा सेफ हैं और आपके..अभियान का मुख्य उद्देश्य यह है कि बिना हेमलेट पहने दो पहिया चलाने पर दुर्घटना में होने वाली मृत्यु में कमी लाना है। दोपहिया वाहन चलाते समय हेलमेट पहनने से कई लाभ होते हैं, जो दुर्घटना की स्थिति में सवारों को सुरक्षित रहने में मदद कर सकते हैं। हेलमेट का प्राथमिक कार्य दुर्घटना की स्थिति में चालक एवं सवार व्यक्ति के सिर और मस्तिष्क को चोट से बचाना है। मध्य प्रदेश राज्य में हेलमेट न पहनने की वजह से सड़क दुर्घटनाओं के आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2023 में 5512 लोगों की मृत्यु हुई है। आमजनों में जागरूकता हेतु किया जा रहा प्रचार-प्रसार पुलिस मुख्यालय भोपाल द्वारा जन जागरूक हेतु मेरे पापा सेफ हैं और आपके... बैनर फ्लेक्स व पम्पलेट जारी किए गए हैं। जिसमें एक पिता अपने पुत्र के साथ दो पहिया वाहन में यात्रा कर रहे हैं, दोनों लोग हेलमेट लगाए हुए हैं। चित्र के माध्यम से बालक सड़क दुर्घटना से बचाव हेतु हेलमेट पहनने के लिए प्रेरित कर रहा है।नरसिंहपुर यातायात पुलिस द्वारा मेरे पापा से हैं और आपके.. फ्लेक्स, बैनर एवं पंपलेट के माध्यम से जन जागरूक हेतु प्रचार प्रसार किया जा रहा है। जिले के विभिन्न चौराहा मार्गो सार्वजनिक स्थल जैसे बस स्टैंड, पेट्रोल पंपों, यातायात पॉइंट के स्टॉपर, यात्री वाहन जैसे ई रिक्शा, ऑटो में बैनर फ्लेक्स लगाए जा रहे हैं। साथ ही आम जनमानस को पम्पलेट वितरित कर जागरूक किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव दक्षिण भारत की प्रमुख औद्योगिक हस्तियों से करेंगे रूबरू चर्चा

कोयम्बटूर में 25 जुलाई को होगा इन्वेस्ट म.प्र. रोड शो

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव प्रदेश में निवेश और रोज़गार को बढ़ावा देने के लिए सतत् प्रयास कर रहे हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव 25 जुलाई 2024 को कोयम्बटूर में 'इंटरेक्टिव सेशन ऑन इन्वेस्टमेंट अर्पोच्यूनिटिज इन मध्यप्रदेश' का शुभारंभ करेंगे। इस सेशन में अब तक 700 से अधिक निवेशकों और उद्यमियों ने पंजीयन कराया है। यह आयोजन फरवरी 2025 में होने वाली 'इन्वेस्ट मध्यप्रदेशः ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट' के रोड-टू-जीआईएस श्रृंखला का हिस्सा है। इससे पहले मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मुंबई के रोड शो में निवेशकों और उद्योगपतियों से संवाद किया था। फ़रवरी 2025 में आयोजित होने वाली ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट के लिए रीजनल इंडस्ट्रियल कान्क्लेव, देश के प्रमुख औद्योगिक केंद्रों में रोड शो एवं इंटरेक्टिव सेशन से सकारात्मक वातावरण का निर्माण किया जा रहा है। इन आयोजनों में निवेशकों और उद्योगपतियों को मध्यप्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों के संसाधनों, उपलब्ध अवसरों, कुशल कार्यबल, सरकार की सकारात्मक पहल, विकासपरक दृष्टिकोण और सहयोगी वातावरण से अवगत कराया जा रहा है।

इस कार्यक्रम का उद्देश्य निवेशकों को मध्यप्रदेश में निवेश के अवसरों से अवगत कराना और राज्य की प्रगति में भागीदारी के लिए प्रेरित करना है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव निवेशकों के साथ वन-टू-वन चर्चा भी करेंगे और राज्य की 'एक-जिला-एक-उत्पाद' (ओडीओपी) योजना पर चर्चा करेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव प्रदेश के कुशल कार्यबल, प्रचुर संसाधनों और अनुकूल औद्योगिक वातावरण पर विशेष जोर देंगे।

निवेश के लिये उद्योगपतियों से मुलाकात का यह कार्यक्रम मुंबई के बाद दक्षिण भारत के प्रमुख औद्योगिक केंद्र कोयम्बटूर में आयोजित किया जा रहा है, जो टेक्सटाइल, इंजीनियरिंग और सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्रों के लिए प्रसिद्ध है। इस कार्यक्रम में पीएम मित्र टेक्सटाइल पार्क, आईटी पार्क, टेक्सटाइल एवं गारमेंट, इंजीनियरिंग और सूचना प्रौद्योगिकी जैसे प्रमुख क्षेत्रों में निवेशकों को आकर्षित करने के प्रयास किए जाएँगे। मेसर्स बेस्ट कॉर्पोरेशन एवं मेसर्स क्राफ्ट्समैन के प्रतिनिधि मध्यप्रदेश के अपने अनुभव साझा करेंगे। औद्योगिक नीति एवं निवेश प्रोत्साहन विभाग के अधिकारी मध्यप्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में निवेश के अवसरों पर प्रस्तुतिकरण देंगे। इंटरेक्टिव-सत्र में 'एडवांटेज मध्यप्रदेश' पर केन्द्रित लघु फिल्म के माध्यम से उद्योगपतियों को राज्य में निवेश के अवसरों की विस्तृत जानकारी दी जाएगी।

धार की भोजशाला को लेकर जैन समाज की सुप्रीम कोर्ट में याचिका

सुनवाई में समाज की बात सुनने की लगाई गुहार

धार (नप्र)। धार की भोजशाला को लेकर अब जैन समाज ने भी सुप्रीम कोर्ट में अंतरिम आवेदन (याचिका) दायर किया है और सुनवाई में समाज की बात भी सुनी जाने की गुहार लगाई है। अंतरिम आवेदन में कहा कि 'सुप्रीम कोर्ट में पूर्व से विचाराधीन याचिका पर जैन समाज का पक्ष भी सुना जाए। चूंकि ब्रिटिश म्यूजियम में जो मूर्ति है वह जैन अंबिका देवी की है, वाग्देवी (सरस्वती) की नहीं। भोजशाला में एएसआई के वैज्ञानिक सर्वे में भी बहुत सी मूर्तियां निकली हैं, वह भी जैन धर्म से संबंधित हैं।' 23 जुलाई को सुप्रीम कोर्ट में यह आवेदन लिस्टेड हुआ है, जिस पर जल्द सुनवाई हो सकती है। बता दें कि हाई कोर्ट के निर्देश पर भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के एक्सपर्ट्स ने 100 से ज्यादा दिन तक वैज्ञानिक सर्वे किया था। इसकी रिपोर्ट 15 जुलाई को हाईकोर्ट इंदौर में पेश हो चुकी है। वैज्ञानिक रिपोर्ट पर मामले में सुप्रीम कोर्ट के डायरेक्शन के बाद ही हाईकोर्ट कोई फैसला कर सकेगा। जिस पर सुनवाई 30 जुलाई को दिल्ली में होगी।

टीकमगढ़ कांग्रेस विधायक यादवेंद्र सिंह के घर असम पुलिस की रेड

टीकमगढ़ (नप्र)। टीकमगढ़ से कांग्रेस विधायक यादवेंद्र सिंह बुंदेला के घर पर पुलिस ने रेड की है। विधायक के ताल दरवाजा स्थित निवास पर बुधवार सुबह असम पुलिस पहुंची। दरअसल, विधायक के बेटे शाश्वत सिंह बुंदेला पर असम में धोखाधड़ी करने का मामला दर्ज है। शाश्वत सिंह 6 माह से फरार चल रहा है।

बच्चे को ग्लूकोज की 7 बोतलें चढ़ा दीं, मौत

नाक से खून, मुंह से झाग आया; परिजन बोले- सरकारी अस्पताल में नहीं थे डॉक्टर

रीवा (नप्र)। रीवा में झोलाछाप डॉक्टर के इलाज से 10 साल के बच्चे की मौत हो गई। परिजन के मुताबिक, झोलाछाप ने 6 घंटे में बच्चे को एक के बाद एक ग्लूकोज की 7 बोतल चढ़ा दीं। हालत में सुधार होने की जगह बच्चे की नाक से खून और मुंह से झाग आ गया। उसे प्रयागराज ले जा रहे थे। रास्ते में दम तोड़ दिया।

मामला मंगलवार दोपहर का है। बुधवार को परिवार ने सोहागी थाने में दो डॉक्टरों (झोलाछाप) के खिलाफ शिकायत की है। पोस्टमॉर्टम के बाद बच्चे का शव परिजन के सुपुर्द कर दिया गया है। सोहागी थाने के चौरा गांव के मकबूल अहमद के मुताबिक, बेटे मोहम्मद साजिद अहमद को रविवार शाम से उल्टी - दस्त की शिकायत थी। उसे गांव के ही एक डॉक्टर (झोलाछाप) को दिखाया, लेकिन आराम नहीं हुआ। सोमवार को रायपुर सुनौरी उप स्वास्थ्य केंद्र ले गए। मौके पर कोई डॉक्टर मौजूद नहीं था। मजबूरी में एक अन्य डॉक्टर (झोलाछाप) के यहां ले जाना पड़ा।

बेटे को बचा नहीं पाए...- मकबूल का कहना है, इस डॉक्टर ने बच्चे को अपने यहां भर्ती कर लिया। रात 9 बजे से 3 बजे तक बोतल चढ़ाता रहा और इंजेक्शन लगाता रहा। बच्चा बेहोश हो गया और उसकी नाक से खून और मुंह से झाग निकलने लगा। हम घबरा गए और उसे प्रयागराज ले जाने के लिए रवाना हुए, लेकिन बचा नहीं पाए। पिता का कहना है कि बेटे को रायपुर सुनौरी उप स्वास्थ्य केंद्र ले गए थे।

भोपाल प्रेस क्लब द्वारा पत्रकारों का सम्मान

भोपाल। भोपाल प्रेस क्लब द्वारा राजधानी के वरिष्ठ पत्रकारों का पत्रकारिता के क्षेत्र में उनके अवदान के लिए सम्मान किया गया। विधानसभा अध्यक्ष नरेन्द्र सिंह तोमर ने इन पत्रकारों को सम्मानित किया। इस अवसर पर श्री तोमर ने कहा कि आजीविका कम होने के बाद भी आप लोग पत्रकारिता का क्षेत्र चुनकर लोकतंत्र की रक्षा कर रहे हैं। ये बहुत बड़ी बात है।

इस सम्मान समारोह के विशेष अतिथि वरिष्ठ पत्रकार अरूण पटेल, संजीव आचार्य और अजय बोकिल थे। आत्मीय माहौल में आयोजित इस समारोह में वरिष्ठ पत्रकार दिनेश गुप्ता, नासिर हुसैन, पंकज शुक्ला, अनूप दुबोलिया, प्रवीण कुमार, अनूप सक्सेना, वीरेन्द्र विश्वकर्मा, सचिन नाथ खीची, तथा परवेज मोहम्मद को शाल, श्रीफल, प्रशस्ति पत्र व हार देकर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर भोपाल प्रेस क्लब के अध्यक्ष संजय सक्सेना ने सम्मान समारोह के आयोजन व भोपाल प्रेस क्लब की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर वरिष्ठ पत्रकार सतीश सक्सेना, ओपी श्रीवास्तव, संजय सोनी, ब्रजेन्द्र तिवारी, गोपी बलवानी, विनीत अग्रवाल, हाजी माजिद, जगत बहादुर सिंह, आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम संचालन विवान तिवारी ने किया।

बारिश से सागर में 10 मकान ढहे

बीना में 15 लोगों का रेस्क्यू, नर्मदा का जलस्तर 4 घंटे में 2 फीट बढ़ा, टीकमगढ़ में 4 घंटे में 6 इंच बारिश

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में बारिश का स्ट्रॉन्ग सिस्टम बुधवार को भी एक्टिव है। टीकमगढ़ में सुबह 4 घंटे में 6 इंच पानी गिर गया। सागर में भारी बारिश से जिला अस्पताल में पानी भर गया। जिले के जेरई गांव में घरों में पानी भर जाने से छतों पर रात बिताई। 50 से ज्यादा मवेशी बह गए। नर्मदा का जलस्तर 4 घंटे में 2 फीट बढ़ गया। आज इंदौर, ग्वालियर, चंबल संभाग समेत प्रदेश के 20 जिलों में तेज बारिश होने का अलर्ट है। भोपाल में सुबह से रिमझिम बारिश हो रही है। कटनी, डिंडौरी, गुना और ग्वालियर में भी रुक-रुककर पानी गिर रहा है।

टीकमगढ़-झांसी रोड पर पुलिया क्षतिग्रस्त- टीकमगढ़-झांसी रोड पर दिगौड़ा के आगे पूनोल नाले पर बनी पुलिया का एक हिस्सा क्षतिग्रस्त हो गया। जिससे सड़क के दोनों ओर वाहनों की लंबी कतार लग गई। टीकमगढ़ से पृथ्वीपुर, ओरछा और झांसी जाने वाले यात्री परेशान हो रहे हैं।

सागर के उल्दन बांध का पानी आवासीय क्षेत्र में पहुंचा- सागर के बंडा-बांदरी रोड पर धसान नदी पर बनाए जा रहे उल्दन बांध परियोजना का पानी उल्दन गांव के नजदीक पहुंच गया। नदी के पुल से एक किमी दूर तक पानी है। सूचना मिलते ही प्रशासन के आला अधिकारियों ने प्रभावित क्षेत्र में पहुंचकर आसपास के गांवों को तत्काल खाली करने के निर्देश दिए हैं। लेकिन, ग्रामीण गांव छोड़ने को तैयार नहीं है।

सागर के पगरा डैम के 5 गेट खुले- सागर के बंडा स्थित पगरा डैम के 11 में से 5 गेट खोले गए। आसपास के क्षेत्रों में अलर्ट जारी किया।

दतिया की सिंध नदी में युवक बहा- दतिया के सेंवड़ा में सिंध नदी स्थित सनकुआ धाम पर एक युवक तेज बहाव में बह गया। बुधवार दोपहर ग्वालियर के मुरार से 5 युवक यहां पिकनिक मनाने पहुंचे थे। पानी में उतरते समय अरविंद कुशवाहा नाम के युवक का पैर फिसल गया, और वह नदी के तेज बहाव में बह गया। गोताखोर उसकी तलाश में जुटे हैं

बीना में छत पर बैठे 15 लोगों का रेस्क्यू- सागर के बीना में दूसरे दिन बुधवार को भी भारी बारिश का दौर जारी है। यहां के बिल्धव गांव से एसडीईआरएफ की टीम ने 15 लोगों को रेस्क्यू किया है। इनमें एक नवजात और प्रसूता भी शामिल हैं। ये सभी 6 घंटे से अधिक समय तक घरों की छत पर बरसाती डालकर बैठे थे।

सागर में धसान नदी उफान पर, 8 का रेस्क्यू

सागर के ग्राम मेहर में धसान नदी उफान पर है। नदी किनारे बने दो मकानों में पानी भरा गया। इन मकानों की दूसरी मंजिल पर 8 लोग फंसे थे। बाद में सागर से एसडीआरएफ की टीम पहुंची और सभी को बाहर निकाल लिया है।

4 घंटे में 2 फीट बढ़ा नर्मदा का जलस्तर

नर्मदापुरम में 4 घंटे में नर्मदा नदी का जलस्तर दो फीट बढ़ा है। सेठानी घाट पर बुधवार दोपहर 12 बजे 946 फीट दर्ज किया गया। वहीं पिछले 28 घंटे में 5 फीट जलस्तर बढ़ा है। मंगलवार सुबह 8 बजे 941.20 फीट था। बुधवार सुबह 8 बजे 944.20 फीट जलस्तर था। दरअसल, नर्मदा के ऊपरी हिस्से जबलपुर, नरसिंहपुर, रायसेन में बारिश हुई है। जिस वजह से सहायक नदियों का पानी नर्मदा में आने से तेजी से जलस्तर बढ़ रहा है।

मंत्री नागर के तेवर नरम पड़े

कहा- नड्डा, शाह और सीएम से बात हुई, सारी समस्याओं का समाधान हो जाएगा

भोपाल (नप्र)। वन एवं पर्यावरण विभाग छिनने से नाराज होकर इस्तीफे की धमकी देने वाले मंत्री नागर सिंह चौहान के तेवर नरम पड़ गए। सीएम डॉ. मोहन यादव, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा ओर संगठन महामंत्री हितानंद शर्मा ने मंगलवार देर रात 12 बजे नागर से बंद कमरे में चर्चा की। बता दें, नागर इससे पहले सोमवार रात पार्टी के केंद्रीय नेतृत्व से मिलकर अपनी बात रखने दिल्ली गए थे।

मंत्री नागर ने सीएम हाउस में हुई बैठक को लेकर कहा- सारे मसले और समस्याओं का समाधान हो जाएगा। विभाग वापसी का विषय अंदर का है। पार्टी फोरम पर मैंने अपनी बातें रखी हैं। उनकी बातें भी मैंने सुनी हैं। मेरी दिल्ली में पार्टी अध्यक्ष जेपी नड्डा, केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह से बात हुई थी। शिवराज सिंह चौहान और प्रदेश भाजपा अध्यक्ष वीडी शर्मा से भी मेरी बात हुई थी। अब मैं अपने गुरुजी के पास गुजरात जा रहा हूं।

अपनी ही पार्टी में ठगा महसूस कर रहे- विश्नोई- भाजपा के सीनियर लीडर और पूर्व मंत्री अजय विश्नोई ने जबलपुर में कहा, 'नागर सिंह चौहान ने सोच-समझकर कदम उठाया होगा। मंत्री बनना दलबदलू नेताओं का सौभाग्य और हमारा दुर्भाग्य है। हम अपनी ही पार्टी में ठगा महसूस कर रहे हैं।

सांसद पत्नी ने बात करने से किया इनकार- नागर की नाराजगी वाले घटनाक्रम के बीच ऐसी अटकलें रहीं कि उनकी पत्नी व रतलाम सांसद अनिता नागर सिंह चौहान केंद्रीय बजट के दौरान सदन में अनुपस्थित रहीं। हालांकि, वीडी शर्मा ने स्पष्ट कर दिया कि वे सदन में मौजूद थीं। मध्यप्रदेश के दूसरे सांसद जरूर अनिता नागर सिंह चौहान की अनुपस्थिति की बात कह रहे थे।

क्यों वापस लिया विभाग, इसका जवाब सीएम के पास- जबलपुर में मंगलवार को पाटन से भाजपा विधायक और पूर्व मंत्री अजय विश्नोई ने मीडिया से कहा, 'नागर सिंह चौहान का विभाग उनसे क्यों वापस लिया गया, इसका जवाब मुख्यमंत्री और मंत्री जी के पास होगा। इसमें तीसरे व्यक्ति की टिप्पणी करना सही नहीं होता।ये उनका सौभाग्य है कि कांग्रेस से भाजपा जॉइन की और मंत्री बने। वहीं, हमारा दुर्भाग्य है कि हमारी ही पार्टी में सीनियर नेताओं को कोई सुनने वाला नहीं है। किसी की नाराजगी को लेकर मेरा जवाब देना सही नहीं है। ये मामला मुख्यमंत्री और मंत्री के बीच का है, उन्हें ही तय करने दीजिए। जब कभी मुझे लगता है कि ये सच है, तो मैं अपनी बात जनता और संगठन के सामने रख देता हूं।'

सीएम की तोमर, विजयवर्गीय से बंद कमरे में चर्चा- मंगलवार दोपहर को सीएम डॉ. मोहन यादव की विधानसभा अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर और संसदीय कार्यमंत्री कैलाश विजयवर्गीय के साथ विधानसभा में करीब आधे घंटे तक बंद कमरे में चर्चा हुई। इस बैठक को भी नागर सिंह चौहान की नाराजगी से जोड़कर देखा जा रहा है।

दो छात्रों की बाइक को कार से टक्कर मारी, अगवा किया

ग्वालियर में 6 बदमाशों ने मारपीट की; 3 घंटे बाद छोड़कर भाग निकले

ग्वालियर (नप्र)। ग्वालियर में 6 बदमाशों ने दो छात्रों को अगवा कर लिया। दोनों को कार में जबरन बैठा ले गए। मारपीट की। करीब तीन घंटे बाद छोड़ा। रात डेढ़ बजे पुलिस ने एक आरोपी को पकड़ लिया। बाकी पांच की तलाश की जा रही है। पुलिस सूत्रों के मुताबिक, मामला लड़की को लेकर विवाद से जुड़ा है।

एसपी धर्मवीर सिंह ने छात्रों से पूछताछ के बाद बताया- विजयपुर के रहने वाले लालू यादव (20) और सोनू यादव (19) दोस्त हैं। ग्वालियर के पड़ाव क्षेत्र में किराए से रहते हैं। यहां प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं। मंगलवार शाम 7 बजे बाइक से दोस्त के घर के लिए निकले थे। उनके साथ एक और दोस्त भी था।

7:30 बजे इटालियन गार्डन के सामने से गुजरते समय लाल रंग की बिना नंबर की आई-20 कार ने छात्रों की बाइक को टक्कर मार दी। इसके बाद 6 लोग कार से उतरे और मारपीट करने लगे। जबरदस्ती लालू और सोनू को कार में डालकर ले गए। मौके पर मौजूद लोगों ने इसे एक्सीडेंट के बाद मारपीट का मामला समझा। अपहरण के 3 घंटे बाद बदमाश छात्रों को कांच मिल पर छोड़ गए। पुलिस उन्हें थाने ले आई। एक छात्र लालू यादव के सिर में चोट लगी है।

पिटाई के बाद छोड़कर भागे बदमाश- छात्रों के साथ मौजूद दोस्त ने उनके परिजन और पुलिस को सूचना दी।

पुलिस ने शहर में नाकाबंदी कर कार की तलाश शुरू की। पुलिस शहर की सड़कों पर लाल रंग की कार की तलाश करती रही।

रात करीब 11 बजे लालू का परिजन को कॉल आया। बताया कि वे कांच मिल के पास हैं। कार सवार बदमाश उन्हें यहां छोड़कर भाग गए हैं।पुलिस छात्रों को लेने कांच मिल पहुंची। एक महीने पहले भी लालू का कुछ लड़कों से झगड़ा हुआ था। पुलिस इस पॉइंट पर भी पूछताछ कर रही है।

प्रदेश के ग्रामों को पूरे देश में आदर्श बनाने के लिए अभिनव प्रयासों को करें विस्तारित : उप-मुख्यमंत्री श्री शुक्ल

'आत्मनिर्भर पंचायत- समृद्ध मध्यप्रदेश' संगोष्ठी में शामिल हुए

भोपाल(नप्र)। उप-मुख्यमंत्री श्री राजेंद्र शुक्ल ने कुशाभाऊ ठाकरे इंटरनेशनल कन्वेंशन सेंटर भोपाल में आत्मनिर्भर पंचायत- समृद्ध मध्यप्रदेश की तीन दिवसीय संगोष्ठी के दूसरे दिन संबोधित करते हुए कहा कि मध्यप्रदेश को समृद्ध बनाना है तो पंचायतों को आत्मनिर्भर बनाना होगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने संकल्प लिया है कि अमृतकाल में भारत को सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनायेंगे। केंद्रीय बजट में ग्रामीण विकास के प्रावधान में 11 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मज़बूत करने के लिए सतत प्रावधान किए जा रहे हैं। आज सिंचाई के रक़बे में निरंतर वृद्धि हो रही है। ग्रामीण क्षेत्रों में जल-जीवन मिशन के माध्यम से हर घर नल से जल पहुँचाया जा रहा है। प्रधानमंत्री आवास योजना, आयुष्मान भारत योजना, ग्रामीण सड़क योजना, आजीविका मिशन आदि के माध्यम से ग्रामीण जीवन को सहज और सशक्त किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि विभिन्न योजनाओं का उचित लाभ सुनिश्चित करने और हर पात्र को लाभान्वित करने के लिए मैदानी अमले का प्रशिक्षित होना, आपसी समन्वय होना आवश्यक है। उप-मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि संकल्प और समर्पण से ग्रामीण विकास का नया अध्याय लिख सकते हैं।

दृढ़ इच्छाशक्ति से योजनाओं का बेहतर क्रियान्वयन करें- ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा और स्वास्थ्य व्यवस्था को सशक्त करने के प्रयास किए जा रहें हैं। उन्होंने कहा कि आगामी वर्षों में सामुदायिक केंद्रों में ज़िला चिकित्सालय स्तर की सुविधाएँ प्राप्त होंगी। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में दृढ़ इच्छाशक्ति से ग्रामीण सेवाओं को सशक्त करने के लिए समस्त आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराये गये हैं। उप-मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि आज ग्रामीण क्षेत्रों में बेहतर कनेक्टिविटी है, बिजली है, पानी है। आज हम तेज़ गति से आगे बढ़ने के लिए तैयार हैं। हमें अपनी क्षमता का उन्नयन कर दृढ़ इच्छाशक्ति से प्रयास करने होंगे। हमें नवाचारों को, अभिनव प्रयासों को पूरे प्रदेश में विस्तारित करना होगा, ताकि मध्यप्रदेश का ग्रामीण विकास पूरे देश में मॉडल बनें। उप-मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने आत्मनिर्भर पंचायत- समृद्ध मध्यप्रदेश संगोष्ठी में त्रि-स्तरीय पंचायत के सदस्यों और विशेषज्ञों की सहभागिता, उत्कृष्ट प्रयासों के साझाकरण के अभिनव प्रयास की सराहना की और सफलता की शुभकामनाएँ दीं। उप-मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने रीवा ज़िले में गौ-वंश संरक्षण और संवर्धन के प्रयासों की जानकारी दी। उन्होंने गौ-शाला को आत्मनिर्भर एवं रोज़गारों के सृजन का केंद्र बनाने के प्रयासों को साझा किया। साथ ही गौ-शालाओं से संबंधित शासकीय योजनाओं में प्रावधानों को सशक्त बनाने के लिए अनुभव आधारित सुझाव दिये।